भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ रजि० नं० P/RTK—४६ फोन :- ४०७२२

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री सहसम्पादक :- डा० सुदर्शनदेव आचार्य

वर्ष २४ अंक १५, ७ मार्च १९९७ वार्षिक शुल्क ५०) आजीवन शुल्क ५०१)

दयानन्द बोधरात्रि विशेषांक

शिवरात्रि जागरण और ऋषिबोध

शिवरात्रि की घटना : महर्षि के अपने शब्दों में

महर्षि द्वारा थियोसोफिस्ट को भेजे गये आत्मवृत्तान्त में शिवरात्रि की घटना इस प्रकार लिखी है :- जब शिवरात्रि आई तब त्रयोदशी के दिन कथा का माहात्म्य सुना के पिताजी ने शिवरात्रि के व्रत करने का निश्चय करा दिया। परन्तु माता ने मने भी किया था कि इससे व्रत नहीं रखा जाएगा। तथापि पिता जी ने व्रत का आरम्भ करा दिया और जब चतुर्दशी की शाम हुई तब बड़े-बड़े बस्ती के रईस अपने पुत्रों के सहित मन्दिरों में जागरण करने को गयें। वहां मैं भी अपने पिता के साथ गया और प्रथम पहर की पूजा भी करी। दूसरे पहर की पूजा करके पुजारी लोग बाहर निकल के सो गये। तब मुझको शंका हुई कि जिसकी मैंने कथा सुनी थी वही यह महादेव है वा अन्य कोई। क्योंकि वह तो मनुष्य के माफिक एक देवता है। वह बैल पर चढ़ता, चलता-फिरता, खाता-पीता, त्रिशूल हाथ में रखता, डमरू बजाता, वर और शाप देता और कैलाश का मालिक है, इत्यादि प्रकार का महादेव कथा में सुना था, तब पिताजी को जगा के मैंने पूछा कि यह कथा का महादेव है वा कोई दूसरा। तब पिताजी ने कहा कि क्यों पूछता है? तब मैंने कहा कि कथा का महादेव तो चेतन है, वह अपने ऊपर चूहों को क्यों चढ़ने देगा और इसके ऊपर तो चूहे फिरते हैं। तब पिताजी ने कहा कि कैलाश पर जो महादेव रहते हैं उनकी मूर्ति बना और आवाहन करके पूजा किया करते हैं। अब कलियुग में उस शिव का साक्षात् दर्शन नहीं होता। इसलिए पाषाणादि की मूर्ति बना के उन महादेव की भावना रखकर पूजन करने से कैलाश का महादेव प्रसन्न हो जाता है। ऐसा सुन के मेरे मन में भ्रम होगया कि इसमें कुछ गड़बड़ अवश्य है और भूख भी बहुत लग रही थी। पिताजी से पूछा कि मैं घर को जाता हूं। तब उन्होंने कहा कि सिपाही को साथ ले के चला जा परन्तु भोजन कदाचित् मत करना। मैंने घर में जाकर माता से कहा कि मुझको भूख लगी है। माता ने कुछ मिठाई आदि दिया, उसको खाकर एक बजने पर सो गया। पिताजी प्रातःकाल रात्रि के भोजन को सुन के बहुत गुस्से हुए कि तैने बहुत बुरा काम किया। तब मैंने पिताजी से कहा कि यह कथा का महादेव नहीं है, इसकी पूजा मैं क्यों करूं।

—सुदर्शनदेव आचार्य, स० सम्पादक

भारतीय पर्व और शिवरात्रि

—प्रा० भद्रसेन, बी-२, ९२/७-बी शालीमार, होशियारपुर

भारत एक प्राचीन और विशाल देश है, जो कि धर्म, प्रान्त, भाषा और वर्गगत भेदों के कारण अनेक अंशोंवाला है। इसीलिए यहां सबसे अधिक पर्व, त्यौहार मनाये जाते हैं। ऐसा कोई विरला ही मास होगा, जिसमें पांच से कम व्रत, पर्व न आते होंगे। इनमें से अधिकतर अलग-अलग वर्गों से जुड़े होते हैं। आज की तरह पहले यातायात और सन्देश संचार के ऐसे विकसित साधन नहीं थे। अत: अलग-अलग प्रदेशों में एकसी भावनावाले पर्व भी अलग-अलग रूप में मनाये जाते थे, जो आज भी कुछ अंशों में चल रहे हैं।

भारतीय पर्वों में ऋतु पर्व ही ऐसे हैं, जिनको सामूहिक पर्व कहा जा सकता है। भारत के विशाल होने से सारे देश में एक ऋतु एक साथ नहीं आती। जैसे कि वसन्त शीत के पश्चात् आती है, पहले तो उत्तर भारत जैसी दक्षिण में शीत ऋतु नहीं होती, कुछ स्थानों पर शीत भी वसन्त जैसी ही होती है। अत: सारे देश और संसार में एक दिन वसन्त मनाना कठिन है। ऋतु पर्वों में वसन्त के साथ विजयदशमी, दीपमाला, होली, वैशाखी आदि के नाम आते हैं। इनमें से कुछ पर्व धार्मिक रूप ले चुके हैं, जैसे कि दीपमाला ऋतुपर्व के साथ धार्मिक और ऐतिहासिक पर्व भी है। इसके धार्मिक रूप लेने से मुस्लिम, ईसाई अलग हो जाते हैं तथा ऐतिहासिकपन के कारण उस-उस महापुरुष के माननेवाले अपने-अपने महापुरुषों तक सीमित हो जाते हैं।

इसके साथ भारतीय साहित्य और इतिहास में वर्णव्यवस्था इतनी अधिक शक्तिशाली रही है। कुछ अंशों में आज भी छाई हुई है कि हमने मनुष्यों की तरह पशुओं, पक्षियों, वनस्पतियों के साथ अपने पर्वों को भी वर्णव्यवस्था से भी जोड़ रखा है। जैसे कि रक्षाबन्धन, श्रावणी ब्राह्मणों का, विजयदशमी क्षत्रियों का, दीपमाला-लक्ष्मीपूजन वैश्यों का और होली शूद्रों का पर्व माना गया है। इसी का ही परिणाम है कि विजयदशमी, दीपमाला सर्दी के प्रारम्भ में बीस दिन के अन्तराल से आते हैं। वर्णों के साथ शैव, वैष्णवों से सम्बद्ध भी कुछ पर्व अलग-अलग हैं।

भारतीय पर्वों की बहुलता का कारण जहां भारतीय भूखण्ड के विशाल होने से ऋतु फसलों का पकाव अलग-अलग समय पर अन्तराल से और वर्णव्यवस्था आदि से है, वहां नववर्ष का प्रारम्भ उत्तरायण, चैत्र, वैशाख मास आदि से भिन्न-भिन्न माना जाता है। कई बार किसी पर्व का विशेष तिथि से कुछ की दृष्टि से सम्बन्ध है, तो कुछ के विचार से नक्षत्र से विशेष सम्बन्ध है। जैसे कि कृष्णजन्माष्टमी के लिए कुछ अष्टमी तिथि को महत्त्व देते हैं, तो कुछ रोहिणी नक्षत्र को। आवश्यक नहीं दोनों सदा एक ही दिन आवें।

भारत के प्राचीन देश होने से यहां समय-समय पर धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक आदि क्षेत्रों में अनेक महापुरुष हुए जिनकी संख्या हजारों में है। इसीलिए ऐतिहासिक पर्वों की भी एक लम्बी परम्परा है। भारतीय पर्वों में कुछ पर्व देवी-देवताओं से भी सम्बद्ध हैं। जैसे कि शिवरात्रि, दुर्गापूजा और गणेशपूजा (गणपतिपूजन) आ। दुर्गापूजा बंगाल से बाहर भी अब बढ़ रही है, गणपति पूजन महाराष्ट्र की सीमाओं को लांघकर अन्यत्र भी प्रचलित होने

लगा है, यही रथयात्रा की बात है। ये आज जिस प्रकार से आयोजित किये जाते हैं, इससे इनकी अलग-अलग स्वतन्त्र सत्ता और सृष्टि का कर्त्ता, धर्त्तापन प्रमाणित होता है। शिवपुराण में शिव का अन्यों से स्पर्धा, शत्रुताभरा वर्णन और सृष्टि का कर्तृत्व चित्रित है। इसीलिए चलचित्रों में देवताओं के संघर्ष दर्शाए जाते हैं।

शिवरात्रि :– शिव के व्रत की कथा शिवपुराण में आती है। इस अवसर पर शिकारी की कथा प्रायः सुनाई जाती है। ऐसी कथाओं के आधार पर शिव को आशुतोष, भोले भण्डारी आदि नामों से पुकारा जाता है। इनसे यही प्रमाणित होता है कि किसी कार्य की सिद्धि की कोई व्यवस्थित प्रक्रिया नहीं है, क्योंकि धार्मिक जगत् में व्रत, पूजन, कीर्तन, कथा आदि के करने मात्र से ही कार्य की सिद्धि स्वीकार की जाती है। तभी तो शिवरात्रि पर जहां दिन में निराहार व्रत होता है, वहां रात को जागरण के साथ उस उस पहर की पूजा का पालन किया जाता है। इस सबके करने से शिव के दर्शन और मनौतियों की पूर्ति की बात कही जाती है। इससे तो यही सिद्ध होता है कि किसी कार्य की सफलता का कोई उपाय निश्चित, व्यवस्थित नहीं है। जबकि व्यवहार में हर बात, कार्य एक सुनिश्चित, व्यवस्थित पद्धति से ही होता है और इसी का नाम वैज्ञानिकता, यौगिकता है। हम सबके व्यवहार में तो सही ढंग अपनाने से ही बात सिरे चढ़ती है। तभी तो कहा जाता है :-

पुरुषार्थ ही इस दुनिया में,
सब कामना पूरी करता है।
मनचाहा सुख उसने पाया,
जो आलसी बनके पड़ा न रहा।।

इसके समर्थन में शास्त्रों के अनेक प्रमाण दिए जा सकते हैं।

ऋषिबोध :– १८३८ में तेरहवर्षीय बालक मूलशंकर अपने पिताजी की प्रेरणा पर उनके साथ कथा सुनने गया। वहां कथावाचक ने शिवपुराण के अनुरूप शिव की कथा और उसके व्रत की महिमा सुनाई तथा व्रत रखने की प्रक्रिया बताई। **'बच्चे मन के सच्चे'** के अनुसार मूल ने कथा की बातों को सत्य समझते हुए कथा से लौटते समय पिताजी से कहा–इस बार मैं भी शिवरात्रि का व्रत करूंगा और पिताजी ने इस पर मूल को प्रोत्साहित किया। बालक मूल ने पूर्ण निष्ठा से व्रत रखा और सायं पिताजी के साथ पूजन और जागरण के लिए शिवमन्दिर पहुंचा। शिवमन्दिर में मूल ने जो कुछ देखा, उसका सुनी हुई कथा के साथ तालमेल न लगा। अतः पास में सोए हुए पिताजी को जगाकर उनसे अपनी जिज्ञासा पूछी, पर पिताजी कोई सन्तोषजनक उत्तर न दे सके, केवल यह कहकर अपना पिण्ड छुड़वा लिया कि असली शिव तो कैलाश में रहते हैं। तब सच्चे शिव की खोज का संकल्प लेकर मूल घर लौट आया।

यह उधेड़बुन जब चल रही थी, तो उन्हीं दिनों बहिन और प्रिय चाचा की मृत्यु से मौत को जीतने का संकल्प और साथ आकर जुड़ गया। इन दोनों बातों की खोज में मूल से शुद्धचैतन्य ब्रह्मचारी और फिर दयानन्द संन्यासी बनकर १८४६ से ६० तक का समय लगाया। अन्त में १८६१ से ६३ तक ब्रह्मर्षि गुरु विरजानन्द जी दण्डी ने आर्षज्ञान की कुंजी हाथ में दी। उसके माध्यम से महर्षि दयानन्द ने वेद और वैदिक वाङ्मय का आलोडन किया। १८७४ तक लगातार चले आलोडन और प्रचार के अनुभव से प्राप्त बोध को महर्षि ने अपने भाषणों और सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका जैसे ग्रन्थों द्वारा स्पष्ट किया। उस १८३८ की शिवरात्रि से उभरी जिज्ञासा के समाधान का महर्षि दयानन्द को जो बोध प्राप्त हुआ, वह है सुसंगतपन अर्थात् शास्त्रों

के प्रमाणों और तर्क, युक्ति से बात का संगत होना।

सुसंगतपन :– महर्षि प्रदत्त बोध, समाधान, कुंजी **सुसंगति** ही है, जिसका भाव है कि किसी बात, तत्त्व, सिद्धान्त का शास्त्रों के प्रमाण से प्रमाणित और तर्क, युक्ति से पुष्ट होना। इसके स्पष्ट उदाहरण के लिए महर्षि द्वारा निर्दिष्ट विवाह की आयु का विवेचन, **अभिवादन** के लिए नमस्ते का प्रयोग, सामूहिक नाम की दृष्टि से **आर्य** शब्द, ईश्वर का मुख्य नाम **ओम्** एकेश्वरवाद, धर्म=अच्छे आचरण का नाम है, मानव जाति की एकता और सभी महापुरुषों का सम्मान को लिया जा सकता है। सुसंगतपन के इन सभी उदाहरणों का पूरा परिचय **'सुसंगतजीवनपथ'** पढ़कर प्राप्त किया जा सकता है। ये सब उसी प्रकार सुसंगत रूप में अपेक्षित हैं जैसे सन्तुलित भोजन। क्योंकि शरीर के संवर्धन-संरक्षण के लिए भोजन की अनिवार्यता, अपरिहार्यता सर्वसम्मत सिद्धान्त है। जब हम प्रयोजन के अनुरूप भोजन पर विचार करते हैं तो सन्तुलित आहार निष्कर्ष के रूप में सामने आता है। यतो हि शरीर के लिए अपेक्षित सारे तत्त्व सन्तुलित आहार से ही प्राप्त हो सकते हैं। ठीक इसी प्रकार जीवन के लिए अपेक्षित वैचारिक, सैद्धान्तिक बातें, तत्त्वों की कसौटी सुसंगतपन ही सिद्ध होती है।

प्रिय पाठको ! आओ, सुसंगतपन की कसौटी से शिवरात्रि पर भी एक दृष्टिपात करलें। शिवभक्त इस पर्व पर शिव के जिस स्वरूप का स्मरण करते हैं, वह देवाधिदेव महादेव, सर्वशक्तियुक्त, जगत कर्तृत्व आदि गुणवाला है। वेद आदि शास्त्रों में ऐसा स्वरूप ईश्वर का ही प्रतिपादित किया गया है। शिव शब्द का अर्थ है–कल्याण, सुख और कल्याणकारक सूर्य, वायु, जल, अन्नादि का दाता ईश्वर ही है। वह सभी स्थानों में सदा विराजमान रहता है और ईश्वर ही काल तथा स्थान की सीमा में सीमित नहीं है। अत: नित्य, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान्, सर्वज्ञ आदि गुणयुक्त होने से ईश्वर ही शिव शब्द का वाच्य, अभिधेय है तथा सर्वत्र सर्वदा कल्याण करने में समर्थ है। शास्त्रों में परमेश्वर को ही अनेक स्थानों पर शिव तथा उसके पर्याय शब्दों से स्मरण किया है। इसका एक सुन्दर उदाहरण सन्ध्या का नमस्कार मन्त्र है :-

नम: शम्भवाय च मयोभवाय च नम: शंकराय च।
मयस्कराय च नम: शिवाय च शिवतराय च।।

इसीलिए अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास में शिव शब्द का ईश्वरपरक निर्वचन दर्शाते हुए महर्षि दयानन्द जी ने लिखा है :- **"शिवु कल्याणे"** धातु से **"शिव"** शब्द सिद्ध होता है। जो कल्याण स्वरूप और कल्याण का करनेहारा है इसलिए उस परमेश्वर का नाम "शिव" है।

हां, तभी तो सच्चिदानन्दस्वरूप में आनन्द शब्द आया है।

आर्यसमाज शिवरात्रि पर्व को ऋषिबोधोत्सव के रूप में आयोजित करता है, क्योंकि इसी दिन ही ऋषि को बोध का उद्भव हुआ था। ऋषि दयानन्द द्वारा प्रदर्शित बोध का मूलसूत्र सुसंगतपन ही है, जो कि ऋषि द्वारा दर्शाए विचारों में यत्र-तत्र-सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। आर्यसमाज के वार्षिक उत्सव के विज्ञापन जो आज से तीस वर्ष पूर्व छपते थे, उन पर एक पद्य होता था, जिसके अन्तिम शब्द थे :- **"जिसका दिल चाहे आजमाए"।** इसी विचारशीलता को उभारने के लिए आर्यसमाज ने आरम्भ से प्रयास किया और यही ऋषिबोधोत्सव का मूलमन्त्र है। अत: हमें अपने प्रत्येक कार्य, बात में तालमेल की कसौटी अपनानी चाहिए और तभी **"मनुष्य एक विचारशील प्राणी है"** यह उक्ति साकार हो सकती है तथा यही कल्याण का आधार है।

☆ ☆ ☆

आइए ! हम संकल्प लें

शिवरात्रि की पावन वेला ! आर्यो का संकल्प दिवस। शिवरात्रि ने ही बालक मूलशंकर के अन्तःकरण को झकझोरा था और वह भी इतने प्रभावशाली ढंग से कि फिर कभी उसके पग सत्यांन्वेषण के पथ से विचलित न हुए। वह बालक सत्य-पथ और सच्चे शिव का दर्शन करने हेतु स्वामी दयानन्द सरस्वती बना और सम्पूर्ण दयानन्द बनकर संसार का सबसे बड़ा तपस्वी, समाजसुधारक, क्रान्ति-प्रणेता, राष्ट्रीय चेतना का अग्रदूत, वेदोद्धारक, अछूतोद्धारक, समग्र मानवता का जाग्रत प्रहरी बन गया और सम्पूर्ण विश्व में सामाजिक, राजनीतिक तथा धार्मिक उत्क्रान्ति का प्रखर सूत्रपात हुआ। इसी शिवरात्रि के पर्व पर ही प्रेरणा प्राप्त कर महर्षि दयानन्द विश्वमुखीन मानवता के संवाहक बने। फिर क्या था ? अखण्ड ब्रह्मचर्य, अतर्क तर्कशक्ति, प्रचण्ड निर्भीकता, अनुपमेय व्यक्तित्व, प्रखर विद्वत्ता, अपराजेय समर्पण के बल पर महर्षि दयानन्द ने सम्पूर्ण महिमण्डल की दानवता, अज्ञान, अभाव, अन्याय, पाखण्ड, अन्धविश्वास, कुरीतियों को अकेले, बिलकुल अकेले ललकारा और उन्हें परास्त किया। उन्हीं की भविष्य गर्जना से ही भारत की स्वाधीनता का पावन पथ प्रशस्त हुआ। ऋषि द्वारा स्थापित आर्यसमाज ने स्वतन्त्रता के पूर्व तक स्वामी दयानन्द ने आग्नेय विचारों के प्रचार व प्रसार हेतु प्राणपण ने अथक प्रयास किया। आर्यसमाज के ही प्रभावी संघर्ष के कारण स्वाधीनता संग्राम को अजेय क्रान्तिकारियों का संबल मिला और अन्ततः अंग्रेजों को भारत छोड़ना पड़ा। महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाज ने मूर्तिपूजा, अवतारवाद, मृतक श्राद्ध, जातिवाद, अछूतवाद, पाखण्ड, बालविवाह, अनमेल विवाह, अशिक्षा, कुशिक्षा, गोवध, अन्धविश्वास पर करारा प्रहार किया और विधवा विवाह, वेदों के पठन-पाठन, प्रखर राष्ट्रभक्ति, बलिदान एवं त्याग आदि उदात्त भावनाओं को संबल प्रदान किया। सारी धरती के प्रबुद्धजनों ने अंगड़ाई ली।

परन्तु ! आज हमारा आर्यसमाज कहां जारहा है ? आर्यसमाज के उद्देश्यों के प्रति आर्यो की समर्पण भावना कहां विलुप्त होगई है ? सत्य तो यह है कि हम तथाकथित आर्यजन महर्षि दयानन्द के स्वप्नों व संदेशों को भूलकर मात्र स्वार्थ साधना, पदलिप्सा तथा कुर्सियों के लोभ में फंसकर रह गये हैं। आज हमने महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, पं० लेखराम, महाशय राजपाल आदि सभी युगपुरुषों के तप, त्याग व बलिदान को विस्मृत कर दिया है। आज हमारे मन्दिरों से प्रकाश की धारा क्यों नहीं प्रवाहित हो रही है ? आज समग्र भारत में मूर्तिपूजा, अवतारवाद, जातिवाद, पाखण्ड, अन्धविश्वास क्यों दिन दूना, रात चौगुना बढ़ता जारहा है। आज सारा राष्ट्र अनाचार, भ्रष्टाचार, व्यभिचार, नारी उत्पीडन, बलात्कार, दहेज, हत्या, दुराचरण की प्रचण्ड अग्नि में झुलस रहा है। अनैतिकता, चरित्रहीनता, दनुजता, विध्वंस कर रही है। इसका मात्र एक ही कारण है कि हम आर्यजन एवं हमारा आर्यसमाज सो रहा है। यह कटु सत्य है। आज शिवरात्रि की पावन वेला पर हमको इस बात पर विचार करना होगा कि हमारे आर्यसमाज की यह दुर्गति क्यों हो रही है ? **कृण्वन्तो विश्वमार्यम्** का हमारा नारा कहां लुप्त होगया है ? हम स्वयं आर्य नहीं बन पारहे हैं ? आर्यसमाज रूपी अग्नि जिसमें पूर्ण संसार की दानवता अज्ञान अन्याय को भस्म कर देने की क्षमता विश्व ने देखी थी, आज क्यों बुझसी गई है ? निश्चितरूप से हम आर्यो

ने आर्यसामाजिक संस्थाओं ने अपने को समय की धारा के साथ बहने दिया है जबकि हमारे ही कन्धों पर समय की धारा को मोड़ने की जिम्मेदारी थी।

आज शिवरात्रि की पावन जागरण की वेला पर आइए! हम आर्यजन संकल्प लें कि हम अपना मार्ग बदलेंगे। हम महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, पं० लेखराम के मार्ग को अपना मार्ग बनायेंगे और महर्षि दयानन्द के स्वप्नों को साकार करने के लिए अपनी सर्वस्व समर्पित कर देंगे और यदि हम ऐसा न कर पाये तो हम महर्षि दयानन्द व आर्यसमाज का नाम लेकर उन्हें कलंकित नहीं करेंगे।

—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

ओ३म्

उत्सव सूचना

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आपके अपने प्रिय गुरुकुल भैयापुर लाढौत (रोहतक) का छठा वार्षिक महोत्सव १५, १६ मार्च, शनिवार-रविवार १९९७ को धूमधाम से मनाया जारहा है।

इस अवसर पर आर्यजगत् के प्रसिद्ध नेतागण, संन्यासी, भजनोपदेशक एवं राजनेता पधार रहे हैं। इस शुभ अवसर पर प्रभु की अमरवाणी सामवेद का पारायण यज्ञ भी किया जा रहा है। यज्ञ के ब्रह्मा वेदव्याख्याता आचार्य पं० सुदर्शनदेव जी होंगे। पूर्णाहुति १६ मार्च को होगी। श्रद्धालु जन यजमान बनने के लिए सम्पर्क करें तथा घृत-सामग्री देकर पुण्य के भागी बनें। इष्टमित्रों सहित पधारें। भोजन एवं आवास का उचित प्रबन्ध गुरुकुल की ओर से किया गया है।

निवेदक :-
आचार्य गुरुकुल भैयापुर लाढौत (रोहतक)

आया है यह पर्व महान्

आया है संकल्पों का यह-
पर्व सुपावन वसुन्धरा पर।
इसने ही नव ज्योति बिखेरी-
थी ज्योतित-सी पूर्ण धरा पर।
ऋषिवर दयानन्द-सा हममें-
जागे त्याग तथा बलिदान।
आया है यह पर्व महान्।।

इसने ही ऋषि दयानन्द को,
जन गण मंगल हेतु जगाया।
ऋषिवर के अन्तर मानस में,
सत्य-शोध हित भाव उगाया।
इसी बोध के पुण्य पर्व से-
आओ ! हम भी लें अनुदान।
आया है यह पर्व महान्।।

'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' हित,
आओ हम सत्कर्म करें।
शौर्य-शक्ति से, साहस से हम,
मानवता शृंगार करें।
कभी न लें हम प्रतिफल में,
कुछ, कर्त्तव्यों का ही प्रतिदान।
आया है यह पर्व महान्।।

आओ ! लें संकल्प सभी हम !
जग यह आर्य बनाएंगे।
ऋषिवर दयानन्द के स्वप्नों-
को साकार कराएंगे।
महिमण्डल पर फिर से गूंजे-
अपौरुषेय वेदों का गान।
आया है यह पर्व महान्।।

—राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति
मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ०प्र०)

☆ ☆ ☆

बोधोत्सव पर संकल्प लें

❑ भगवान्देव "चैतन्य"

पक्षियों से भी तेज गति से आकाश में विमान द्वारा उड़नेवाला व्यक्ति इस बात पर तनिक भी विचार नहीं करता कि वास्तव में उसे इस स्थिति तक पहुंचाने के लिए कितने लोगों ने कठिन परिश्रम किया तथा अपने बलिदान दिए। समुद्र की छाती को चीरता हुआ आज का मानव जब आगे बढ़ता है तब उसका चिन्तन इस ओर नहीं मुड़ता कि किन वैज्ञानिकों के तप-त्याग और परिश्रम का यह सुफल है। ठीक इसी प्रकार आज स्त्री, शूद्र, समाज तथा राष्ट्रोद्धार के पीछे सबसे प्रमुख भूमिका किस मनीषी की रही है इस ओर भी किसी की चिन्तनधारा नहीं मुड़ती है। एक समय था जब स्त्री को पैरों जूती समझा जाता था, उसे वेदादि सत्य शास्त्र पढ़ने तो दूर रहे—सामान्य शिक्षा प्राप्त करने का भी अधिकार नहीं था। शूद्रों की स्थिति तो इससे भी निकृष्ट थी। समाज कुरीतियों और कुनीतियों का अखाड़ा बना हुआ था। धर्म के नाम पर शोषित और प्रताडित होना पड़ता था। प्यारा राष्ट्र परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़कर अपने आलसी और प्रमादी नागरिकों को देख-देख मानो खून के आंसू बहाता था। ऐसे ही विकट समय में महर्षि दयानन्द सरस्वती का प्रादुर्भाव हुआ। उन्होंने तत्कालीन सभी समस्याओं का सूक्ष्मता से अवलोकन किया और बड़े से बड़ा संकट तथा घोर विरोध होने के बावजूद अपनी पूरी शक्ति से इन्हें दूर करने के लिए कार्यक्षेत्र में उतर पड़े। यह कैसी विडम्बना है कि सर्वप्रथम जिन सामाजिक एवं राष्ट्रीय समस्याओं को दूर करने के लिए महर्षि दयानन्द और उनके द्वारा चलाए गए आन्दोलन आर्यसमाज ने अपना खून-पसीना एक कर दिया। उसका श्रेय कुछ अन्य व्यक्ति या संस्थाएं अपनी झोली में डाल रही हैं। क्या आर्यसमाज को उसके बलिदानों का यही उपहार मिलना था आज तो स्थिति यह है :-

उनकी तुरब्बत पर एक दिया नहीं,
जिनके खूं से जले थे चिरागे वतन।
आज दमकते हैं, उनके मकबरे जो,
बेचते थे शहीदों का कफन।।

आज साम्प्रदायिकता की आड़ में सब अपना-अपना उल्लू सीधा करने की ताक में हैं। इसीलिए आर्यसमाज जैसी असाम्प्रदायिक संस्था को कोई महत्त्व नहीं दिया जारहा है। बल्कि उसके विरुद्ध बहुतसा दुष्प्रचार किया जारहा है। विभिन्न सम्प्रदायों के प्रति तुष्टीकरण की नीति क्या राष्ट्रीय एकता और मानव मूल्यों की स्थापना की दिशा में सार्थक हो सकती है ? महर्षि दयानन्द सरस्वती ने एकेश्वर, एक भाषा, एक जाति, एक राष्ट्र और एक ही मानवधर्म का जो मूलमन्त्र दिया था क्या उसे कार्यरूप दिये बिना भावात्मक एकता स्थापित हो सकती है ? हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई आदि से ऊपर उठकर मानवमात्र के लिए वैदिक धर्म का उपदेश ही वास्तव में असाम्प्रदायिक है। महर्षि दयानन्द एवं उनके विचार ही सच्चे समन्वयवादी हैं। एक भाव जब तक नहीं होगा तब तक भावात्मक एकता स्थापित होगी कैसे ? इस तुष्टिकरण की नीति ने आज राष्ट्र को बिखरने की कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है। कीचड़ से कीचड़ धोने से कोई लाभ नहीं—केवल स्वच्छ जल ही सफाई का कार्य कर सकता है। पत्तों को पानी देने से वृक्ष को हराभरा नहीं रखा जा सकता है बल्कि उसके लिए जड़ों को पानी देकर राष्ट्ररूपी वृक्ष को

हराभरा रखने का था। इस प्रयास की सार्थकता को समझकर कार्यरूप देने की आज परम आवश्यकता है अन्यथा राष्ट्र की स्थिति और भी विकटतर हो जाने की संभावना है। आज नारी मुक्त तो हुई मगर दिशाहीन और उछृंखल होकर अपनी मर्यादाओं से भटक गई है। शूद्र आज अमानवीय यातनाओं से मुक्त तो हुआ मगर राष्ट्र के लिए एक नई समस्या बनकर उभर रहा है। देश परतन्त्रता की बेड़ियों को तोड़कर स्वतन्त्र तो हुआ मगर इस स्वतन्त्रता का आज क्या रूप बन गया है यह विचारणीय ही नहीं चिन्तनीय है। यह सब इसीलिए हुआ है कि जिन लोगों ने नींव के पत्थर बनकर, अपना अस्तित्व मिटाकर इन उपलब्धियों को हमारी हथेलियों पर रखा था, हम उनकी वास्तविक विचारधाराओं, मन्तव्यों तथा आदर्शों को भूलकर कुछ स्वार्थी, संकुचित एवं तथाकथित धर्म, समाज और सुधारकों के चंगुल में फंस गए हैं। अपने-अपने संकुचित स्वार्थों, सम्प्रदायों, मतों और विचारधाराओं को जब तक हम मानवता का जामा पहनाकर राष्ट्रीय एकता की पावनधारा में नहीं बह जाते हैं, तब तक ऊपर से भले ही लगे कि अब वातावरण सामान्य बनता जारहा है मगर भीतर अधिक विस्फोटक स्थिति बनती चली जाएगी। प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता डा० सीतापाल रमैया ने लिखा है कि स्वतन्त्रता संग्राम में ८५ प्रतिशत से भी अधिक बलिदान आर्यसमाजियों का रहा है। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है मगर आर्यसमाज ने कभी इस बात का ढिढोरा नहीं पीटा और न ही अपने स्वार्थ के लिए गद्दियां मांगीं मगर इसका अर्थ यह नहीं है कि आर्यसमाज की मौजूदगी को बिलकुल नजरअन्दाज कर दिया जाए। स्वतन्त्रता और स्वराज्य का सर्वप्रथम उद्घोष पहले ही सुनिश्चित कर दिया गया था :- **"संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है....."** तथा **"प्रत्येक को अपनी उन्नति से संतुष्ट नहीं रहना चाहिए बल्कि सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।"** इस प्रकार समूचे राष्ट्र की व्यथा को आर्यसमाज अपनी व्यथा समझता है। कोई भी व्यक्ति, संस्था, मन्तव्य, मज़हब, राष्ट्र से बड़ा नहीं हो सकता है। राष्ट्र की सुरक्षा के लिए इन सबको ताक पर रखा जा सकता है मगर इनके लिए राष्ट्र को नहीं। मगर आज तो उल्टी ही गंगा बह रही है :-

देश पड़े चूल्हे में राष्ट्र जाए भाड़ में।
खेलते शिकार सभी कुर्सियों की आड़ में।।

आज सभी अपनी-अपनी रोटियां सेकने की ताक में बैठे हुए हैं। राष्ट्र की किसी को भी हृदय से चिन्ता नहीं है। सभी अपने अपने दायरों को बढ़ाने में ही लगे हुए हैं जबकि आवश्यकता सभी दायरों से बाहर निकलकर राष्ट्र की मुख्यधारा से जुड़ने की है। इसके लिए हमें निश्चित रूप से महर्षि दयानन्द की मानवतावादी विचारधारा को अपनाना पड़ेगा। उन्होंने व्यक्ति की सच्चरित्रता पर सबसे अधिक बल दिया है। उनका एक ही उद्घोष था :- **कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"** अर्थात् समूचे विश्व को आर्य (श्रेष्ठ) बनाया जाए। व्यक्ति में श्रेष्ठता आए बिना कभी भी उदारता और उत्कृष्टता नहीं आ सकती है। श्रेष्ठ व्यक्ति ही उदार और परोपकारी हो सकता है, वही सच्चा मानव बन सकता है। जब व्यक्ति श्रेष्ठ व्यक्ति बन जाता है तो वह केवल अपने गुणों से पहचाना जाता है :- किसी मज़हब, सम्प्रदाय, जाति या विशेष चिह्न आदि के द्वारा नहीं। ऐसा व्यक्ति ही राष्ट्र या मानवता का हितैषी बन सकता है। यही राष्ट्रीय एकता के सन्दर्भ में महर्षि दयानन्द की पहचान है। मैं समझता हूं कि ऐसी कट्टर राष्ट्रीयता के पथ पर जब तक हम नहीं चलेंगे तब तक राष्ट्रीय एकता के नारे तो लगाए जा सकते हैं, भावात्मक एकता के स्वांग तो रचाए जा सकते हैं मगर अनेक स्थानों पर हुई शर्मनाक घटनाओं से देश को उबारा नहीं जा

सकता है। लाला लाजपतराय ने ठीक ही कहा था :- "आर्यसमाज कट्टर राष्ट्रीयता में विश्वास रखता है।" सचमुच उसे ढिलमुल नीति पसन्द नहीं है। आर्यसमाज ने यदि राष्ट्र के लिए सबसे अधिक बलिदान दिए हैं तो इस राष्ट्र के प्रति उसका असीम स्नेह होना स्वाभाविक ही है। राष्ट्रपिता महर्षि दयानन्द जी के बोधोत्सव पर आज भी सभी आर्य प्रण लेते हैं :-

प्रण करते हैं संस्कृति की शाम नहीं होने देंगे।
वीर शहीदों की समाधि बदनाम नहीं होने देंगे।
जब तक रग में एक बूंद भी गर्म लहू की बाकी है।
भारत की आजादी को हम नीलाम नहीं होने देंगे।

☆ ☆ ☆

शिवरात्रि का मेला

रचयिता :- स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती (दिल्लीसभा)

शिवरात्रि की आई पावन पवित्र वेला।
बैठा था मूलशंकर शिव दर्श को अकेला।।
बैठा प्रभु दर्श को शिशु टकटकी लगाये।
कुछ देर बाद निकला चूहों का एक झमेला।।१।।
वह उछलकूद करके चट कर गये चढ़ावा।
मल मूत्र त्याग करके पिण्डी पै दण्ड पेला।।२।।
सोचा यह जड़ प्रतिमा परमात्मा नहीं है।
मिसरी न बन सकेगा मिट्टी का एक ढेला।।३।।
दिल में प्रभु मिलन की थी लगन मूल जी को।
ईश्वर की खोज में वह चल दिया अकेला।।४।।
मठ मन्दिरों में देखा पाई थी बुतपरस्ती।
अति निकट विकट संकट और झंझटों को झेला।।५।।
निर्भय कदम बढ़ाये सत्य राह चलते-चलते।
पाखण्ड के किलों को देता रहा ढकेला।।६।।
ध्वज ओ३म् की उठाई वेदों की दुहाई।
सन्देश दे रहा है शिवरात्रि का मेला।।७।।
शिवरात्रि की आई पावन पवित्र वेला।।

☆ ☆ ☆

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का शिवरात्रि के पावन पर्व पर नई प्रेरणा लेने का आग्रह

प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी शिवरात्रि (ऋषिबोध रात्रि) का पावन पर्व ७ मार्च को समारोह के साथ मनाया जायेगा। भारत ही नहीं, सारे संसार में यह पर्व मनाया जाता है, परन्तु ऋषिभक्तों के लिए यह नवजीवन और "उत्तिष्ठत जाग्रत" का सन्देश देनेवाला पर्व है। हमारा सभी आर्यबन्धुओं से विनम्र निवेदन है कि हम इस पावन पर्व पर आत्मचिन्तन करें। उस दिन अन्य कार्यों को छोड़कर सामूहिक कार्यक्रम तो करें ही भविष्य का विशेष कार्यक्रम बनावें और संगठन को सुदृढ़ करने पर विचार करें। साथ में आत्मचिन्तन कर जहां अपनी कमजोरियों को छोड़ने का यत्न करें, वहां संगठन में छाये अवांछित तत्त्वों को कैसे दूर किया जा सकता है, इस पर गम्भीरता से विचार करें। आर्यसमाज को ही यह गौरव प्राप्त है कि वे जहां जीवन के उद्देश्य को समझने में समर्थ हैं, वहां ईश्वर के सच्चे स्वरूप को भी जानते हैं, परन्तु जानने के साथ ईश्वर को मानना है ईश्वरीय वाणी वेद एवं वैदिक साहित्य पर अटूट श्रद्धा करके सारे संसार को आनन्दमय बनाने का संकल्प लें।

निवेदक :-

स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती	**स्वामी धर्मानन्द सरस्वती**
मन्त्री	**कार्यकर्त्ता प्रधान**
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा	**सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा**

उपप्रधान :- प्रो० शेरसिंह, केशवदेव वर्मा, रमेशचन्द्र श्रीवास्तव, सत्यवीर शास्त्री, विट्ठलराव आर्य।

उपमंत्री :– विनोदबिहारी भटनागर, रणजीतसिंह, सत्यव्रतशास्त्री, सम्भा जी माणिकराव पंवार।

वेद और दयानन्द

❑ प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य

उन्नीसवीं शताब्दी में इस देश में अनेक समाज सुधारकों तथा महान् व्यक्तियों ने जन्म लिया। राजा राममोहनराय, केशवचन्द्र सेन, रानाडे, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द आदि का नाम उल्लेखनीय है। महर्षि दयानन्द का नाम उनमें अग्रणी है, क्योंकि दयानन्द ने पहली बार भारत तथा विश्व का ध्यान वेदों की ओर आकृष्ट किया। दयानन्द से पहले लोग वेदों को भूल चुके थे। भारत की प्राचीन संस्कृति, वैदिक संस्कृति रामायण, महाभारत, गीता, पुराणों तक सीमित होकर रह गई थी। दयानन्द ने वेदों को भारतीय संस्कृति का मूलस्रोत बताया। आज विद्वान् इस बात को स्वीकार करते हैं।

नागरी प्रचारिणी सभा, काशी द्वारा प्रकाशित 'हिन्दी साहित्य का बृहद् इतिहास' (भाग आठ, संवत् २०२९ पृष्ठ १२-१३) में लिखा है कि स्वामी जी ने वेदों को प्रमाण मानकर भारतीय संस्कृति की नई व्याख्या की। उन्होंने हिन्दू समाज को नवजागरण का सन्देश दिया। 'एनसाईक्लोपीडिया अमेरिकाना' (खंड आठ, १९७६ पृष्ठ ५४७) लिखता है कि दयानन्द ने भारतीय संस्कृति को। हिन्दू संस्कृति को उसके पवित्रतम ग्रन्थ वेदों की ओर लौटने का सन्देश दिया :- "He Concived the idea of returning Hinduism of the pure teachings of the vedas, the earliest most sacred Hindu seriptures"

दयानन्द ने आर्यसताज के दस नियमों में लिखा है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। इसका विस्तृत विवेचन उन्होंने अपने ग्रन्थ 'ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका' में किया है। उन्होंने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' के अन्त में लिखा है कि 'वेद सूर्य के समान स्वतः प्रमाण है।' उनका उद्देश्य किसी नवीन मत या सम्प्रदाय चलाना नहीं था। 'सत्यार्थप्रकाश' में स्वमन्तव्यप्रकाश में उन्होंने लिखा है कि "वेदादि सत्यशास्त्र और ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्त माने हुए ईश्वरीय पदार्थ हैं उनको मैं भी मानता हूं।"

आज समाचार पत्रों में कहीं-कहीं वेदों की चर्चा दिखाई देती है। 'नवभारत टाइम्स' में १९९४ के रविवारीय अंकों में 'भारत के मील पत्थर' के अन्तर्गत काफी सामग्री छपी है। ९-१-९५ के अंक में विद्वान् लेखक ने ऋग्वेद के सृष्टि सूक्त की चर्चा की है। १५-१-९५ के अंक में अथर्ववेद की चर्चा की है। इस चर्चा में डा० सूर्यकान्त बाली ने अथर्ववेद के उस जादू-टोनेवाले रूप का निषेध किया है जिसका प्रतिपादन पश्चिमी विद्वानों ने किया था। 'राष्ट्रीय सहारा' (१७-१२-९४ तथा १६-११-९४) में दयानन्द के वेदभाष्य को उद्धृत करते हुए यज्ञों में महीधर आदि द्वारा प्रतिपादित पशुहिंसा तथा अश्लीलता का विरोध किया गया है। 'दैनिक जागरण' (८ सितम्बर ९६) में वर्णव्यवस्था के प्रसंग में सम्पादक ने वेद और दयानन्द का हवाला देकर शूद्रत्व और हिन्दुत्व की व्याख्या की है तथा शूद्र और ब्राह्मण को समान बताते हुए ऋग्वेद का यह मन्त्र भी दिया है :- **"अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय।"** चण्डीगढ़ से प्रकाशित 'जनसत्ता' (१८-१०-९२) में हिन्दी के प्रसिद्ध भाषाविद् एवं

आलोचक डा० रामविलास शर्मा की ऋग्वेद सम्बन्धी खोज 'मार्क्सवाद, ऋग्वेद और हिन्दी समाज' शीर्षक से प्रकाशित हुई है। डा० शर्मा के अनुसार मार्क्स के डायलेक्टिक्स अर्थात् द्वन्द्वात्मकता की मूल अवधारणाएं ऋग्वेद में विद्यमान हैं। उनका कथन है कि परस्पर परिवर्तन एवं गतिशीलता के बारे में संसार में शायद ही कोई पुस्तक हो जिसमें विश्वप्रपंच इतना गतिशील हो जितना ऋग्वेद में है। आधुनिक वैज्ञानिकों में आइन्स्टायन ऋग्वेद की धारणाओं को कहीं-कहीं दुहराते हैं। एक बहुत बड़ी उपलब्धि है कि उन्होंने आकाश को एक तत्त्व माना है।

दयानन्द ने 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' में पहले ही प्रतिपादित किया है कि वेदों में विज्ञान विद्या है, सृष्टिविद्या तथा तारविद्या, नौविमान विद्या आदि अनेक विषय बीजरूप में हैं। इस सन्दर्भ में 'भाष्यभूमिका' के सृष्टिविद्याविषय, पृथिव्यादि लोक भ्रमण विषय आदि देखे जा सकते हैं। इस बारे में एक विद्वान् ने 'पॉजिटिव साइंसिज इन दॉ वेदाज' (Dr. D.D. Mehta; Academy of vedic research, 14/23 East Patel Nagar, New Delhi 1974) नाम पुस्तक ही अलग से लिखी है। इसके भाग एक में वेदों में भौतिक विज्ञान एवं रसायन विज्ञान तथा भाग दो में गणित विज्ञान को लिया गया है। भाग तीन में चिकित्सा विज्ञान तथा भाग चार में खगोलविद्या की चर्चा है। भाग पांच में ग्रहों (The Science of Planets) के विज्ञान का उल्लेख है। इस बारे में विद्वानों द्वारा आगे शोध एवं अनुसंधान करने की आवश्यकता है।

जबसे मैक्समूलर ने ऋग्वेद का भाष्य किया तब से इंगलैंड और यूरोप में वेदों के बारे में बहुतसी भ्रान्त धारणाओं का जन्म हुआ। ऐसा डा० रामबिलास शर्मा अपनी ऋग्वेद सम्बन्धी उक्त शोध में स्वीकार करते हैं। डा० शर्मा के अनुसार मार्क्स के भारत सम्बन्धी लेख (१८५३ ई०) तक वेदों के बारे में कोई गलत धारणाएं नहीं थीं। दयानन्द ने तो अपने समय में ही अपनी पुस्तक 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' के आठवें प्रकरण में मैक्समूलर के वेदभाष्य का खंडन कर दिया था। वहीं पर दयानन्द ने प्रमाण देकर महीधर आदि के असंगत एवं अश्लील भाष्य का भी खंडन किया है। स्वयं मैक्समूलर के पत्रों से भी इस बात की पुष्टि होती है। पाश्चात्य विद्वानों ने वेदों का भाष्य करते हुए विकासवाद को अपना प्रमुख आधार बनाया। इसी विचारधारा पर चलते हुए मैक्समूलर ने वेदों में बहु देवतावाद तथा हीनोथियज्म (polytheism and henotheism) जैसे विचारों की कल्पना की। हीनोथियज्म में अन्य देवताओं को एक देवता विशेष से हीन माना गया। इस बारे में अरविन्द घोष ने लिखा है कि वेदों के पाश्चात्य भाष्यकार विकासवाद के पूर्वाग्रह को लेकर चलते हैं। अगर वेदों का अर्थ विकासवाद के सिद्धान्त को पुष्ट नहीं करता तो वे अर्थ को तोड़-मरोड़कर अपने अनुकूल बनाने की चेष्टा करते हैं। परन्तु दयानन्द का भाष्य इस प्रकार की तोड़-मरोड़ नहीं करता, वे अत्यन्त सीधे रूप से मूल भाग का अर्थ करते हैं। अरविन्द घोष लिखते हैं :- Why should not the foundation of Vedic thought be natural menotheism rather than this new fangled munostroiety of henotheism ? because it imperils their theory of evolutionary stages of human development. I ask, in this point, and it is the fundamental point who deals most straight forwordly with the test, Dayananda or the western scholars ? We are aware

how modern scholars twist a why from the evidence"

फिर भी पाश्चात्य विद्वानों द्वारा वेदों की शोध सम्बन्धी कार्य की हम अनदेखी नहीं कर सकते। वेदों के बारे में देश-विदेश में विद्वानों तथा संस्थाओं द्वारा शोध एवं लेखन जारी है। नए प्रयासों में प्राच्य विद्या संस्थान, शिवशक्ति-थाने (महाराष्ट्र) का नाम उल्लेखनीय है। यहां ऋग्वेद का 'दी हेरिटेज ऑफ मैनकाण्ड' (The Heritage of Mankind) नाम से ग्यारह खण्डों में अंग्रेजी में अनुवाद किया जारहा है। एक ६८ वर्षीया रूसी महिला तात्याना येलिजोरकोन्ग ने ऋग्वेद का रूखी भाषा में अनुवाद किया है। इसका पहला खंड १९५९ में छपा। फिर दूसरा खंड छपा और दोनों हाथोंहाथ बिक गए। अब वे रूसी अनुवाद का तीसरा और अन्तिम खंड छापने की तैयारी में हैं। वेद के बारे में भारतीय तथा पाश्चात्य विद्वानों द्वारा अभी बहुत कुछ करना शेष है। विभिन्न संस्थाओं, सम्मेलनों तथा धर्माचार्यो द्वारा इस ओर ध्यान देने की आवश्यकता है ताकि वेदों का सही एवं युक्तिसंगत अर्थ लोगों तक पहुंच सके। लोग वेदों के कल्याणकारी विचारों का लाभ उठा सकें क्योंकि वेद समस्त मानवजाति के लिए हैं। इस बारे में अजन्ता पब्लिकेशन्ज दिल्ली द्वारा प्रकाशित 'दी सैन्ट्रल फिलोसफी ऑफ ऋग्वेद' (The Central philosephy of Rigveda by Sh. A. Ram Murthi) नामक पुस्तक अवलोकनीय है। लेखक के अनुसार ऋग्वेद मनुष्य को पूर्ण आशावाद का सन्देश देता है। इसमें जीवन को पूर्णता से जीने का निर्देश है। इसमें सूर्य, चांद और सितारों से भी आगे विचारों की ऊंची उड़ान का संसार है।

अस्तु यह तो वेदों का अध्ययन करने से ही पता चलता है। वेदों का विषय इतना विस्तृत, व्यापक एवं गूढ़ है कि कोई एक व्यक्ति, विद्वान् अथवा संस्था इसका पार नहीं पा सकती। स्वयं मैक्समूलर ने अपने ऋग्वेद भाष्य के चौथे खंड में इस बात को स्वीकार किया था, "It is impossible for one scholar, it will probably be impossible for one generation of scholars to decipher the hymns of Rigveda to a satisfactory conclusion." अर्थात् किसी एक विद्वान् अथवा विद्वानों की एक पीढ़ी द्वारा ऋग्वेद के मन्त्रों का सही-सही अर्थ कर पाना असंभव है।

मनु ने तो सदियों पहले कहा था कि तीनों लोक भूत, भविष्यत् और वर्तमान आदि की सब विद्या वेदों से प्रसिद्ध होती है :-

'भूतं भव्यं भविष्यच्च सर्वं वेदात्प्रसिध्यति'

(मनु० १२/९७)

दयानन्द ने मनु के इसी मत को उद्धृत किया है।

—प्रो० चन्द्रप्रकाश आर्य, अध्यक्ष स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग पूर्वाध्यक्ष हिन्दी—संस्कृत विभाग, दयालसिंह कालेज, करनाल—१३२००१

विवाह समारोहों में बिन बुलाया मेहमान बनेगा प्रशासन

कुरुक्षेत्र, २७ फरवरी (जोशी)

जिला प्रशासन ने निर्णय लिया है कि वह जिला में होनेवाली शादियों में बिन बुलाए मेहमान बनकर चैकिंग करेंगे कि कोई बाराती अथवा लड़की के परिवार का सदस्य मदिरापान तो नहीं कर रहा।

सूत्रों ने यह भी जानकारी दी है कि जिला प्रशासन ने सभी प्रेस मालिकों को आदेश दिए हैं कि वह जो भी शादी-ब्याह का कार्ड प्रिंट करें, उसकी सूचना तुरन्त प्रशासन को दें, ताकि पता चल सके कि शादी का मण्डप कहां सजाया जारहा है।

७ मार्च को महाशिवरात्रि–बोध रात्रि के अवसर पर विशेष :-

जब आई थी शिवरात– दयानन्द संसार बदलनेवाला था

❑ **सुखदेव शास्त्री**, महोपदेशक दयानन्दमठ, रोहतक (हरयाणा)

१२ फरवरी १८२४ को गुजरात काठियाबाद के टंकारा नामक छोटे से ग्राम में श्री अम्बाशंकर जी के घर में जन्मा यह मूलशंकर बालक जब चौदह वर्ष का हुआ तो अपने शिवभक्त पिता के उत्साहित करने पर १८३७ को फागुन की महाशिवरात्रि का व्रत करने के लिए तैयार होगया। माता जी के मना करने पर भी नहीं माना, मछुकाटा नदी के किनारे पर स्थित शिवमन्दिर में अपने पिताश्री के साथ शिवरात्रि का व्रत एवं रात्रि जागरण करने के लिए पहुंच गया। मन्दिर घण्टों की आवाज से गूंज उठा, शिव की आरती उतारी जाने लगी। सबने मिलकर शिव की मूर्ति पर धूप-दीप-नैवेद्य मिष्ठान्न अर्पण किया। सूर्यास्त होने पर रात्रि का घनघोर अन्धेरा होने लगा। बजते-बजते रात के १२ बज गए। सभी शिवभक्त लोग निद्रादेवी के वश में होकर मन्दिर परिसर में शिवमूर्ति के सामने ही लुढ़कने लगे। मूलशंकर के पिताजी भी सो गए। अकेला १४ वर्षीय बालक मूलशंकर सोना पाप समझकर रात्रिभर जागकर व्रत के पालन में तत्पर रहा। जागते-जागते देखता क्या है ? शिव की मूर्ति के ऊपर रक्खी गई मिठाई को चूहे आकर खाने लगे। बालक ने देखा और सोचने लगा कि यह कैसा सर्वशक्तिमान् शिव है जो अपने ऊपर चढ़े चूहों को भी नहीं हटा सकता। बालक आश्चर्य में पड़ गया। पास में सोए हुए पिताजी को जगाकर पूछा ! पिताजी यह कैसा शिव है ? जो शिवमूर्ति को अपवित्र करते हुए इन क्षुद्र चूहों को भी नहीं हटा सकता। पिता ने बालक को समझाते हुए कहा :- यह तो शिव की मूर्ति उसकी प्रतीकमात्र है, असली शिव तो कैलाश पर्वत पर रहते हैं। बालक ने कहा :- पिताजी ! मैं तो असली शिव के दर्शन करूंगा। व्रत छोड़कर रात्रि को ही घर वापस आगया।

कौन जानता था कि शिवलिंग पर चढ़ते हुए चूहे को देखकर मूलशंकर के मस्तिष्क में एक ऐसा विचार विप्लव उठेगा कि उसे संसार का **"महर्षि दयानन्द सरस्वती"** बना देगा। उसके मन में सच्चे शिव के दर्शन करने की लगन लगी। १८४१ में बहन की मृत्यु होगई। उसे भी यह बालक आश्चर्य से देखता रहा, रोया तक भी नहीं। सभी ने इसे कठोर हृदय कहा। उसके पश्चात् १८४२ में उसके प्रिय चाचाजी की भी चेचक से मृत्यु होगई। चाचा इससे बहुत ही प्यार करते थे। इससे बालक मूलशंकर फूटफूटकर रोने लगा। इन सब घटनाओं से उसे बहुत ही दु:ख हुआ। उसे वैराग्य होने लगा। सच्चे शिव की खोज और मृत्यु पर विजय पाने की उसकी इच्छा प्रबल होगई। वह वैराग्य से उदासीन-सा रहने लगा। एक दिन अवसर पाकर १८४६ में घर-बार परिवार छोड़कर घर से भाग निकला। वन, पर्वत, जंगलों में साधु-संतों योगियों की खोज में दस वर्ष तक भ्रमण करके अनेक योग की सिद्धियां प्राप्त कीं। १८५६ में हरद्वार में कुम्भ के पर्व पर स्वामी पूर्णानन्द सरस्वती से संन्यास की दीक्षा लेकर

स्वामी दयानन्द सरस्वती के नाम से विख्यात हुए। स्वामी पूर्णानन्द ने अपने शिष्य विरजानन्द के पास जाकर दयानन्द को शिक्षा लेने के लिए कहा। किन्तु दयानन्द उस समय स्वामी विरजानन्द जी के पास नहीं पहुंचे।

इसके साथ ही १८५७ में भारतीय स्वतन्त्रता का आन्दोलन आरम्भ होगया था। इसी आन्दोलन के संचालन के लिए १८५६ में मथुरा में एक बहुत बड़ी पंचायत स्वामी विरजानन्द के नेतृत्व में इससे पूर्व ही हो चुकी थी, जिसमें देश के बड़े-बड़े स्वतन्त्रता सेनानी उपस्थित थे। स्वामी विरजानन्द जी ने ही उस पंचायत में फिरंगी अंग्रेज गोरों को देश से निकालने के लिए आह्वान करते हुए घोषणा की थी कि आजादी स्वर्ग है। पराधीन नरक है। अत: अंग्रेजों को भारत से बाहर करना चाहिए।

१८५७ में महर्षि दयानन्द ने भी स्वराज्य संग्राम का मार्ग पकड़ा। उसमें सक्रिय सहयोग दिया। अब आज की नई खोजों के अनुसार यह पूरी तरह से प्रमाणित होगया है महर्षि दयानन्द ने स्वराज्य संग्राम में भाग लिया था। मेरे पास इस समय इस विषय में अनेक ऐतिहासिक पुस्तकें हैं, जिनके लेखकों ने महर्षि के विषय में पक्के प्रमाण दिए हैं।

१८५७ में महर्षि ने नर्मदा तट के प्रदेश में जनजागृति का काम किया। उनसे तत्कालीन क्रान्तिकारी भी मिलने के लिए आते थे। जिनमें नाना साहब, श्री तात्यांटोपे, बाला साहब नाना साहब के सम्बन्धी, रंगू बापू, अजीमुल्लाखां, जगदीशपुर के जमींदार श्री कुंवरसिंह, लक्ष्मीबाई आदि-आदि सभी आजादी के बारे में विचार विमर्श करके जाते थे। उत्तरी बंगाल में नाटौर की प्रसिद्ध रानी भवानी हुई हैं। राजा गोविन्दनाथ भी महर्षि से मिले थे, उन्होंने भी महर्षि से सलाह मशविरा किया और ११०१ रुपये महर्षि को भेंट किये थे। रानी लक्ष्मीबाई झांसी व उसकी सपत्नी रानी गंगाबाई भी महर्षि से मिली थीं, उनके साथ नाना साहब भी हरद्वार में स्वामी जी से मिले थे। आशीर्वाद देकर महर्षि ने नाना साहब को ४६३५ रु० स्वदेशरक्षार्थ दिये। इनके चले जाने पर साधु समाज के सैकड़ों व्यक्ति स्वामी जी के आवास पर चण्डी पर्वत पर मिले थे। इस प्रकार से स्वतन्त्रता संग्राम की तैयारी जोरशोर से तथा गुप्तरूप से भीं जारी थी।

स्वतन्त्रता संग्राम किन्हीं विशेष कारणों से विफल होगया। इसके कारण अनेक थे। इनके लिखने का समय नहीं। शस्त्र की क्रान्ति के विफल होने के पश्चात् स्वामी पूर्णानन्द के बताए गए मार्ग पर श्री स्वामी विरजानन्द के पास महर्षि दयानन्द १५ नवम्बर १८६० में मथुरा पहुंचे। योग्य गुरु को योग्य शिष्य मिल गया। भारत की आजादी के दोनों ही संवाहक थे। विद्याध्ययन के समय साथ-साथ भारत की दुर्दशा के विषय में भी रातोंरात गुरुशिष्य में वार्तालाप होती रहती थी। ढाई-तीन वर्ष के बाद ३० मई १८६३ को गुरुवर विरजानन्द से वेदप्रचार तथा राष्ट्र के उद्धार की दीक्षा लेकर समाज सुधार के कार्यक्षेत्र में उतरे। लेकिन ऐसे समय में वे अकेले थे। कोई भी साथी न था। सभी विरोधी थे। कवि प्रकाश जी ने इस अवसर पर अपनी एक कविता में यों वर्णन किया है :-

थे न मठ मन्दिर हवेली हाट, ठाठ बाट,
सोना कहां, चांदी कहां, पैसा था न धेला था।
थे न अनुरक्त भक्त, भारी भीड़ लिए साथ,
जोगी न जमात कोई, चेली थी न चेला था।
सत्य की सिरोही से, संहारे थे असत्य मत,
सारी दुनिया के लोग, एक ओर थे प्रकाश।
एक ओर निर्भय दयानन्द अकेला था।।

सचमुच यदि ऐसे में दयानन्द न आते तो ठाकुर कवि के शब्दों में :-

वेद के भेंद कहां खुलते, यदि पुराणन की मति खोटी न होती।
तुलती गप्पों की पोल धड़ाधड़, खोटे-खरे की कसौटी न होती।
यहां हिन्दू ना हिन्दी, न हिन्द रहे था, तन पर फटी लंगोटी न होती।
ठाकुर राम के वंशज कर, गौबोटी तो होती, पर चोटी न होती।

महर्षि ने ही आकर हमें बचाया। वह भारतीय स्वतन्त्रता का प्रथम उद्घोषक था। सभी क्रान्तिकारी उससे ही प्रेरित थे।

विमल कवि के शब्दों में यों :-

वेद की ज्योति जिसने जगाई "विमल",
भक्ति सिखलाई शिव सच्चिदानन्द की।
मन्त्र स्वाधीनता का पढ़ाया प्रथम,
कुप्रथा, भिन्नता भेद की बन्द की।
नारियों को दिलाया उचित स्वत्व फिर,
की प्रगति मन्द, पाखण्ड छल छन्द की।
मन, वचन कर्म से सभी जन धारण करें,
शिक्षा उस महर्षि दयानन्द की।।

तो आओ, आज हम भी सारे मतभेद भुलाकर, आपसी ईर्ष्या-द्वेष को छोड़कर, आर्यसमाज के उद्देश्यों के अनुसार चलते हुए समाज का उद्धार कार्य करने में लगें। यही बोध हमें हो तो "बोधोरात्रि" सफल हो।

सर्वहितकारी के स्वामित्व आदि का विवरण
फार्म ४ (नियम ८ देखिए)

१.	प्रकाशन स्थान	-दयानन्दमठ, रोहतक
२.	प्रकाशन अवधि	-साप्ताहिक
३.	मुद्रक का नाम	-वेदव्रत शास्त्री
	क्या भारत का नागरिक है	-है
	पता	-दयानन्दमठ, रोहतक
४.	प्रकाशक का नाम	-वेदव्रत शास्त्री
	क्या भारत का नागरिक है	-है
	पता	-दयानन्दमठ, रोहतक
५.	सम्पादक का नाम	-वेदव्रत शास्त्री
	क्या भारत का नागरिक है	-है
	पता	-दयानन्दमठ, रोहतक
६.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत के अधिक के सांझीदार या हिस्सेदार हों।	-आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक

मैं वेदव्रत शास्त्री एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

प्रकाशक के हस्ताक्षर
वेदव्रत शास्त्री

स्वामी स्वतन्त्रानन्द स्मारक, आर्यसमाज लोहारू (भिवानी) के लिए प्राप्त दानदाताओं की सूची

क्रम	नाम	नकद	शेष
१.	स्वामी ओमानन्द सरस्वती गुरुकुल झज्जर	११११-००	
२.	श्री हीरानन्द जी आर्य पूर्व शिक्षामन्त्री हरयाणा, भिवानी	११०००-००	६०००-००
३.	श्री जोगेन्द्रसिंह जी पुत्र श्री प्रतापसिंह लालचन्द कालोनी, रोहतक	११००-००	
४.	श्री भरतसिंह जी शास्त्री कोषाध्यक्ष स्मारक, शास्त्री निवास लोहारू	११००-००	
५.	श्री प्रो० सत्यवीर जी शास्त्री, डालावास (भिवानी)	११००-००	
६.	श्री धर्मपाल जी शास्त्री, भाण्डवा (भिवानी)	११००-००	
७.	श्री मोहबतसिंह जी आर्य, आर्यनगर (भिवानी)	११००-००	
८.	श्री हरिदेव जी आचार्य, गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली	११००-००	
९.	श्री जोखीराम जी आर्य, नांगल, लोहारू (भिवानी)	११००-००	
१०.	श्री मा० हरिसिंह जी प्रभाकर गोपी (भिवानी)	११००-००	
११.	श्री उदमीराम जी आर्यनगर (कुरड़ी) हिसार	११००-००	
१२.	श्री चौ० सूबेसिंह जी, रिटायर्ड एस०डी०एम० रोहतक	११००-००	
१३.	श्री महीपालसिंह जी, रुदड़ौल (भिवानी)	११००-००	
१४.	श्री श्योदानसिंह जी, बड़ेसरा (भिवानी)	११००-००	
१५.	श्री रतनसिंह जी, किष्किन्धा (भिवानी)	११००-००	
१६.	श्री अत्तरसिंह जी क्रान्तिकारी नलवा (हिसार)	११००-००	
१७.	श्री केदारसिंह जी आर्य, आ०प्र०सभा, दयानन्दमठ, रोहतक	११००-००	
१८.	श्री जगदीशचन्द्र जी आर्य, गोपी (भिवानी)	११००-००	
१९.	श्री रामफल जी आर्य, भाण्डवा (भिवानी)	११००-००	
२०.	श्री स्वामी योगानन्द जी, आश्रम खिड़वाली, रोहतक	११००-००	
२१.	श्री ब्र० सुभाष जी शास्त्री, गुरुकुल झज्जर (रोहतक)	११००-००	
२२.	श्री ब्र० वेदपाल जी शास्त्री, गुरुकुल झज्जर (रोहतक)	११००-००	
२३.	श्री हरचन्द जी, बालावास, हिसार	११००-००	
२४.	श्री स्वामी रामानन्द जी, सुखाणा आश्रम, सूरजगढ़	११००-००	६००-००
२५.	श्री सूरतसिंह जी हरियावास (भिवानी)	११००-००	६००-००
२६.	श्री मंत्री जी आर्यसमाज बहल (भिवानी)	११००-००	८९९-००

—भरतसिंह शास्त्री,
कोषाध्यक्ष स्वामी स्वतन्त्रानन्द स्मारक
शास्त्री निवास, आर्यसमाज, लोहारू (भिवानी)

स्वामी स्वतन्त्रानन्द स्मारक, आर्यसमाज लोहारू (भिवानी) के लिए दान वचन दाताओं की सूची

क्रम	नाम	नकद
१.	ग्राम फरटिया केहर, भीमा व आर्यसमाज लोहारू	११००-००
२.	आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ रोहतक	११००-००
३.	गुरुकुल झज्जर, रोहतक	११००-००
४.	आर्यसमाज चरखी दादरी (भिवानी)	११००-००
५.	श्री गुणपालसिंह जी एडवोकेट सुप्रीमकोर्ट नई दिल्ली	११००-००
६.	श्री गुणपालसिंह जी एडवोकेट सुप्रीमकोर्ट नई दिल्ली (धनसंग्रह द्वारा)	११००-००
७.	श्री मा० होश्यारसिंह जी (सेवानिवृत्त) सतनाली, महेन्द्रगढ़	११००-००
८.	श्री मा० नन्दलाल जी बाढड़ा, भिवानी	११००-००
९.	श्री मांगेराम जी आर्य जड़वा महेन्द्रगढ़	११००-००
१०.	श्री मा० निहालसिंह (सेवानिवृत्त) बारवास, लोहारू	११००-००
११.	श्री प्रिं० बलवीरसिंह जी (सेवानिवृत्त) फतेहगढ़, भिवानी	११००-००
१२.	श्री रामावतार जी आर्य फरटिया भीमा, लोहारू	११००-००
१३.	श्री सत्यप्रकाश जी शास्त्री, समसपुर, भिवानी	११००-००
१४.	श्री बद्रीप्रसाद जी गिगणाऊ, भिवानी	११००-००
१५.	श्री कप्तान यज्ञपाल जी शास्त्री (सेवानिवृत्त) पंचगांव, भिवानी	११००-००
१६.	श्री सेठ फूलचन्द जी बहल, भिवानी	११००-००
१७.	श्री डा० धर्मपाल जी काकड़ौली हट्टी, भिवानी	११००-००
१८.	श्री पं० मातुराम जी आर्योपदेशक, रेवाड़ी	११००-००
१९.	श्री मोहनलाल जी बालावास, हिसार	११००-००
२०.	श्री मा० जयदेव जी हरपालू राजगढ़	११००-००
२१.	श्री मंगलराम जी बढ़ेड़ी (राजस्थान)	११००-००
२२.	श्री भरतसिंह जी वानप्रस्थी, आर्यनगर, भिवानी	११००-००
२३.	श्री धर्मवीर जी आर्य आर्यसमाज महेन्द्रगढ़	११००-००
२४.	श्री धर्मवीर जी शास्त्री संयोजक स्मारक, सुरहेती, लोहारू	११००-००

—भरतसिंह शास्त्री,

कोषाध्यक्ष स्वामी स्वतन्त्रानन्द स्मारक

शास्त्री निवास, आर्यसमाज, लोहारू (भिवानी)

शिवरात्रि और आर्यसमाज

❑ डॉ० महेश विद्यालंकार

पर्व हमारी सांस्कृतिक चेतना के अभिन्न अंग हैं। पर्वों से जीवन में उल्लास, उत्साह, गति, संगति चेतना एवं प्रेरणा मिलती है। परस्पर संगठन की भावना जाग्रत होती है। पर्व जीवन्त चेतना के प्रतीक हैं। भारतीय संस्कृति पर्वों से भरी-पूरी है। ऋतुओं, फसलों, महापुरुषों, धर्म-गुरुओं, तीर्थों और विशेष घटनाओं के साथ पर्वों का गहरा सम्बन्ध है। इसलिए भारतीय जनमानस पर्वों के आगमन की प्रतीक्षा में उत्सुक रहता है।

शिवरात्रि भारत का महान् पर्व है। इसका सम्बन्ध शिव जी की उपासना, व्रत एवं संकल्प से है। सभी धार्मिक आस्थावाले इसको किसी न किसी रूप में महत्त्व देते हैं। इसी दिन देवात्मा दयानन्द को आत्मबोध हुआ था। हृदय में सत्य-ज्ञान और धर्म का प्रकाश उदय हुआ था। जीवन परिवर्तन की ओर मुड़ गया था। इसलिए आर्यसमाज का शिवरात्रि के साथ विशेष एवं गहरा सम्बन्ध है। आर्यसमाज के इतिहास में यह दिन सदैव स्मरणीय एवं वन्दनीय रहेगा। यह तिथि ही आर्यसमाज के निर्माण का शुभारम्भ है। अत: आर्यसमाज के लिए यह दिन बोधोत्सव है। ज्ञान पर्व है। ज्योति और प्रकाश का महोत्सव है। जीवन परिवर्तन का अवसर है। व्रत और संकल्प का प्रभात है। निर्माण और चेतना की मंगल वेला है। इसी पुण्यतिथि पर महामानव दयानन्द के हृदय में सत्य का तूफान उठा था। सारी रात श्रद्धा, आस्था तथा निष्ठा से भरा हुआ सच्चे शिव के दर्शन के लिए एकटक लगाए हुए जागता रहा। जबकि सारा मन्दिर निद्रा की गोद में था। विचित्र घटना घटित हुई। चूहा शिव जी के नैवेद्य को निडर होकर खा रहा है। उस बालक का विश्वास, आस्था एवं श्रद्धा खण्डित हो उठी। मन नाना प्रकार के संकल्प-विकल्पों में डूब गया। अनेक प्रश्न उभरने लगे। शिवरात्रि का व्रत तोड़ दिया। यह सच्चा शिव नहीं हो सकता है ? जो एक चूहे से ही अपनी रक्षा नहीं कर पा रहा है ? वह हमारी रक्षा क्या करेगा ? स्वामी जी सच्चे शिव के दर्शन और प्राप्ति के लिए निकल पड़े। अन्तत: सच्चे शिव के दर्शन और प्राप्ति में सफल हुए। इसी मूल घटना ने मूलशंकर को महर्षि दयानन्द के नाम से इतिहास और संसार में प्रसिद्ध किया।

आर्यसमाज की रीति-नीति, पूजा-पद्धति, मान्यताएं, दर्शन, चिन्तन आदि अन्य मत-मतान्तरों व विचारधाराओं से अलग हैं। इसके मूल आधार में सत्य, धर्म, तर्क एवं बुद्धि है। इसमें अन्धविश्वास, पाखण्ड, झूठ, तन्त्र-मन्त्र, जादू-टोना एवं रूढ़िवादिता आदि नहीं है। यह तो सत्य सनातन वैदिक परम्परा का ही प्रचारक और प्रसारक रहा है। इसी कारण आर्यसमाज पंथ, मजहब, सम्प्रदाय आदि नहीं है। यह तो एक जीवन क्रान्ति है। आन्दोलन है। जीवन-पद्धति है। सुधारक चिन्तन है। इसमें किसी देवदूत, पैगम्बर और अवतार का स्थान नहीं है। इसमें एकेश्वरवाद की पूजा है। परमात्मा एक है। वह तीनों कालों में विद्यमान रहता है। वह जन्म-मरण, सुख-दु:ख आदि सांसारिक बातों से पृथक् है। उसके गुण-कर्म-स्वभाव के कारण सविता, विष्णु, रुद्र, गणेश आदि अनेक नाम हैं। जैसे व्यक्ति एक होता है वह किसी का पुत्र है, किसी का पिता है, किसी का पति है, तो किसी का भाई है। गुण-कर्म स्वभाव से उसके कई रूप हैं। ऐसे ही परमात्मा भी अनेक रूपोंवाला है। उसका एक

नाम शिव भी है। शिव का अर्थ है जो सदैव मंगल और कल्याण करता है। ये दोनों गुण उस परमात्मा मैं सदैव रहते हैं। अत: वह घट-घट व्यापी परमात्मा ही सच्चा शिव है। उसी की पूजा उपासना और साधना करनी चाहिए।

आज सत्य और इतिहास ओझल होगया है। अन्धविश्वास और रूढ़ियों की पूजा होने लगी है। धर्मग्रन्थ, पुराण एवं इतिहास साक्षी है कि प्राचीनकाल में यहां नागजाति का राज्य रहा है। नागजाति के गणपति शंकर जी थे। नागजाति शिवजी के चिह्न अपने मुकुट पर लगाती थी। नागजाति ने राष्ट्र का सर्वोच्च रक्षक शिवजी को मानकर उनके नाम के अनेक मन्दिर स्थापित किये थे। शिवजी का सम्बन्ध नागजाति से था। आज हमने नाग का अर्थ सर्प करके शिवजी के गले में सर्पों की माला पहना दी। शिवजी का लिंग अर्थात् चिह्न त्रिशूल था। नागजाति ने त्रिशूलरूपी चिह्न को अपने राज्य की ध्वजा घोषित किया था। आज भी प्रत्येक राष्ट्र की अपनी अलग-अलग ध्वजाएं हैं। हमने अर्थ का अनर्थ करके लिंग का अर्थ शिश्न लगाया जो कि तर्कसंगत नहीं है। यह इतिहास के अनुसन्धान का विषय है। आर्यसमाज ऐसे अनेक सत्य तथ्यों को सब को बताना और पहुंचाना चाहता है।

आर्यसमाज राष्ट्र, समाज, जाति और जीवन में व्याप्त अनेक बुराइयों, सामाजिक कुरीतियों, अन्धविश्वासों एवं पाखण्डों को हटाना और मिटाना चाहता है। आज मन्दिर अपने वास्तविक स्वरूप से हटते जा रहे हैं। जो स्थान धार्मिक, सात्विक, सर्वहितकारी, शान्ति, प्रेम, दया, सेवा आदि के स्थल होने चाहिएं। वहां हिंसा, लूटपाट, अधार्मिकता, लड़ाई-झगड़े आदि हो रहे हैं। अनहोनी घटनाएं हो रही हैं। मानव की प्रवृत्तियां पशुता की ओर जारही हैं। मानवीय मूल्य बड़ी तेजी से बदले और तोड़े जारहे हैं। ऐसे विकट समय में आवश्यकता है हिन्दू जाति को अपने गौरवमय इतिहास से संस्कृति आदर्श ग्रन्थों से, महापुरुषों से, इतिहास से और महान् परम्पराओं से शिक्षा तथा प्रेरणा लेनी चाहिए।

महर्षि के जीवन में शिवरात्रि की रात सत्य की खोज और जीवन परिवर्तन का कारण बनकर आई थी। इससे पूर्व कितनी शिवरात्रियां आई होंगी ? आज भी आरही हैं ? कहीं कोई परिवर्तन नजर नहीं आता है। कोई भी मूल सत्य तक नहीं पहुंच सका है। यह उस महाभाग की गहन चेतना और पकड़ का ही परिणाम है कि उसने शंकर के मूल को खोज निकाला। ऋषि महान् शिक्षक और उद्धारक थे। उन्होंने संसार के लोगों को अन्धकार से प्रकाश की ओर, मृत्यु से अमरता की ओर आने का मार्ग दिखाया। वे भारत को वैदिककालीन गौरव, आदर्श और सम्मान में देखने का स्वप्न लेकर आए थे। वे मनु के इस कथन को साकार करना चाहते थे :-

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मन:।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवा:।।

समग्र वसुधा के लोगो ! भारतभूमि की शरण में आओ। यहां से जीवन और चरित्र के लिए उन्नत शिक्षा ग्रहण करो। इसी में तुम्हारा कल्याण सम्भव है।

उस महायोगी का वेद, धर्म, संस्कृति, शिक्षा, नारी उद्धार, शुद्धि एवं राष्ट्रीय एकता आदि प्रत्येक क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण एवं स्मरणीय योगदान रहा है। उन्होंने जीवन में कभी भी गलत बातों के लिए समझौता नहीं किया था। वे सत्य के पोषक थे। सत्य मन जीवन जिया। सत्य के लिए ही हंसते-हंसते जहर पी गए। कवि के शब्दों में :-

सदियों तक इतिहास समझ न सकेगा।
तुम मानव थे या मानवता के महाकाव्य।।

(सार्वदेशिक साप्ताहिक से साभार)

☆ ☆ ☆

एक नजर में : शिवरात्रि

❑ सुनीलकुमार (मेरठवाले)

आर्यपथ अपनाने पर ही, होगा जन जग का कल्याण।
नई चेतना मुखरित होगी, गूंजेगा नव राष्ट्रगान।।

वीर राम हों या निष्कामी कृष्ण हों या महर्षि दयानन्द हों–इन सबके पास एक ही साधन था–वह आशावाद और विश्वास।

व्रत जीवन के लिए एक अहम् पहलू है। ये व्रत ही पुरुष को महापुरुष, आत्मा को महात्मा की उपाधि देता है। परन्तु व्रत कहते किसे हैं यह हमने नहीं सकझा **"व्रतमिति कर्म नाम वृणोते इति सतः"** जिसको जीवन में विशेषरूप से धारण करके उसको पूर्ण करने के लिए तप तपता, बाधाओं को सहता, जीवनपर्यन्त उस लक्ष्य को प्राप्त करने में लगा रहता है उसे व्रत कहते हैं। भूखा-प्यासा मरना व्रत नहीं है। यह तो पाखण्डियों का पाखण्ड है (पाप का टुकड़ा है)।

यह शिवरात्रि का पर्व है। शिवरात्रि ७ मार्च १९९७ की है। इससे पूर्व भी अनेकों शिवरात्रि आई और आयेंगी परन्तु व्रती हो या न हो पता नहीं परन्तु १८३७ जैसी शिवरात्रि मुश्किल से प्राप्त होती है क्योंकि इस शिवरात्रि को मूलशंकर ने द्विज बनने की ठानी थी और हुआ भी यही सच्चे शंकर को व्रती गुरु दयानन्द ने पा लिया।

स्वामी दयानन्द के बचपन का नाम मूलशंकर था। इनके पिता शैव थे। १८३७ की शिवरात्रि पर मूल को व्रत हेतु कहा गया। मूल राजी होगया। रात्रिकाल में एकत्रित होकर मन्दिर में पहुंचे। स्थानों पर बैठकर जागरण शुरू किया। अर्धरात्रि के समय लगभग सब सो गए। यहां तक कि मूल को भी निद्रादेवी सताने लगी। परन्तु शिव के दर्शनों के इच्छुक मूल ने जल्दी ही उस निद्रा का उपचार कर दिया जब भी नींद सताती तुरन्त पानी का छींटा देकर जाग जाता परन्तु वहां का नजारा ही कुछ और था। सच्चे शिव की जगह चूहे कलाबाजियां कर रहे हैं शिव की पिण्डी पर चढ़े प्रसाद को खा रहे हैं। महर्षि ने इस उत्पात को देखा और सोचा क्या यही वह शिव है जो संसार की रक्षा करता है ? नहीं, यह नहीं हो सकता। पिता को जगाकर पूछा परन्तु सन्तुष्टि न हुई। अर्धरात्रि में घर पहुंचे और विचारने लगा फिर शिव है कहां ? घर से भाग निकले अन्त में गुरु विरजानन्द जी से शिक्षा लेकर वेदज्ञान प्राप्त किया और जाना कि सच्चा शिव तो कण-कण में रमा है। इस प्रकार से मूलशंकर मूल को प्राप्त कर संसार को बदलनेवाला बना।

इस प्रकार शिवरात्रि महर्षि के बोध का कारण बना। आज भी ऋषि की यशोगाथा दशों दिशाओं में गुंजायमान होरही है। महर्षि के उपकारों को देखो :-

दया के सागर दयानन्द थे।
मानवता के मान दयानन्द थे।
पिया जहर अमृत पिलाते दयानन्द थे।
डूबते विश्व को तरानेवाले दयानन्द थे।

हम कहां तक उनकी जीवनदायिनी दया के आनन्द की बात करें। हम सब भी शिवरात्रि मनायेंगे।

शिवरात्रि की रात भारतवासियों के लिए सौभाग्य की रात थी। इस रात्रि के प्रभाव से एक दीपक जला और इससे इतना प्रकाश हुआ कि सूर्य भी चौंधियांसा गया और सारे संसार के अन्धकार और दुःख के नाश करने का कारण बना।

हिन्दू लोग तो इसे पवित्र मानते हैं परन्तु उन सबके तथा उन लोगों के लिए भी जो स्वामी जी को अपना शिक्षक मानते हैं यह आवश्यक है कि इस रात्रि को ऋषि सिद्धान्तों पर विचार करें। सत्य और

ईश्वर में आस्था, पक्षपातरहित होकर आत्मा को बलवान् बनायें और अन्धविश्वास और असामयिकी लहरों से बचें। इस दिन प्रत्येक आर्य को शान्तभाव से आत्मनिरीक्षण करके अपनी त्रुटियों को दूर करने और आर्यसमाज की उन्नति हेतु कार्य करें।

वेद धर्म की साक्षात् प्रतिमूर्ति दयानन्द थे। इन्हीं के लिए पूर्व राष्ट्रपति श्री सर्वपल्ली डा० राधाकृष्णन श्रद्धांजलि देते हुए कहते हैं :- **"जब देश पर संकट के बादल छाये हुए हों तब हमें शत्रु की चुनौती को स्वीकार करके उस शिक्षा को याद करना है जो स्वामी दयानन्द ने हमें दी।"** स्वामी दयानन्द एक महान् सुधारक और प्रखर क्रान्तिवादी महापुरुष तो थे ही साथ ही उनके हृदय में सामाजिक अन्यायों को उखाड़ फेंकने की प्रचण्ड अग्नि भी विद्यमान थी।

आज हमारे समाज में बहुतसी विभेदकारी बातें विद्यमान हैं। हम अपनी भूल (फूट) के कारण ही अतीत से पराधीनता के पास में जकड़े गये। हमारी आपसी मतभेद नीति ही हमारे पतन का कारण बनी। हमें पूर्वकाल की भूलों से शिक्षा लेकर भविष्य उज्ज्वल और गौरवशाली बनाना चाहिए और आज की परिस्थिति में केवल महर्षि दयानन्द का मार्ग ही सर्वोपरि है। अत: दयानन्द के सिपाहियो ! भारतमाता की पुकार सुनो।

ऋषि ने समाज को किस उद्देश्य हेतु लगाया था वह उद्देश्य पूरा नहीं हुआ। दयानन्द की मानसिक सन्तानो जागो और धार्मिक सामाजिक उत्थान करो। इसके बिना हमारा उत्थान नहीं है। महर्षि के दूरदृष्टि ने इसे देखा था। उन्होंने कहा कि **"जब तक देश और समाज के लोगों का एक धर्म, एक भाषा, एक हानि-लाभ और सुख-दु:ख की समान अनुभूति नहीं होती तब तक समाज की उन्नति और उसका फल भलीभांति सिद्ध नहीं हो सकता।"**

ऋषि ने हमें एक पैगाम दिया था **"वेदों की ओर आओ"** क्योंकि वेद ईश्वरीय वाणी है इसका उपदेश सबके लिए है। यह प्रत्येक कुरीति से लड़ने में समर्थ है आज दुबारा से वही मूर्तिपूजा, अत्याचार, अनाचार, पीर-पैगम्बरपूजा, जन्मना जात-पांत, छुआछूत, ज्ञानरहित, अन्धविश्वास आदि का चारों तरफ बोलबाला होगया है। आर्यमन्दिरों में भी पदलिप्सा के लिए झगड़े दयानन्द सिद्धान्तवादिता का लोप करने में तत्पर हैं।

अत: पदलिप्सा के लोभी लोगों का इस शिवरात्रि पर्व पर अपना तथा आर्यसमाजों का उद्धार करने हेतु व्रत लेना चाहिए। मैं भी आर्यसमाज में पुरोहित हूं। मैं भी इन झगड़ों से अभी परिचित हुआ हूं। अत: इस पावन पर्व पर लड़ाई-झगड़ों को छोड़कर वैदिक धर्म की पताका हाथ में लेकर मैदान में कूद पड़े और हम कह सकेंगे :-

"वेदों का डंका आलम में बजवा दिया ऋषि दयानन्द ने"
"जो जागत हैं सो पावत हैं"
"कबीरा मन जब निर्मल भया जैसे गंगा नीर"

इत्यादि प्रकार से हमें पावन पर्व शिवरात्रि पर आपसी मतभेदों को भुलाकर एकजुट होकर वेद का प्रचार करें। तभी हम सच्चे अर्थों में आर्य बन पायेंगे।

ऋषि की प्रशस्ति में श्रीमती सावित्रीदेवी की एक ओजपूर्ण कविता की पंक्तियां द्रष्टव्य हैं :-

हुआ चमत्कृत विश्व, अरे यह कौन ? वीरवर संन्यासी ?
जिसकी भीषण हुंकारों से, कांप उठी मथुरा काशी ?
यह किसका गर्जन तर्जन है, कौन उगलता प्याला है ?
किसकी वाणी में से निकली आज धधकती ज्वाला है ?

जनता तो आर्यसमाज की ओर बड़ी उत्सुकता के साथ टकटकी लगाये देख रही है। परन्तु खेद है कि हम अपनी सफलता के मद में अपना कर्त्तव्य भूल गये। ठीक कहा है :-

जमाना बड़े शौक से सुन रहा था दास्तां तेरी।
अफसोस, हम ही सो गये सुनाते-सुनाते।।

आओ बन्धुओ ! ऋषि का सन्देश घर-घर पहुंचे। यही समय की पुकार है और इस वर्ष यही कल्याणकारिणी शिवरात्रि का दिव्य शुभ सन्देश है।

ओ३म् शम्।

महर्षि दयानन्द सरस्वती बोध दिवस

❑ पं० नन्दलाल निर्भय भजनोपदेशक, ग्राम व पोस्ट बहीन, जिला फरीदाबाद (हरयाणा)

जग उद्धारक ऋषि दयानन्द का, बोध दिवस फिर आया है।
उस पतित पावन देव पुरुष का, दुनिया ने यश गाया है।

बालकपन में शिव मन्दिर में, देखा एक अजब नजारा था।
प्रसाद मूषकों ने शिव का, मन्दिर में खाया सारा था।
यह कैसा शिव है ? बाल मूलशंकर ने यही विचारा था।
पूछा था प्रश्न पिताजी से, वह प्रश्न जगत् से न्यारा था।

शिव के दैत्यों का संहारक, सब ऋषियों ने बतलाया है।
उस पतित पावन देव पुरुष का, दुनिया ने यश गाया है।

जब पिता न उत्तर दे पाए, तो बोले पुन: मूलशंकर।
वह सच्चा शिव है और पिताजी ! कहलाता है जगदीश्वर।
"मैं उसके दर्शन पाऊंगा" यह बात आज ली दिल में धर।
आज्ञा दे दो मुझे पिता जी ! जाऊंगा अब अपने घर।

घर आया, अपनी माता जी से भोजन लेकर खाया है।
उस पतित पावन देव पुरुष का, दुनिया ने यश गाया है।

निज मात-पिता का मोह त्याग, संन्यासी का बाना धारा।
सच्चे शिव की जिज्ञासा ले, वन-वन घूमा मारा-मारा।
गुरु विरजानन्द की कुटिया पर, जाकर बोला स्वामी प्यारा।
हे गुरुदेव अब दया करो, अज्ञान दूर कर दो सारा।

गुरु विरजानन्द ने बड़े प्यार से, प्यारा शिष्य पढ़ाया है।
उस पतित पावन देव पुरुष का, दुनिया ने यश गाया है।

वेदों का पावन ज्ञान प्राप्त कर, वेदों का प्रचार किया।
पाखण्ड दुर्ग सब ढाए थे, विद्या का था विस्तार किया।
नारी को पूज्य बताया था, गोमाता का सत्कार किया।
शूद्रों को इज्जत दिलवाई, दु:खियों का बेड़ा पार किया।

"सत्यार्थप्रकाश" रचा सुन्दर, जग देख जिसे चकराया है।
उस पतित पावन देव पुरुष का, दुनिया ने यश गाया है।

अब उग्रवाद, आतंकवाद की, आंधी जग में आई है।
इस भौतिकता की चकाचौंध से, यह दुनिया बौराई है।
अब मत-मतान्तर पनप गए, पोंगापंथी बढ़ गए यहां।
अब वेदविरोधी पाखण्डी जन, सिर पर हैं चढ़ गए यहां।

अब ईसा और मोहम्मद के, पोतों ने शोर मचाया है।
उस पतित पावन देव पुरुष का, दुनिया ने यश गाया है।

ऋषि बोध दिवस पर प्रण करो, ऋषि दयानन्द के दीवानो।
हे आर्यवीरो ! होश करो, अपना हित-अनहित पहचानो।
अब मिटता यह संसार बचाओ, कदम बढ़ाओ मर्दानो।
तुम करो वेद प्रचार जगत् में, सीख गुरुवर की मानो।

अब "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्", का क्यों लक्षण भुलाया है।
उस पतित पावन देव पुरुष का, दुनिया ने यश गाया है।

☆ ☆ ☆

उड़ीसा के अकाल पीड़ितों की सहायता करें

जैसा कि आपकी सेवा में पहले भी निवेदन किया जा चुका है कि उड़ीसा के कई जिलों में भयंकर सूखा पड़ा है इससे निर्धन असहाय लोग छटपटाकर मर रहे हैं। अनेक स्थानों पर अभी से कुंओं में पानी सूख गया है और पानी कम पड़ गया है। ऐसी आपत्ति में आर्यसमाज सदा से दुःखी लोगों की सहायता करता आरहा है। अतः इस बार भी उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से विभिन्न सहायता केन्द्र खोले जारहे हैं, जहां नये पुराने कपड़े और चावल दीन-दुखियों को दिये जारहे हैं। सभा का लक्ष्य १००, १५० गांव के ५००, ६०० लोगों को प्रतिमास १०-१० किलो चावल देने का है, इस पर लगभग ४०००० हजार रुपये प्रतिमास खर्च आयेगा। अब तक लगभग ५०००० हजार रुपये का अन्न एवं वस्त्र बांट दिया गया है, हमारी प्रार्थना पर अनेक उदारमना आर्यसमाज के अधिकारियों तथा अनेक सज्जनों ने सहायता भेजी है, परन्तु यह कार्य बहुत विस्तृत और व्यय साध्य है, अतः देशभक्त धर्मप्रेमी बन्धुओं से आग्रह है कि अधिक से अधिक सहायता देकर दीन-दुखियों के प्राण बचाने में सहयोग करें। यदि हम इधर ध्यान नहीं देंगे तो विदेशी मिश्नरी इसका लाभ उठाकर ऐसे दुःखी लोगों को अपने जाल में फंसायेंगे। अतः हमारा अनुरोध है जिसका जैसा सामर्थ्य है अपनी सात्विक कमाई की सहायता अवश्य भेजें। सहायता का चैक या ड्राफ्ट उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा स्टैट बैंक या सैन्ट्रल बैंक खरियार रोड के पते पर भेजें। यदि आयकर छूट का प्रमाणपत्र आवश्यक हो तो गुरुकुल आश्रम आमसेना के नाम से चैक या ड्राफ्ट भेजें। गुरुकुल को आयकर छूट का प्रमाणपत्र प्राप्त है।

निवेदक :-

विशीकेसन शास्त्री
मंत्री
उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा

धर्मानन्द सरस्वती
प्रधान
उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा

नारदजी खबर लाए हैं

व्यंग्य

एक बार नारद जी जब स्वर्ग में बैठे हुए थे तो आर्यसमाज के विषय में कुछ स्वर्ग स्थित आत्माओं से प्रशंसा सुनकर अत्यन्त आह्लादित हुए। एक सज्जन ने बताया कि कोर्ट में यदि कोई आर्यसमाजी साक्षी दे देता है तो न्यायाधीश उसी की बातों को मानकर निर्णय दे देता है, क्योंकि आर्यसमाज के सदस्य अपना सर्वस्व दे सकते हैं, परन्तु छलकपट का व्यवहार नहीं करते और झूठ नहीं बोलते, दूसरी आत्मा ने इसे आगे बढ़ाते कहा मैं विदेश की एक घटना सुनाता हूं। एक बार मारीशस के आर्यसमाज के एक अन्तरंग सदस्य को ताश खेलता हुआ पकड़ा गया तो उसको तुरन्त आर्यसमाज से अलग कर दिया गया। इस निष्कासन से वह सदस्य अत्यन्त दु:खित हुआ। अपने दोष की क्षमा मांगते हुए कहा कि मुझे जो भी दण्ड दोगे मैं स्वीकार करूंगा परन्तु मुझे आर्यसमाज से मत निकालो अन्यथा मैं मर जाऊंगा। उस सदस्य की करुणापूर्ण प्रार्थना पर आर्यसमाज के मन्त्री ने सबसे परामर्श करके उस सदस्य को दूसरा दण्ड सुनाया कि ताश के ५२ पत्तों की माला बनाकर गले में पहनकर सब आर्यसमाजियों के घर से भिक्षा मांगो और उस भिक्षा का भोजन बनाकर सबको खिलाओ, इस दण्ड को उस सदस्य ने सहर्ष स्वीकार कर वैसा ही किया। जब इस दृश्य को एक पादरी ने देखा तो वह आश्चर्यचकित होकर कहने लगा आर्यसमाज ऐसी पवित्र संस्था है। इस प्रकार की कई बातें सुनकर नारद जी बड़े प्रभावित हुए और विचार किया कि मैं मृत्युलोक जाकर ऐसी संस्था के सदस्यों के दर्शन अवश्य करूंगा। इसी बीच बिहार के चारा घोटाले आदि के महानायक लालूप्रसाद आदि के कृत्यों की जानकारी लेने के लिए नारद जी की बिहार जाने की इच्छा प्रबल हुई। वे सीधे पटना पहुंचे। जब बिहार के राजनेताओं के करतूतों से नारद जी का मन भारी हो गया तो उन्होंने सोचा चलो कुछ अच्छे लोगों के पास जाकर मन को शान्त करें। तभी उनको आर्यसमाज को जानने की उत्कण्ठा होगई तो वे पटना के कार्यालयों से निकलकर आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के पटना स्थित कार्यालय की ओर चल पड़े। रास्ते में सोच रहे थे, वहां बड़ी चहल-पहल होगी, दान-पुण्य चल रहा होगा, वेदमन्त्र बोले जारहे होंगे। मर्त्यलोक में भी एक स्थान पर तो स्वर्ग का दृश्य देखने को मिलेगा। इसी विचार में मग्न होकर चल रहे नारद जी को सामने बिहार प्रतिनिधि सभा का कार्यालय दिखा। वहां का दृश्य देखकर तो एक बार वे भी सहम गये, दो-चार लठैत बाहर घूम रहे थे, कई कमरों में ताले पड़े हुए थे, एक कमरे में दो तीन आदमी मुंह लटकाये बैठे थे, नारद जी आर्यसमाज के एक उपदेशक का रूप धारण कर वहां पहुंच गये और बड़ी श्रद्धा से सबको नमस्ते किया और पूछा मंत्री जी, प्रधान जी कहां है मैं उनके दर्शन करना चाहता हूं। यह सुनकर वहां उपस्थित सज्जन अन्दर-अन्दर हंसते हुए कुछ देर चुप रहे। फिर कहा पंडित जी आपको यहां की स्थिति का पता नहीं। प्रधान जी डरते-डरते शाम को कभी-कभी किराया भाड़ा लेने आते हैं। इस प्रान्त के पंजीयक (रजिस्ट्रार) ने उनसे आय-व्यय आदि का सारा हिसाब पूछा, रिकार्ड मांगा तो इन्होंने देने से मना किया। नारद जी ने पूछा आर्यसमाज जैसी पवित्र संस्था के सदस्यों का हिसाब देखने की रजिस्ट्रार को क्या जरूरत थी और यदि मांग लिया तो शास्त्री जी को अपनी पवित्रता प्रकट कर देनी चाहिए थी, इस पर एक सदस्य ने कहा महाराज आप कौनसे

युग की बात कर रहे हैं, यह युग तो घोटालों और घपलों का है जो जितने घोटाले और घपले करेगा वह उतना ही बड़ा है। हमारे प्रधान जी भी नेता जी हैं, आगे आप समझ लें। नारद जी ने आगे बात बढ़ाते हुए पूछा फिर क्या हुआ तो एक सदस्य ने बाहर बात न खोलने की शर्त पर बताया कि रजिस्ट्रार ने सभा की मान्यता रद्द कर दी है और प्रधान के विरुद्ध मुकद्दमा कर दिया। उनको ले देकर अस्थायी जमानत मिली है। देखो यह बात बाहर नहीं कहना। अब नारद जी वहां और अधिक नहीं ठहर सके, उन्होंने सोचा किसी आर्यसमाज को भी देखा जाये, अगले दिन प्रातःकाल आर्यसमाज मणिपुर में पहुंच गये, वहां साप्ताहिक सत्संग में एक भव्य संन्यासी का वेदोपदेश होरहा था। यह देखकर नारद जी भी पण्डित वेश में सुनने पीछे बैठ गये, इस पर मन्त्री जी ने एक नये पण्ड़ित को देखकर आग्रहपूर्वक स्टेज पर बैठा दिया, कार्यक्रम की समाप्ति पर नारद जी ने स्वामी जी से अलग बैठकर कुछ चर्चा करने का आग्रह किया। महात्मा जी सहर्ष उन्हें अलग ले गये तो नारद जी ने आर्यसमाज के सात्विक रूप और सभा के कार्यालय की घटनाओं को सामने रखकर पूछा मैंने सुना क्या और देख क्या रहा हूं। इस पर स्वामी जी ने कहा आपने जो सुना है आर्यसमाज का वास्तविक रूप तो वही है परन्तु अब दुर्भाग्यवश कुछ स्वार्थी राजनैतिक लोग इस संगठन में भी प्रविष्ट होगये हैं, जो पहले अपना नकली रूप दिखाकर आर्यसमाज में आ जाते हैं और फिर छलकपट साम-दाम से संस्थाओं पर अधिकार करके उन्हें अपने स्वार्थ में उपयोग करते हैं। दुर्भाग्यवश केन्द्रीय संगठन में भी ऐसे लोग आगये हैं, उन्होंने सारी नैतिकता तथा सदाचार को ताक पर रख दिया। पैसे और पद को ही सब कुछ मान लिया। अब कुछ साधु-महात्मा उत्साह करके सामने आये हैं, वे संघर्ष कर रहे हैं। आशा है स्थिति शीघ्र ठीक हो जायेगी। भूपनारायण ने सामान्य शिष्टाचार का भी ध्यान नहीं रखा, क्योंकि जब किसी अधिकारी के नाम से केस हो जाता है तो नैतिकता के आधार पर उसे त्यागपत्र दे देना चाहिए। कांग्रेस जैसी भ्रष्ट पार्टी के नेता इतना तो कर रहे हैं परन्तु हमारे इन तथाकथित अधिकारियों ने सारी परम्पराओं को भी नष्ट कर दिया है। अब तो पके घाव की गन्ध की तरह से इस गन्दगी को जबरदस्ती काटकर फैंकना होगा, अन्त में स्वामी जी ने कहा दुःख यही है कि श्रद्धालु और अच्छे आर्यसमाजी भी सच और झूठ को नहीं समझ रहे, वे साहूकार और चोर को एक तराजू में तोल रहे हैं। इन महात्माओं का भी यही दोष है कि अपनी सच्चाई को लोगों के सामने प्रकट करने के लिए नहीं पहुंच पारहे। परन्तु ये लोग जुटे हुए हैं, भगवान् एक दिन अवश्य न्याय करेगा। यह सब बात सुनकर नारद जी का सिर भारी होगया अतः अति आग्रह करने पर भी वे नहीं रुके और बाहर निकलकर भीड़ में विलीन होगये।

—घुमक्कड़

वैदिक साधना आश्रम, गोरड़ जिला सोनीपत (हरयाणा)

आपको यह जानकर अति प्रसन्नता होगी कि वैदिक साधना आश्रम, गोरड़ का ११वां वार्षिकोत्सव १४, १५ और १६ मार्च, १९९७ को बड़ी धूमधाम से मनाया जारहा है, जिसमें आर्यसमाज के उपदेशक तथा भजनोपदेशक पधार रहे हैं। स्वामी यज्ञानन्द जी सरस्वती, श्री रामनिवास जी तथा अन्य संन्यासीगण पधार रहे हैं। १२ मार्च से १६ मार्च तक अथर्ववेद पारायण यज्ञ प्रारम्भ होरहा है, जिसमें आप सभी सादर आमन्त्रित हैं। उत्सव में पहुंचकर धर्मलाभ उठाएं।

—स्वामी ध्रुवानन्द

सर्वहितकारी ७ मार्च, १९९७
रजि० नं० P/RTK-४९

प्रेषक :-
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन
दयानन्दमठ, रोहतक

सेवा में :-

685 पुस्तकालयाध्यक्ष गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय हरिद्वार
(सहारनपुर उ. प्र.)

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ रजि० नं० P/RTK—४६ फोन :- ४०७२२

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री सहसम्पादक :- डा० सुदर्शनदेव आचार्य

वर्ष २४ अंक १६ ७ अप्रैल १९९७ वार्षिक शुल्क ५०) आजीवन शुल्क ५०१)

आर्यसमाज स्थापना विशेषांक
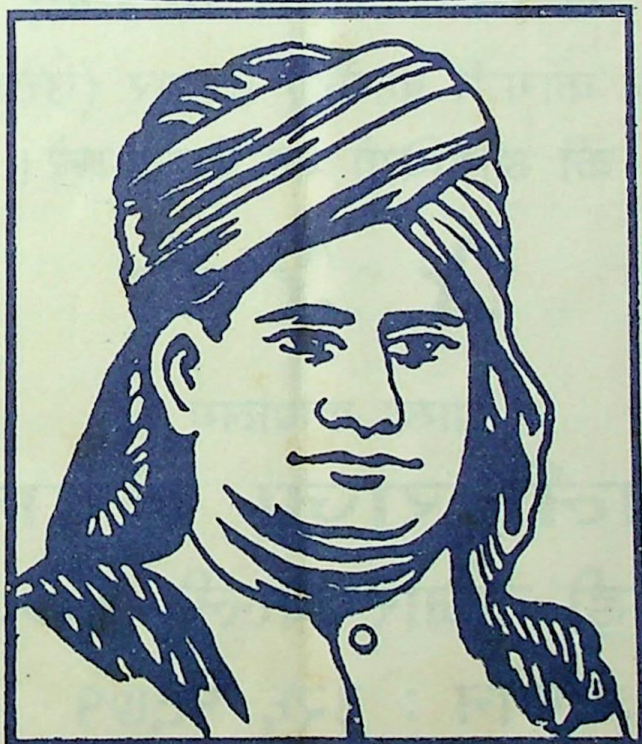
आर्यसमाज स्थापना : चैत्र शुक्ला ५ शनिवार, स० १९३२ वि०
(१० अप्रैल १८७५ मुम्बई)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ४६८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक से प्रकाशित।

आर्यसमाज स्थापना दिवस

महर्षि दयानन्द का सन्देश

आर्यो !

जब मैं सत्य शिव के दर्शन की लालसा से योगविद्या की शिक्षा के लिए जोशीमठ के शंकराचार्य से मिला तब उन्होंने मुझे अपने गुरुवर स्वामी पूर्णानिन्द सरस्वती के पास जाकर विद्याध्ययन की सम्मति दी थी। मैं जब १८५५ ई० में उनके पास विद्याध्ययन की अभिलाषा लेकर गया तब वे लगभग १०८ वर्ष की आयु में मौन रहते थे। उन्होंने मुझे लिखकर बतलाया था कि मेरे शिष्य विरजानन्द मथुरा में रहते हैं। तुम उनके पास जाओ और विद्याध्ययन करो। उन दिनों भारतमाता ब्रिटिश शासन की पराधीनता की शृंखलाओं में जकड़ी हुई थी। १८५७ के स्वतन्त्रता के संग्राम की तैयारियां होरही थी अत: मैं मथुरा न जाकर स्वतन्त्रता आन्दोलन के लिए समस्त भारत का भ्रमण करता रहा। जब यह आन्दोलन विफल होगया तब मैंने उस आन्दोलन के मुखिया नाना साहेब आदि को धार्मिक क्रान्ति का परामर्श दिया था। धार्मिक क्रान्ति से स्वतन्त्रता-प्राप्ति के लिए अपने भक्तजनों की प्रार्थना पर चैत्र शुक्ला पंचमी १९३२ वि० (१० अप्रैल १८७५ ई०) में भारत की महानगरी मुम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की थी। तत्पश्चात् समस्त भारतवर्ष में धीरे-धीरे आर्यसमाजों का जाल बिछ गया। नारायण स्वामी आदि आर्यो ने प्रतिनिधि सभा तथा सार्वदेशिक सभा बनाकर आर्यसमाज के संगठन को सुदृढ़ बना दिया। विदेशों में भी आर्यसमाज स्थापित होगये।

मेरे शिष्य श्रद्धानन्द ने मेरे सत्यार्थप्रकाश और संस्कारविधि ग्रन्थ में गुरुकुल की रूपरेखा देखकर कांगड़ी नामक स्थान में गुरुकुल खोल दिया। उन्होंने अन्य स्थानों पर भी शाखा-गुरुकुल खोलकर मेरी आर्ष शिक्षा पद्धति का प्रचार-प्रसार किया। इससे आर्यसमाज को बहुत बल मिला। शिक्षा जगत् में एक नई क्रान्ति आई किन्तु कुछ आर्यो ने मेरे ही नाम पर विद्यालय तथा महाविद्यालय खोलकर लार्ड मैकाले द्वारा प्रतिपादित पाठविधि को समृद्ध बनाया। उनमें सहशिक्षा भी चलाई यह अच्छा नहीं। यदि अब आर्य आर्ष शिक्षा पद्धति से भारत में एक आर्य विश्वविद्यालय के अधीन अपने बालक-बालिकाओं की शिक्षा की व्यवस्था करते तो आज भारतवर्ष का रंग कुछ और ही होता।

आर्य बहन-भाई आर्यसमाज के माध्यम से धार्मिक क्रान्ति के साथ-साथ भारतमाता की स्वतन्त्रता के लिए भी संघर्ष करते रहे। कितने ही मेरे विद्यापुत्र भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, लाजपतराय आदि तो बलिदान ही होगये। उनके बलिदानस्वरूप १९४७ में भारतमाता की परतन्त्रता की बेड़ी कट गई। लगभग ९० वर्ष के इस स्वतन्त्रता आन्दोलन में ८० प्रतिशत आर्य बहिन-भाई ही सिपाही थे।

२० प्रतिशत अन्य कांग्रेसी आदि थे। ८० प्रतिशत आर्य २० प्रतिशत के आधिपत्य में आगये। कांग्रेस दल के नेताओं ने भारतवर्ष का शासन संभाल लिया। आर्य लोग कांग्रेस आदि दलों में घुस गये। अपना अस्तित्व आर्यसमाज मन्दिरों, वैदिक उपासना पद्धति तथा वेदप्रचार कार्य तक सीमित रख लिया। **"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"** आर्य चक्रवती राज्य की वेदाज्ञा को भूल गये। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि आज आपके सामने अनेक अनार्य समस्यायें खड़ी हैं। अत: कभी आपको सत्यार्थप्रकाश के लिए सत्याग्रह करना पड़ता है, कभी गोरक्षा आन्दोलन तथा कभी आर्यभाषा हिन्दीरक्षा आन्दोलन का बिगुल बजाना पड़ता है। कभी बूचड़खाना तुड़वाने के लिए दुन्दुभी बजानी पड़ती है। कभी शराबबन्दी के लिए घोर संघर्ष तथा बलिदान तक देना पड़ रहा है।

आर्यो ! इस प्रकार से ये राष्ट्रीय समस्यायें कभी समाप्त नहीं होंगी। आप लोगों के पास जितनी वर्तमान शक्ति है उसे लेकर चलो आपस में लड़ना-झगड़ना बन्द करदो। एक धर्मार्य सभा बनाकर समस्त भारतवर्ष में वैदिकधर्म के प्रचार की उच्चकोटि की व्यवस्था करो। एक विद्यार्य सभा बनाकर एक आर्य विश्वविद्यालय के अधीन उत्तम शिक्षा का प्रबन्ध करो। एक राजार्य सभा बनाकर वर्तमान राजव्यवस्था का सुधार करो और धीरे-धीरे प्रथम भारत में आर्यराज्य के महान् लक्ष्य की ओर बढ़ते रहो। समस्त विश्व को आर्य (श्रेष्ठ) बनाओ। संसार का उपकार करो। आर्यसमाज स्थापना दिवस पर तुम्हें मेरा यही सन्देश है। **द्वारा–सुदर्शनदेव आचार्य**

सह–सम्पादक सर्वहितकारी

सप्तम मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार-१९९७

आर्यसमाज सान्ताक्रुज द्वारा संचालित सप्तम मेघजी भाई आर्य साहित्य पुरस्कार के लिए प्रविष्टियां आमन्त्रित की जाती हैं। यह पुरस्कार मस्कत निवासी श्री मेघजी भाई नैनसी की स्मृति में उनके सुपुत्र श्री कनकसिंह मेघजी भाई के आर्थिक सहयोग से प्रारम्भ किया गया था। पुरस्कार समारोह प्रतिवर्ष जुलाई माह के प्रथम सप्ताह में मनाया जाता है।

उद्देश्य :- आर्य साहित्य के लेखकों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से इस पुरस्कार का प्रारम्भ किया गया है। जिन लेखकों ने आर्यसमाज की सेवा अधिकतम साहित्य लिखकर की है उन्हें इस पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा।

पुरस्कार :- पुरस्कार प्राप्त लेखक को रुपये १५,००१/- की राशि, रजत ट्राफी व शाल से सम्मानित किया जाएगा।

नियम :- १. जिस आर्यविद्वान् ने जीवनपर्यन्त वैदिक साहित्य के द्वारा आर्यसमाज की अधिकतम सेवा की हो।

२. जिनके प्रकाशित ग्रन्थों का सम्बन्ध आर्यसमाज के दर्शन, इतिहास, सिद्धान्त अथवा आर्यमहापुरुषों के जीवन आदि से है, वे ही पुरस्कार की सीमा में माने जायेंगे।

३. ग्रन्थ लेखक को अपनी समस्त रचनाओं की दो-दो प्रतियां आर्यसमाज सान्ताक्रुज (प०) मुम्बई को भेजनी होंगी।

४. लेखक का चयन एक समिति करेगी जिसका मनोनयन आर्यसमाज सान्ताक्रुज करेगा। आर्यसमाज सान्ताक्रुज की अन्तरंग सभा का निर्णय अन्तिम निर्णय माना जाएगा।

५. इस पुरस्कार हेतु लेखक अपने ग्रन्थों की दो-दो प्रतिलिपि संयोजक आर्य साहित्य पुरस्कार आर्यसमाज सान्ताक्रुज मुम्बई-५४ को ३० अप्रैल १९९७ तक भेजने की कृपा करें। जिन विद्वानों लेखकों ने पूर्व में अपने साहित्य की प्रतियां भेज दी हैं, उन्हें पुन: भेजने की आवश्यकता नहीं है। **–कैप्टेन देवरत्न आर्य**

संयोजक :- पुरस्कार समिति एवं

प्रधान आर्यसमाज सान्ताक्रुज मुम्बई

आर्यसमाज का प्रादुर्भाव

❑ प्रा० भद्रसेन, बी-२, ६२/७बी शालीमारनगर, होशियारपुर

आर्यसमाज की स्थापना १८७५ में महर्षि दयानन्द ने भारत की महानगरी मुम्बई में की थी। महर्षि का बचपन का नाम मूलशंकर था। इक्कीस वर्षीय मूल सच्चे शिव की खोज और मृत्यु-विजय के लिए घर से निकले थे। दोनों लक्ष्यों की सिद्धि करानेवाले गुरु की प्राप्ति के लिए लगातार चौदह वर्ष मूल से शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी और फिर दयानन्द संन्यासी बनकर यत्र-तत्र गए। अन्त में ब्रह्मर्षि गुरु विरजानन्द जी दण्डी के यहां मथुरा में पहुंचे। विदा की वेला में गुरु ने दयानन्द संन्यासी के जीवन का कांटा ही बदल दिया।

ब्रह्मर्षि गुरु विरजानन्द जी की आज्ञा के अनुरूप आर्षज्ञान का प्रदीप लेकर जनता के अज्ञान, अन्धविश्वास को दूर करने के लिए महर्षि दयानन्द ने प्रचार का कार्य प्रारम्भ किया। आगरा से कार्य का आरम्भ करके भारत के सैकड़ों नगरों में प्रचारयात्रा की थी। आर्षज्ञान की ज्योति को सतत प्रज्वलित रखने के लिए यह ज्योति जिस जनता के लिए थी, उसको इसमें सम्मिलित करने का निर्णय लिया। अत एव इसको लोकतन्त्रात्मक संगठन का रूप दिया और इसका नाम आर्यसमाज रखा।

आर्यसमाज का साध्य :- आर्यसमाज कोई धर्म नहीं है, अपितु प्रचारात्मक धार्मिक संगठन है, क्योंकि धर्म तो वस्तुतः वैदिक ही है। तभी तो महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास में लिखा है : "(पूर्वपक्ष) तुम्हारा मत क्या है ? (उत्तर०) वेद अर्थात् जो-जो वेद में करने और छोड़ने की शिक्षा की है, उस-उस का हम यथावत् करना छोड़ना मानते हैं। जिसलिए वेद हमको मान्य है, इसलिए हमारा मत वेद है। ऐसा ही सब मनुष्यों को विशेष आर्यों को एकमत्य होकर रहना चाहिए।"

महर्षि ने अपने "स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश" में इस चर्चा को और भी अधिक स्पष्ट करते हुए लिखा है कि "जो वेदादि सत्यशास्त्र और ब्रह्मा से लेकर जैमिनि मुनि पर्यन्तों के माने हुए ईश्वरादि पदार्थ हैं, जिनको मैं भी मानता हूं, सब सज्जन महाशयों के सामने प्रकाशित करता हूं। मैं अपना मन्तव्य उसी को जानता हूं, जो तीन काल में सबको एकसा मानने योग्य है।

मेरा कोई नवीन कल्पना व मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है। किन्तु जो सत्य है उसको मानना, मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझको अभीष्ट है।"

हां, इन सन्दर्भों से स्वतः स्पष्ट हो जाता है कि आर्यसमाज एक प्रचारात्मक धार्मिक संगठन है और वह जिस धर्म का प्रचार करता है, वह वैदिक धर्म है। आर्यसमाज के प्रचार का उद्देश्य, अभिप्रेत्य स्पष्ट हो जाने पर आइए, प्रिय पाठको ! अब इसके नाम पर कुछ विचार करें।

आर्यसमाज नाम विचार :- महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने विशाल स्वाध्याय, विचारविमर्श और पर्याप्त वर्षों के प्रचारानुभव के आधार पर प्रत्येक पहलू से सोचकर संगठन को आर्यसमाज नाम दिया जो कि प्रत्येक प्रकार से सार्थक और उपयुक्त है, क्योंकि यह शब्द जहां उच्चारण में सरल, श्रवण में सरस मधुर आकर्षक और स्पष्ट अर्थवाला है, वहां यह नाम संस्था के लक्ष्य, कार्य प्रक्रिया, साधन आदि का भी संकेत करता है। आर्यसमाज शब्द आर्य और

समाज का समस्त रूप है। अतः आर्यों का समाज संगठन, समझदारोंवाला समूह तथा जो समूह आर्य है। इस विग्रह से आर्य शब्द विशेषरूप से विचार्य सिद्ध होता है। अतः प्रिय पाठको ! आइए, पहले आर्य शब्द पर विचार करते हैं।

आर्य शब्द जहां उच्चारण में सरल, श्रवण में सरस मधुर आकर्षक और स्पष्ट अर्थवाला है, वहां यह आर्य शब्द भारतीय साहित्य तथा परम्परा से भी सम्बद्ध है और इसके साथ ब्रह्मर्षि गुरु द्वारा दी आज्ञा अर्थात् आर्ष से भी समन्वय दर्शाता है। आर्य शब्द का प्रयोग इतना अधिक प्रभावपूर्ण और सार्वभौमिक सार्वकालिक सार्वजनीन है कि किसी भी देश का नागरिक जहां कहीं, जब कभी इसका प्रयोग करे तो किसी दृष्टि से भी किसी काल-स्थान पर यह आर्य शब्द प्रतिकूल नहीं बैठता। प्रयोग करनेवाले के जीवन की प्रत्येक प्रगति, आकांक्षा, भावना, चाहना को आर्य शब्द पूरी तरह से अभिव्यक्त करता है, क्योंकि आर्य शब्द का अर्थ है–श्रेष्ठ, अच्छा, भला, ईश्वरविश्वासी।

संगठन के नाम में प्रयुक्त आर्य शब्द से स्वतः ही यह भी स्पष्ट होजाता है कि यह संगठन भारतीय परम्परा, साहित्य, संस्कृति, धर्म में से उसी को ही स्वीकार करता है जो आर्य हो या आर्यत्व का साधक, सहायक तथा एतदर्थ उपादेय है। अत एव महर्षि दयानन्द ने अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में अपने अन्तस्थल की भावना को प्रकट करते हुए लिखा है :- **"मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्यासत्य अर्थ का प्रकाश करना।"**

"इसीलिए विद्वानों, आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर दें, पश्चात् वे स्वयं अपना हिताहित समझकर, सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें।"

"जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो।" "यद्यपि मैं आर्यावर्त्त देश में उत्पन्न हुआ और बसता हूं, तथापि जैसे इस देश के मतमतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न कर, यथातथ्य प्रकाश करता हूं, वैसे ही दूसरे देशस्थ वा मनोन्नतिवालों के साथ भी वर्तता हूं तथा सब सज्जनों को भी वर्तना योग्य है।"

अतः आर्यसमाज भारतीयता में उसी-उसी का ग्राहक, समर्थक, पोषक है, जो आर्य शब्द से समन्वित है। भारतीय शब्द से ध्वनित, गृहीत होनेवाली हर विचारधारा, भावना, परम्परा एवं रचना का पोषक नहीं है। क्योंकि देश, काल के बदलने से कुछ परम्परायें और भावनायें स्वतः परिवर्तित हो जाती हैं। आर्यत्व की भावना ही ब्रह्मर्षि गुरु ने विदाई की वेला में स्वामी दयानन्द जी को दी थी। आर्य शब्द के इस विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि आर्यसमाज केवल भारत तक सीमित नहीं, यह एक सार्वभौम संस्था है। अतः जहां कभी भी जो कुछ भी आर्यत्व से सम्बद्ध है, सबके कल्याण का आधार है, आर्यसमाज उसका पोषक है। जिस किसी भी क्षेत्र में जब कभी जिस किसी ने जो भी आर्यता की दृष्टि से कार्य किया है, आर्यसमाज उस-उस व्यक्ति, रचना, कार्य का आर्यपन के अनुरूप उतना-उतना प्रशंसक, अनुमोदक, पोषक है और उतने अंश में उसके लिए श्रद्धापूर्वक कृतज्ञता प्रकट करता है। जैसे कि मनुष्यों की भलाई की दृष्टि से शरीर के पालनार्थ अन्न, वस्त्र, भवन, प्रशासन, शिक्षा, चिकित्सा आदि की आवश्यकता होती है। अतः मानव जाति से सम्बद्ध शारीरिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक आदि क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण कार्य करनेवाले सभी पूजनीय हैं।

अतः ऊपर कही गई बातों से यह स्वतः स्पष्ट हो जाता है कि आर्य शब्द यहां हर बात की निश्चित दिशा और कसौटी है। इसलिए जो अच्छाई है, उसको अपनाना और उसके लिए यत्न करना चाहिए तथा जो अच्छा नहीं है उसको छोड़ना चाहिए। जैसे कि

धूम्रपान, नशे, मांस, व्यभिचार, जुआ आदि। हां, यह बात तो सर्वमान्य है कि हमारे मान्य सारे साहित्य में आर्य शब्द का यत्र-तत्र प्रयोग किया गया है।

आर्यसमाज नाम में आर्य शब्द के अनन्तर दूसरा शब्द समाज है। समाज शब्द का सामान्य अर्थ है—संगठन और इसका शास्त्रीय अर्थ है—समझदारों का समूह। किसी के समझदारों का समूह होने से तब उसका नियमों से अनुशासित होना एक स्वाभाविक बात हो जाती है, क्योंकि नियमों के पालन से ही प्रत्येक संगठन—पल्लवित, पुष्पित, फलित होता है। अतः आर्यसमाज के नाम में ही इसके सारे सिद्धान्त, उद्देश्य अन्तर्निहित हैं।

आर्यसमाज के स्थापना दिवस पर सर्वप्रथम सभी को आर्यसमाज शब्द को हृदयंगम करना चाहिए। इस मूल को सर्वथा-सर्वदा ध्यान में रखने और अपनाने से "जड़ को सींचने"वाली बात हो सकती है अर्थात् स्वास्थ्य संवर्धन, संरक्षण हो सकता है। तभी तो कहा है :- **सन्मूलाः सोम्येमाः सर्वाः प्रजाः** (छान्दोग्य उपनिषद्) अर्थात् सभी प्रकार की प्रगतियां मूल के जमने, सिंचित, सक्रिय, सक्षम होने पर ही निर्भर हैं।

आर्यसमाज के हितैषी आर्य बन्धुओं की सेवा में आवश्यक निवेदन

क्या आप सच्चे हृदय से आर्यसमाज की उन्नति और प्रचार करना चाहते हैं ?

यदि हां, तो क्या आप में अन्याय को अन्याय कहने का साहस है ? यदि है तो बताइये।

(क) आर्यसमाज के अनेक प्रमुख कार्यकर्त्ताओं एवं साधु-महात्मा पर उछाले गए कीचड़ को क्या आप उचित मानते हैं ?

(ख) पूज्य स्वामी ओमानन्द जी, श्री प्रो० शेरसिंह जी, कै० देवरत्न जी, श्री स्वामी सुमेधानन्द जी आदि के निष्कासन को आप उचित मानते हैं ? क्या उन्हें निष्कासन का अधिकार है ?

(ग) अनेक प्रान्तों में नकली सभा का गठन तथा उन द्वारा किये गये झगड़े और कोर्ट-कचहरी में किये गये झगड़ों को आप गलत नहीं मानते ?

यदि आप श्री सोमनाथ मरवाह आदि द्वारा किये गये उपरोक्त कार्यों को संगठन के लिए हानिकारक मानते हैं तो आप इसके लिए कुछ करने की सोची है, यदि किसी डर या संकोच से इन कुकृत्यों का विरोध नहीं किया तो क्या आप भी संगठन के तोड़ने में सहयोगी नहीं हैं ? क्या आपको संकोच या डर से ऐसे समय में चुप रहना शोभा देता है, यदि आप विरोध करेंगे तो ये अपमानित कर देंगे या कुछ हानि कर देंगे ऐसा सोचना क्या पाप नहीं है ? क्योंकि महर्षि दयानन्द जी महाराज लिखते हैं अन्याय करने से अन्याय को सहनेवाला अधिक पापी होता है।

उपरोक्त के कारण यदि आपने उनके अन्याय का विरोध नहीं किया है या नहीं कर रहे हैं तो पाप के भागी नहीं होंगे और संगठन के नष्ट करने में सहयोगी नहीं माने जायेंगे।

मेरे जैसे आर्यसमाज के तुच्छ सेवक का आपसे विनम्र अनुरोध है कि आप शान्त हृदय से ईश्वर के गोद में बैठकर सब बातों पर विचार करें। सत्य-असत्य की परीक्षा करें और आर्यसमाज के संगठन को बनाने के लिए साहसपूर्वक आगे आवें। अन्याय करनेवालों का विरोध करें। सत्य कहने का साहस करें। अपने आर्यसमाज में जागृति उत्पन्न करें। फूट डालनेवालों दूषित वातावरण बनानेवालों और कीचड़ उछालनेवालों के विरुद्ध आर्यसमाज में प्रस्ताव पास करें। उन्हें मंचों पर महत्त्व न दें।

स्वामी धर्मानन्द सरस्वती
कार्यकर्त्ता प्रधान
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

विश्व जागृति दिवस

❑ स्वामी विश्वानन्द सरस्वती, प्राचार्य गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ महाविद्यालय फरीदाबाद (हरयाणा)

आर्यसमाज स्थापना दिवस को "विश्व जागृति" दिवस के रूप में मनाया जाना चाहिए।

आप कहेंगे, जी ! ऐसा क्यों ?

यतो हि आर्यसमाजी तो अपने देश में ही वाद-विवाद, वितण्डावाद में फंसे रहते हैं तथा एक ओर आप हैं कि आर्यसमाज स्थापना दिवस को "विश्व जागृति दिवस" के रूप में मनाना चाहिए, ऐसा दम्भ भर रहे हैं।

मैं कहूंगा कि वास्तव में यह मेरा स्वाभिमान सत्य ही है। क्योंकि वेदों की एक-एक बात पूरे विश्व अर्थात् मानवमात्र के हितार्थ है, वह किसी एक देश अथवा किसी एक वर्ण वा जाति से बंधा हुआ नहीं है।

जगद्गुरु महर्षि देव दयानन्द का जब प्रादुर्भाव हुआ तो उन्होंने गुरुवर विरजानन्द दण्डी जी से शिक्षा दीक्षा प्राप्त करके तथा गुरु जी को दिये हुए वचन के अनुसार जब वेदों का प्रचार करने के लिए निकले तो उन्होंने देखा कि यहां तो वेदों को गडरियों के गीत बताया जारहा है और कुछ सिरफिरे कह रहे हैं कि वेदों को तो शङ्खासुर नाम का राक्षस ले गया, सब ओर अन्धकार ही अन्धकार फैला हुआ है, धर्माचार्य गायत्री का उपदेश देना भी पाप समझ रहे हैं तथा दूसरी ओर जो भी समाज में अनर्गल कार्य होरहे थे वे सब वेदों के नाम से ही होरहे थे, यथा- **"स्त्रीशूद्रौ नाधीयताम्" इति श्रुतेः, अष्टवर्षा भवेद् गोरी०..। इति श्रु०......। ब्रह्मवाक्यं जनार्दनम् इति०.......। अहं ब्रह्मास्मि इति०.......। गोमेधयज्ञादि०...........।**

ऋषिवर ने जब चिन्तन किया कि वास्तव में समाज वेद को कुछ भी न मानते हुए फिर भी वेद पर ही सारा समाज स्थिर है इसका कारण क्या है ? इसका मुख्य कारण है वेदों का वास्तविक रूप समाज के सामने न प्रकट होना। फिर उन्होंने इतिहास के पृष्ठों को पल्टा तो पाया कि महाभारत से भी हजारों वर्षों पूर्व वेदों का पढ़ना-पढ़ाना छूट गया था, इसलिए विश्व की आज यह दशा है, क्योंकि हम जिसे महाभारत में धर्मराज युधिष्ठिर कहते हैं व धर्मराज भी द्यूतक्रीडा अर्थात् जुआ खेल रहा है और अपना सर्वस्व लुटाकर वनों की खाक छानता फिर रहा है। वास्तव में यदि धर्मराज **"अक्षैर्मा दिव्य कृषिमित्कृषस्व, वित्ते रमस्व।"** इस वेद मन्त्र को पढ़ा होता तो कदापि जुआ खेलने के लिए उद्यत न होता तथा जुआ न खेलता, तो महाभारत न होता, महाभारत न होता तो आज विश्व की यह दशा न होती। इसलिए गुरुवर देव दयानन्द ने सम्पूर्ण स्थिति को चहुंओर से दृष्टिपात करके अच्छी तरह भांप लिया तथा मन में दृढ़ धारणा करके विश्व की विद्यागुरु मानी जानेवाली नगरी काशी पर वार कर दिया। काशी के धर्मगुरु ब्राह्मणों को ऋषिवर ने ललकार कर कहा कि हे पण्डितो ! दिखाओ वेद में मूर्तिपूजा, अष्टा०........." स्त्री०........। इत्यादि यह सब कहां है ? वे सारे पण्डे ऋषिवर की सिंह गर्जना के सामने **"छिपली के पिप्पी"** बन गये। फिर महर्षि दयानन्द ने काशी को छः बार परास्त किया तथा दुनिया के सब लोगों को बताया कि यदि जीवन में आप सुख-शान्ति चाहते हो तो वेद की ओर लौटो" तथा आर्यसमाज की स्थापना करके आर्यों को **"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"** का नारा दिया। उसी ऋषिवर की ही यह सारी कृपा है कि आज वेदों को कोई गड़रियों के गीत अथवा शंखासुर ले गया यह नहीं कह सकता।

आज सभी बुद्धिजीवी वर्ग यह मानता है कि वेद ही वास्तव में ज्ञान-विज्ञान, सुख-शान्ति, विश्व कल्याण का भण्डार है। वेद विश्व की पुरातन निधि है। ऋषिवर के आने से पहले दुनिया के पुस्तकालय में वेद सबसे नीचे दबा हुआ था, आज वह सबसे ऊपर है। विदेशों में यज्ञों पर अनुसंधान होरहे हैं। आज जो भी जागृति विश्व में है, उसमें महर्षि का त्याग, तप, विद्या प्रासाद के नींव की भांति मूल में छिपा हुआ है। इसलिए हमें आर्यसमाज स्थापना दिवस को "विश्व जागृति दिवस" के रूप में मनाना चाहिए।

आर्यसमाज के सच्चे सपूत महर्षि दयानन्द के अनुपम अनुयायी गुरुदत्त विद्यार्थी ने अपने उपदेश में कहा था कि महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज को विश्व अभी २०० वर्ष के बाद में समझेगा, हम भी ऐसा मानते हैं, परन्तु यह अभी भविष्य के उदर में छिपा हुआ है। अब हमारे सामने प्रश्न उठता है कि वेदों के प्रति विश्व में जागृति किस प्रकार हो।

इस विषय में मेरा उत्तर किंचित् विचार कीजिए कि ऋषिवर ने जो समाज के लिए अपनी व्यक्तिगत अनुपम भेंट दी है, उस अमरग्रन्थ का नाम "सत्याथप्रकाश" है। सामान्य समाज में एक कहावत प्रसिद्ध है कि **"जादू वह जो सिर चढ़ बोले"** मेरी दृष्टि में अगर वह कोई जादू है तो वह सत्यार्थप्रकाश ही है। मैं सत्यार्थप्रकाश के प्रचार के विषय में यह विचारता हूं कि सत्यार्थप्रकाश विश्वभर में प्रत्येक परिवार में पहुंचना चाहिए।

प्रश्न :- क्या केवल सत्यार्थप्रकाश घर-घर पहुंचने से सारा विश्व आर्य हो जायेगा ?

उत्तर :- कदापि नहीं।

प्रश्न :- तो फिर क्या किया जाये ?

उत्तर :- इसके प्रचार की एक योजना बनाई जाये।

प्रश्न :- वह योजना क्या है ?

उत्तर :- वह योजना यह है, कृपया इसे ध्यान से पढ़ें और धारण करें तथा आज से ही इस कार्य में जुट जायें वरना दयानन्द के नाम पर खाने-पलनेवालो तुम्हारा बुरा हाल होगा।

हम आर्य हैं हमारे अन्दर सबको आर्य बनाने की इच्छा होती है परन्तु हम इस पर श्रेष्ठ बुद्धि से कम चिन्तन करते हैं। हम अच्छे पर्वो अथवा उत्सवों पर किसी को सत्यार्थप्रकाश भेंट करते हैं वह सज्जन उसे बड़ी श्रद्धा-भक्ति से ले लेता है। फोटो खिंच जाता है और कार्य की यहीं इतिश्री हो जाती है।

सत्यार्थप्रकाश प्रचार योजना :- प्रत्येक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा जिला आर्य उप-प्रतिनिधि सभाओं में, सत्यार्थप्रकाश के प्रचार का कार्यालय में अलग से रजिस्टर तथा जो आर्यसमाज के उपदेशक हैं उन्हें सत्यार्थप्रकाश के विषय में कुछ जानकारी होनी चाहिए कि वे जहां पर भी उत्सवों आदि में जावें वहां पढ़े-लिखे युवकों, वृद्धों को प्रेरित करें फिर उन्हें मूल्य से सत्यार्थप्रकाश देवें तथा उनका पूरा पता लिखकर सभा कार्यालय को दे देवें। वहां से प्रत्येक मास २५ पैसेवाला पत्र जिसको हमने सत्यार्थप्रकाश दिया है उसके पास जाना चाहिए। उस पत्र का विषय नमूना इस प्रकार छपा लेना चाहिए कि श्रीमान् जी हमने जो आपको पुस्तक दी थी वह आपने पढ़ी अथवा नहीं। यदि नहीं पढ़ी तो आप इसे अवश्य पढ़ें, यदि पढ़ी है तो इसमें आपको क्या-क्या बातें अच्छी लगीं। जो अच्छी लगी हैं तो आप उनको अपने जीवन में उतारें तथा दूसरे पुरुषों को प्रेरित करें। यदि आपको कुछ शंकाएं हैं तो हमें लिखें हम उनका समाधान कर देंगे। इस प्रकार से जब हर मास पत्र जायेगा तो वह व्यक्ति उस पुस्तक को अवश्य पढ़ेगा तथा एक वर्ष में इस प्रकार से हजारों नये आर्यसमाजी पक्के हो जायेंगे तथा उनमें से बहुत से महान् पुरुष

भी बन सकते हैं जो सारे विश्व में वेद की दुन्दुभी बजायेंगे।

ऐसा क्यों करें? ऐसा इसलिए करें कि यदि हम किसी को पुस्तक भेंट करते हैं तो वह उसे लेकर मंजूषा में अथवा सेफ में रख देता है तथा अपने कार्य में लगा रहता है समाज के काम-धन्धों से उसे समय नहीं मिलता तथा वह एक दिन रद्दी में भी बिक जाता है। किन्तु बार-बार प्रेरणा करने से वह उस पुस्तक को अवश्य पढ़ता है फिर सत्यार्थ जादू का कार्य उस पर करता है। सत्यार्थप्रकाश से बहुत अधिक प्रचार हो सकता है और अधिक समाज श्रेष्ठ मार्ग पर आ सकता है। इस कार्य से वास्तव में विश्व में जागृति आ सकती है?

इत्योमलम्।

हा ! वेदपाल सुनीथः।

आर्यसमाज के उदीयमान सूर्य शतपथ ब्राह्मण के प्रकाण्ड पण्डित सुनीथ जी अचानक यम के दूतों ने हमसे छीन लिए उनका अभाव समाज को सदा-सदा के लिए खटकता रहेगा। १२/२/९६ को शोकसभा का आयोजन किया गया तथा कुछ समय मौन रखकर उनकी आत्मा तथा सद्गति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की और उनके आदर्शों को अपनाने ऋषि परम्परा को जीवित रखने हेतु संकल्प लिया।

—विश्वानन्द सरस्वती

भूल सुधार

२८ मार्च के सर्वहितकारी साप्ताहिक में श्री मनमोहनकुमार के लेख में ब्र० विश्वपाल जयन्त की मृत्यु का समाचार छप गया है। कार्याधिक्य के कारण में इस लेख को अक्षरशः नहीं पढ़ पाया था इसी करण से यह भूल हुई है। श्री जयन्त जी ईश्वर कृपा से सकुशल वैदिक धर्म प्रचार के कार्य में लगे हुए हैं। इस भूल के लिए मुझे खेद है। **—सम्पादक**

मद्यनिषेध जनजागरण पदयात्रा सम्पन्न

नेहरू युवा केन्द्र हिसार के जिला अधिकारी श्री राजकुमार कुण्डू के नेतृत्व में १२ नवयुवकों ने शराबबन्दी जनजागरण हेतु ५-३-९७ से १४-३-९७ तक ग्राम सिसाय, भाटोल, उमरा, सुलतानपुर, सातरोड लाडवा, न्याणा आदि कुल ३५ गांव में पदयात्रा की जिसमें शराब से हानियां तथा दहेज पर विस्तार से जानकारी दी गई। महिलाओं एवं बुजुर्गों का विशेष योगदान रहा।

१४ मार्च को प्रातः ११ बजे नेहरू युवा केन्द्र हिसार के कार्यालय में समापन समारोह चौ० रोशनलाल सैनी उपायुक्त हिसार की अध्यक्षता में हुआ जिसमें सभा उपदेशक एवं संयोजक शराबबन्दी समिति जिला हिसार के श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने शराब से होनेवाले नुकसान नवयुवकों को अवगत कराते हुए युवकों का आह्वान किया कि शराबबन्दी में सरकार एवं प्रशासन का पूर्ण सहयोग दें। श्री मनीराम मोर (बास) ने सुझाव दिया कि शराब का अवैध धन्धा करनेवालों से सख्ती से पेश आना चाहिए। श्री कुण्डू साहब ने अपने १० दिन की पदयात्रा के अनुभव बताए और यात्रा को सफल बताया।

उपायुक्त महोदय ने नवयुवकों की प्रशंसा करते हुए शराबबन्दी अभियान में पूरी निष्ठा एवं लगन से कार्य करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा अकेला कानून कुछ नहीं कर सकता। जन सहयोग आवश्यक है। तभी हम पूर्ण शराबबन्दी का लक्ष्य प्राप्त कर सकेंगे। प्रशासन का नवयुवकों को शराबबन्दी अभियान में पूर्ण सहयोग रहेगा। १२ नवयुवकों को प्रशंसा-पत्र भेंट किये कये।

—दिलबागसिंह

सचिव नेहरू युवा केन्द्र उमरा

आर्यसमाज

❑ राधेश्याम "आर्य" विद्यावाचस्पति, मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ० प्र०)

प्रगति पथों पर बढ़ता जाए, अपना आर्यसमाज।।

ऋषिवर दयानन्द के सारे स्वप्न बनें साकार।
दानवता हो पुनः पराजित, मिटे धरणी का हाहाकार।
बढ़ें लक्ष्य तक आर्यवीर सब, कभी न मानें हार।
वेदों के पथ का अनुगामी बन जाये संसार।

सजे धरा पर मानवता की मंगलकारी साज।
प्रगति पथों पर बढ़ता जाए, अपना आर्यसमाज।।

धर्माडम्बर पाखण्डों का हो जाये सम्पूर्ण सफाया।
पोप-पुरोहित-मुल्लाओं की क्षत-विक्षत हो पूरी माया।
स्वस्थ समाज हमारा हो फिर, बने निरोगी काया।
युग ऋषियों की मिले धरा को, स्वच्छ सुशीतल छाया।

डंका बजे पुनः वेदों का, इस वसुधा पर आज।
प्रगति पथों पर बढ़ता जाए, अपना आर्यसमाज।।

बन्द नहीं है मूर्ति-पूजना, बढ़ते हैं अवतार।
भौतिकता का चढ़ा आवरण, नष्ट धर्म का सार।
नहीं मिला है अब तक सबको, समता का अधिकार।
लोभ-मोह-मद-मत्सर बढ़ता, बढ़ता अत्याचार।

है अन्याय अनय से पीड़ित, हुआ समग्र समाज।
प्रगति पथों पर बढ़ता जाए, अपना आर्यसमाज।।

बढ़ता द्वेष दुखों का ताण्डव, टूट रहे परिवार।
अट्टहास कर रहा दहेज का दानव कर व्यभिचार।
हुआ क्षीण आचरण हमारा, बढ़ता प्रतिपल अनाचार।
युवकों का है नाश कर रही, शराब बेचकर यह सरकार।

आर्य सपूतो, बढ़ो अभय हो, पूर्ण करो ऋषिवर का काज।
प्रगति पथों पर बढ़ता जाए, अपना आर्यसमाज।।

☆ ☆ ☆

नव संवत् हो मंगलकारी

❑ राधेश्याम "आर्य" विद्यावाचस्पति, मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ० प्र०)

नव संवत् हो मंगलकारी,
जन-जन में आये सद्बुद्धि।
परहित के भावों की मन में,
हो सहसा अभिवृद्धि।

मंगलमय हो नवसंवत्सर,
मंगलमय हो घर आंगन।
मंगलमय हो इस धरती का,
सत्य-शिवम्-सुन्दरसा कन-कन।

आज हमारे अन्तस्थल में,
प्रेमभाव हो पुनः प्रदीप्त।
करुणा-क्षमा-सहिष्णुता हो,
अन्तर्मन में फिर उद्दीप्त।

भाव शत्रुता के मिट जायें-
उर में जागे मित्र भावना।
पूर्ण सदा हो मानव मन की,
इच्छा के अनुकूल कामना।

राम-कृष्ण की दयानन्द की,
परम्परा हो फिर से जीवित।
करें परस्पर स्वच्छ हृदय से,
एक-दूसरे का ही हम हित।

मिटे नये इस संवत्सर में-
फैला जो अन्याय अनय।
सभी दिशायें हों मंगलमय,
जन-जन हो वसुधा का निर्भय।

मानवता के मंगलकारी-
पथ पर ही अब बढ़े चरण।
सच्चरित्रता का ही हम सब,
जीवन पथ पर करें वरण।

भ्रष्टाचार मिटें जितने हैं,
किया राष्ट्र को अब आक्रांत।
जागृति का नवमंत्र मिले अब,
जागे मानव मन उद्भ्रान्त।

रुदन मिटे इस वसुन्धरा का,
छा जाये कुल हर्षोल्लास।
स्वार्थवाद को दिये तिलांजलि।
जगे धरा पर नूतन आश।

मानवता की जय का डंका-
बजे पुनः भूमण्डल पर।
जन-जन हित हो मंगलकारी।
आया जो नव संवत्सर।

ग्यारहवां अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक पुरोहित प्रशिक्षण शिविर

अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद की ओर से आचार्य वेदभूषण के आचार्यत्व में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी २० मई १९९७ से २० जून १९९७ तक अन्तर्राष्ट्रीय वैदिक पुरोहित शिविर भारत की राजधानी नई दिल्ली में आयोजित किया जारहा है।

योग शिविर पुरोहित प्रशिक्षण के साथ-साथ योगासन एवं प्राकृतिक चिकित्सा का प्रशिक्षण भी दिया जाएगा। रु० ११०/- (एक सौ दस) प्रवेश शुल्क के रूप में भेजकर आवेदन पत्र प्राप्त करें।

—आचार्य वेदभूषण

६-२-६५५/१ दूसरी मंजिल, चिन्तलबस्ती लेन,
खैरताबाद, हैदराबाद-५०० ००४

हिन्दी का विरोध, अपने ही घर से ?

महोदय,

एक समाचार गत मास अखबारों में छपा था कि बिहार के कुछ मैथिलीभाषी विद्वानों ने राष्ट्रपति जी से अनुरोध किया है कि मैथिली भाषा को राजकीय भाषा के रूप में मान्यता दिलवाई जाए। कुछ दिन पहले राजस्थानी के लिए भी ऐसी ही मांग राजस्थान में उठी थी जिसका वहां की समझदार जनता ने डटकर विरोध किया। कुछ अंग्रेजीभक्त लोग समय-समय पर हिन्दी का पक्ष कमजोर करने के लिए ऐसी चालें चलकर अपना उल्लू सीधा करते रहते हैं और बड़े दुःख की बात है कि देशभक्त विद्वान् भी अपने स्वभाषा प्रेम के कारण उनकी चालों में फंस जाते हैं।

एक भाषा के बिना राष्ट्रीय एकता संभव नहीं है और देश के सभी विद्वानों ने सर्वसम्मति से स्वीकार किया है कि राष्ट्र की वह भाषा "हिन्दी" ही है और हिन्दी क्या है ? मैथिली, भोजपुरी, पहाड़ी, अवधी, राजस्थानी, व्रजभाषा आदि-आदि का एक राष्ट्रीय स्वरूप ही तो है जिसमें ये सभी क्षेत्रीय भाषाएं (बोलियां) गतार्थ होगई हैं, जिसको राष्ट्रभाषा नाम दिया गया है। हिन्दी के इन क्षेत्रीय स्वरूपों का यह सौभाग्य है कि उनमें कुछ व्याकरणिक परिवर्तन या सुधार करके, उन्हें हिन्दी में समाहित करके एक विशालतर क्षेत्र-सारे राष्ट्र में फैलने का सम्मान मिला है।

इन भाषाओं (बोलियों) को किसी राज्य में ही प्रयोग के लिए सीमित रखने से लाभ तो कुछ होगा नहीं, राष्ट्रभाषा हिन्दी का और राष्ट्र का अहित जरूर होगा, क्योंकि हिन्दी का संख्या-बल घटता जाएगा और वह कहीं की भी न रहेगी, बस अंग्रेजी चलती रहेगी। मैकाले-भक्त काले अंग्रेजों का षड्यन्त्र सफल होगा और राष्ट्रभाषायी गुलामी, मानसिक गुलामी, सांस्कृतिक गुलामी के दलदल में फंसा रहेगा। हमारी आजादी ५० साल में भी पूरी नहीं हुई तो ऐसे राष्ट्रघाती षड्यन्त्रों के चलते तो वह कभी पूरी होगी ही नहीं। हमें क्षेत्रीय भाषाओं (बोलियों) को भाषा माने जाने के आग्रह और कुचक्र से बचना चाहिए। हम धोखे में आकर हिन्दी-विरोधी किसी षड्यन्त्र में न फंसे।

भवदीय-

विश्वम्भरप्रसाद 'गुप्त-बन्धु'

बी-१५४, लोक विहार, दिल्ली-११००३४

मुक्तक...........

—नाज़ सोनीपत

(१)

तेल बिन, होता नहीं रौशन चिराग़।
जुस्तजू बिन, मिल नहीं सकता सुराग़।
जानते हैं **'नाज़'** सब इस बात को।
क्या करेगा ? अक़्ल बिन ख़ाली दिमाग़।

(२)

जीनेवालों को, रहे मुल्क में मर जाना है।
मरनेवालों ने कहां ? राह-ए-सफ़र जाना है।
सुर्ख़रू होने के अन्दाज़ सिखाने के लिए।
आज परवानों ने, जी-जां से गुज़र जाना है।

(३)

सौ तरह के रंग बदले हैं जो तूने दैहर में।
हज़रत-ए-इन्सां ! बता ? क्या कुछ हुआ हासिल तुझे।
काम के कुछ काम कर और हर किसी के काम आ।
ताकि हर इन्सान समझे प्यार के काबिल तुझे।

☆ ☆ ☆

आर्यसमाज की सबसे बड़ी शिक्षण संस्था स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित गुरुकुल कांगड़ी हरद्वार का वार्षिक उत्सव

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरद्वार का ९७ वार्षिक उत्सव ११ से १३ अप्रैल ९७ तक होरहा है। मुख्य कार्यक्रम निम्न प्रकार है :-

११ अप्रैल ६७ :- प्रात: ७-३० से १० बजे तक यज्ञ-संयोजक डा० सत्यदेव विद्यालंकार, प्रवचन-महात्मा आयु भिक्षु जी, ध्वजारोहण डा० धर्मपाल जी कुलपति।

वेद सम्मेलन :- १० से १२ बजे तक अध्यक्ष श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती प्रधान हरयाणा सभा, मुख्य अतिथि स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती।

शिक्षा सम्मेलन :- मध्याह्न २ से ५ बजे तक। डा० दयानन्द मिश्र मानव संसाधन विकास मंत्रालय, मुख्य अतिथि–प्रिं० अर्जुनदेव जी, संयोजक–डा० दीनानाथ, सहसंयोजक–प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार।

सांस्कृतिक सम्मेलन :- रात्रि ८-३० से ११-३० बजे तक। अध्यक्ष महाशय धर्मपाल, मुख्य अतिथि–श्री सत्यानन्द मुंजाल।

१२ अप्रैल ६७ :- प्रात: ७-३० से १० बजे तक यज्ञ-प्रवचन, भजन-प्रवचन स्वामी वेदमुनि जी।

पुण्य भूमि महोत्सव :- १० से १२ बजे तक। ध्वजारोहण-पं० हरबंसलाल शर्मा, अध्यक्ष-श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, मुख्य अतिथि-श्री सूर्यदेव जी प्रधान दिल्ली सभा, संयोजक-पं० महेन्द्रकुमार जी मुख्याधिष्ठाता, वक्ता श्री अश्विनीकुमार, प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार, श्री वेदव्रत शर्मा मन्त्री दिल्ली सभा, श्री वेदव्रत शास्त्री मन्त्री हरयाणा सभा।

वेद विज्ञान संगोष्ठी :- मध्याह्न ३ से ५ बजे। अध्यक्ष-डा० वाचस्पति, मुख्य अतिथि-श्री सोमपाल सांसद।

आर्य सम्मेलन :- रात्रि ८-३० से ७-३० तक अध्यक्ष-श्री सूर्यदेव प्रधान दिल्ली सभा, मुख्य अतिथि-प्रो० शेरसिंह उपप्रधान सार्वदेशिक सभा, संयोजक-डा० महावीर, मुख्यवक्ता-डा० सुदर्शनदेव आचार्य, श्रीमती प्रभातशोभा पंडित, श्री सुखदेव शास्त्री, आचार्या दमयन्ती, डा० सरोज दीक्षा, श्री सत्यप्रकाश गुप्त।

वेदारम्भ संस्कार :- १३-४-९४ प्रात: ७-३० से १० बजे पूर्णाहुति-ब्रह्मा आचार्य वेदप्रकाश शास्त्री, प्रवचन ब्र० आर्यनरेश, संयोजक-डा० महावीर नीर।

राष्ट्ररक्षा सम्मेलन :- १० बजे से १२ बजे तक। मुख्य अतिथि-माननीय जस्टिस महावीरसिंह जी, परिदृष्टा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरद्वार, संयोजक-डा० जयदेव विद्यालंकार, वक्ता-श्री राममेहर एडवोकेट, डा० महेश विद्यालंकार, डा० योगानन्द शास्त्री।

दीक्षान्त समारोह :- मध्याह्न १ से ४ बजे तक। संयोजक-डा० एस०एन० सिंह कुलसचिव।

व्यायाम सम्मेलन :- रात्रि ८-३० से ११ बजे तक। अध्यक्ष-प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार।

गन्नौर में महर्षि दयानन्द बोधोत्सव

आर्यसमाज मन्दिर गन्नौर शहर द्वारा ऋषि बोधोत्सव बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। यह कार्यक्रम सुबह ४ बजे से ६ बजे तक प्रभात फेरी के माध्यम से शुरू हुआ एवं सायं २-३० बजे से ५ बजे तक स्वामी श्रद्धानन्द चौक में हवन किया गया जिसमें महर्षि दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डाला गया व स्वामी श्रद्धानन्द जी को भी श्रद्धांजलि दी गई।

—भूषण आहूजा मन्त्री आर्यसमाज गन्नौर शहर

१० अप्रैल १८७५ को स्थापित आर्यसमाज के स्थापना दिवस पर विशेष लेख :-

आर्यसमाज अमर रहेगा– वेद की ज्योति जलती रहेगी

इसे कोई बुझा न सकेगा, यह ज्योति नित्य है

लेखक :- **सुखदेव शास्त्री** महोपदेशक, दयानन्दमठ रोहतक (हरयाणा)

महर्षि के आगमन से पूर्व देश की दशा :-

३० मई १८६३ को गुरुवर स्वामी विरजानन्द से वेदप्रचार की दीक्षा लेकर महर्षि दयानन्द सामाजिक सुधार के कार्यक्षेत्र में उतरे। उस समय भारत में कौन-सी ऐसी परिस्थितियां थी जिनका मुकाबला महर्षि दयानन्द को करना पड़ा।

जिस समय :- पौराणिक अन्धकार के घनघोर अज्ञान के बादल भारत पर छा रहे थे।

जिस समय :- पत्थरों को परमेश्वर मानकर पूजा जारहा था।

जिस समय :- नदियों में स्नान करनेमात्र से मुक्ति मानी जारही थी।

जिस समय :- स्त्रियों और शूद्रों की वेद पढ़ने के अधिकार से वंचित कर दिया गया था।

जिस समय :- बालविधवाओं को बलात् पुनर्विवाह से रोका जारहा था।

जिस समय :- वर्णाश्रम की वेदमर्यादा समाप्त कर दी गई थी।

जिस समय :- मुसलमान और ईसाई वेदशास्त्रों की निन्दा करके हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन कर रहे थे।

जिस समय :- १८३९ में राजा रणजीतसिंह की मृत्यु के बाद १८४९ में अंग्रेजों का राज्य भारत पर होगया था।

जिस समय :- १८२८ में राजा राममोहनराय द्वारा स्थापित ब्राह्मसमाज, बा० केशवचन्द्र सेन द्वारा स्वयं ईसाइयों की शाखा का रूप धारण कर चुका था, तब "प्रकाश" कवि के शब्दों में :-

भारत के नभमण्डल पर अविवेक अधर्म के बादल छाए।
छोड़ रहे थे निरन्तर वैदिक धर्म सनातन राम के जाए।
ईशकृपा से कराल परिस्थिति में ऋषिराज दयानन्द आए।
संसृति के अघताप निवारण कारण आर्यसमाज बनाए।

उस समय :- जगन्नियन्ता ईश्वर के नियमानुसार महाभारत युद्ध के पांच हजार वर्षों के बाद भारत देश में महर्षि दयानन्द ने जन्म लेकर समस्त भूमण्डल को फिर से वैदिक ज्योति दिखाई और उस दिव्य ज्योति के प्रकाश में शताब्दियों से पद-दलित दीन-हीन-मलीन, पर-मुखापेक्षी, विदेशियों और

विधर्मियों के पैरों की ठोकरें खाती हुई आर्य (हिन्दू) सन्तानों को आत्मनिर्भरता, स्वावलम्बन, स्वधर्म, स्वसंस्कृति एवं स्वाभिमान का पाठ पढ़ाकर सचेत कर दिया था जिससे आर्यजाति ने जोरदार अंगड़ाई ली, हजारों साल की पराधीनता की बेड़ियां तोड़कर दूर फैंक दी गई थी। स्वराज्य, स्वातन्त्र्य का जीवनप्रद प्रथम उद्घोष सर्वप्रथम महर्षि ने किया था। जनता को जागृत करने के लिए **"उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत"** के महामन्त्र का जाप करते हुए महर्षि दयानन्द स्वयं मैदान में उतरे और उस समय सारे विश्वभर को चकित कर दिया। इन दुर्गम कठिन परिस्थितियों में महर्षि ने एक ऐसे सुदृढ़ समाज की स्थापना की बात सोची थी। क्योंकि गुरु विरजानन्द के पास भी विद्या पढ़ते हुए देश की दुर्दशा की चर्चा होती रहती थी। १८५७ का स्वातन्त्र्य आन्दोलन भी उन्होंने अपनी आंखों से देखा था।

इससे पूर्व कि वे समाज की स्थापना करते उन्होंने तत्कालीन भारतीय प्रमुख नेताओं से भी बातचीत की। उस समय वे १८७२ में भारत की राजधानी कलकत्ता पहुंचे। कलकत्ता पहुंचने से पहले भी उन्होंने १८६९ में काशी में पौराणिकों से मूर्तिपूजा पर शास्त्रार्थ भी किया था। उस समय देश की सामाजिक व राजनीतिक अधःपतन की पराकाष्ठा हो चुकी थी। देशवासियों के हृदय में देशभक्ति का अभाव होगया था। अपने भारत की इस दुर्दशा को देख एवं अनुभव करके महर्षि का हृदय द्रवीभूत हो जाता था। वे हृदय पकड़कर रह जाते। शंकराचार्य द्वारा आरोपित स्त्रियों की दुर्दशा को देखकर महर्षि आंसू बहाते थे। शंकराचार्य के इन वाक्यों में कि :- **"द्वारं किमेकं नरकस्य-नारी,** नरक का एकमात्र द्वार कौनसा है? **नारी, महामहाविज्ञतमोऽस्ति को वा? नार्या पिशाच्या न च वंचितो यः** अर्थात् समझदारों में सबसे समझदार कौन है? जो स्त्रीरूपी पिशाचिनी से न ठगा गया हो। ऐसे-ऐसे वाक्यों को सुनकर महर्षि बहुत दुःखी हो जाते थे। स्त्रियों तथा शूद्रों का वेद पढ़ने का भी अधिकार समाप्त कर दिया गया था। गौओं की दुर्दशा भी महर्षि से सहन न होती थी। मतमतान्तरों के कारण वैदिकधर्म लुप्त हो चुका था। इन सब का मुख्य कारण था, सन् ७१२ ई० में भारत में मुसलमानों का राज्य होना, जिनके राज्य में सब कुछ तलवार के बल पर नष्ट-भ्रष्ट कर दिया गया था। वेदशास्त्र फूक दिये गये थे। बलात् धर्म परिवर्तन किया गया। इसके बाद १८४९ में भारत पर पूर्ण अंग्रेजी राज्य छागया था। उन्होंने शिक्षा में परिवर्तन करके, वेदों की निन्दा करके समाज में परिवर्तन किया था। इसका प्रभाव सबसे अधिक बंगाल पर पड़ा।

१८७२ के दिसम्बर मास में महर्षि कलकत्ता पहुंचे। उनके स्वागत में कलकत्ता के सभी गणमान्य विद्वान् सम्मिलित हुए। वे सभी ब्रह्मसमाज के प्रतिष्ठित सदस्य थे। उनमें बैरिष्टर चन्द्रशेखर, ब्रह्मसमाज के अन्यतम नेता पं० सत्यव्रत सामश्रमी तथा बैरिस्टर उमेशचन्द्र थे। मिलनेवालों में केशवचन्द्र सेन, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर आदि मुख्य थे। म० देवेन्द्रनाथ के निमन्त्रण पर ही महर्षि यहां आये थे। राजा राममोहनराय ने १८२८ में ब्राह्मसमाज की स्थापना की थी। बंगाल में यही संस्था समाज सुधारक थी। इसी में ये सभी विद्वान् शामिल थे। ये ब्राह्म लोग एक ईश्वर की पूजा, मूर्तिपूजा का विरोध,

कुरीतियों का खण्डन, समाज सुधार के कार्यों में महर्षि की सहायता के इच्छुक थे। किन्तु ब्राह्मसमाज के लोग वेदों को एकमात्र ईश्वरकृत निर्भ्रान्त सत्य नहीं मानते थे। १८३३ में राजा राममोहनराय की मृत्यु के बाद ब्राह्मसमाज का नेतृत्व केशवचन्द्र सेन के हाथ में आगया। महर्षि की अन्य नेताओं के अतिरिक्त सेन से ही अधिक बातें हुई थीं। केशवचन्द्र सेन का झुकाव ईसाइयत की ओर बहुत अधिक था। सेन की शिक्षा-दीक्षा पाश्चात्य संस्कारों के साथ हुई थी। स्वभाव से ईसाइयत के प्रति उनमें अपार उत्साह था। वे ईसा को समस्त मानवजाति का त्राता मानते थे। वे लोगों को ईसाइयत की ओर आने का निमन्त्रण देते थे।

९ अप्रैल १८७९ को कलकत्ता में भाषण देते हुए केशवचन्द्र सेन ने अपने हृदय के भावों को प्रकट करते हुए कहा था :- My christ, My sweet christ, the brightest Jewel of my heart, the Necklace of my soul ! For twenty years I chrished him in this my miserable heart. अर्थात् "मेरा ईसा, मेरा प्यारा ईसा, मेरे हृदय का सर्वाधिक आभावान हीरा, मरी आत्मा का कण्ठहार ! बीस वर्ष तक मैंने इसे अपने संतप्त हृदय में संजोए रखा है।" इसी बात को लक्ष्य करके फ्रैंच-लेखक रोम्यां रोलां ने सेन के बारे में लिखा था-जिसका अभिप्राय यह था कि वे ईसाइयत के रंग में पूरे तरह से रंगे जा चुके थे। उन्होंने अपने ब्राह्मसमाज के अनुयायियों को कहा था :- भारत को ईसा को स्वीकार कर लेना चाहिए। इस विचार पर मैक्समूलर ने पादरी क्लर्क का प्रमाण देते हुए लिखा था :- "Believers of Keshav Chandra Sen Forefeited the name of theists, because their leader has been more and more inclined towards christianity." अर्थात् केशवचन्द्र सेन के अनुयायियों को ब्राह्म कहने का कोई अधिकार नहीं है, क्योंकि उनका नेता ईसाइयत की ओर अधिक से अधिक झुक गया है। सेन ने भी ब्राह्मसमाज के अतिरिक्त प्रार्थना समाज की स्थापना १८६८ में की थी। ऐसे में महर्षि की बातचीत सेन से हुई थी। सेन ने महर्षि से वेदों के ईश्वरीय ज्ञान होने के विषय में अनेकों प्रश्न पूछे। महर्षि ने युक्ति प्रमाणों से वेदों को ईश्वरीय ज्ञान बताकर कुरान व बाईबिल में अनेक दोष बताए और पुनः वेदों को निर्दोष दिखाते हुए कहा :- "वेद ईश्वरीय ज्ञान हैं। ईश्वरकृत हैं। इसलिए वैदिक धर्म ही सच्चा धर्म है" इसे अपनाइये। सेन निरुत्तर होगये। बातचीत टूट गई। महर्षि ने वेदों के विरुद्ध समझौता न किया।

राजा राममोहनराय तथा महर्षि देवेन्द्रनाथ के सम्प्रदाय के केशवचन्द्र सेन ने ईसाइयत, पाश्चात्य सभ्यता, संस्कृति भाषा, शिक्षा तथा नैतिक मूल्यों से प्रभावित होकर जो कुछ किया उसके कारण भारतीय जनमानस ने उन्हें सदा के लिए नकार दिया। आज ब्राह्मसमाज व प्रार्थना समाज का नाम भी नहीं।

अब हम इस बात पर आते हैं कि यह बात भी बहुत ही महत्त्वपूर्ण है कि आर्यसमाजरूपी संगठन स्थापित करने का विचार महर्षि के हृदय में कलकत्ता जाने के पीछे ही उत्पन्न हुआ था। क्योंकि ब्राह्मसमाज के सिद्धान्तों और उस समय कई अन्य संगठनों की अपूर्णता एवं कमियों को देखकर ही महर्षि के हृदय पर एक अन्य वैदिक समाज स्थापित करने की प्रबल इच्छा उत्पन्न हुई थी।

२५ दिसम्बर १८७३ को महर्षि कलकत्ता से अनेक स्थानों पर होते हुए अलीगढ़ पहुंचे। यहां आप राजा जयकृष्णदास के पास ठहरे। राजा महर्षि से बहुत ही प्रभावित थे। राजा जयकृष्णदास ने महर्षि को सुझाव दिया कि आप अपने विचारों के प्रचार एवं प्रसार के लिए एक ग्रन्थ की भी रचना करो, जिससे आपके स्थायी विचारों से प्रभावित होकर समाज सुधार के कार्य में प्रगति हो। महर्षि ने इस सुझाव को स्वीकार कर लिया और अपने विचारों को क्रमशः लिपिबद्ध करना बहुत ही ठीक समझा। इन विचारों को महर्षि ने १२ जून १८७४ को आरम्भ करके १५ अगस्त १८७४ को पूरा कर लिया और इस अमरग्रन्थ का नाम रखा "सत्यार्थप्रकाश"। आर्यसमाज की स्थापना से पूर्व किसी ग्रन्थ का लिखना अत्यावश्यक था, जिससे लोग प्रेरणा पाकर वैदिक धर्म के अपनाने में सफल हो सकें। सत्यार्थप्रकाश सामाजिक सुधार का क्रान्तिकारी ग्रन्थ प्रमाणित हुआ। १८५७ में शस्त्र की क्रान्ति समाप्त हो गई थी। अब शस्त्र की क्रान्ति का समय होगया था। महर्षि ने इसे हाथ में लेकर राष्ट्र में महान् स्वराज्य क्रान्ति का बीज बोने की आधारशिला रक्खी सत्यार्थप्रकाश तथा आर्याभिविनय में। १८५८ में ईस्ट इण्डिया कम्पनी का राज्य अंग्रेजों ने स्वयं संभाल लिया था। १ नवम्बर १८५८ में तत्कालीन वायसराय लार्ड केनिङ्ग ने महारानी विक्टोरिया का भारत के लिए घोषणा पत्र जारी किया था, जिसमें भारतीयों के लिए अनेक वायदे किये गये थे। उसमें लिखा था :- अब भारत में शान्ति बनाये रक्खेंगे। अपनी भारतीय प्रजा के हित की दृष्टि से कार्य करेंगे। सब को समानरूप से कानून का संरक्षण प्राप्त होगा। इस घोषणा का तुरन्त प्रतिकार करते हुए महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश में लिखा था :- "कोई कितना ही करे, परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है, वह सर्वोपरि उत्तम होता है अथवा मतमतान्तर के आग्रहरहित, अपने और पराये का पक्षपातशून्य, प्रजा पर माता-पिता के समान कृपा, दया और न्याय के साथ भी विदेशियों का राज्य पूर्ण सुखदायक नहीं हो सकता।" इससे पता चलता है कितना प्रखर था महर्षि का तेज, स्वाराज्यप्राप्ति के लिए कितनी प्रबल थी उनकी भावना, इसी भावना से ही अनुप्राणित एवं प्रभावित होकर ही अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश का पाठ करते हुए इससे प्रेरणा प्राप्त करके हजारों नौजवान आजादी के लिए बलिदान होगए। सत्यार्थप्रकाश उनका आदि प्रेरणास्रोत बना। सत्यार्थप्रकाश से समाज में कितना भारी सुधार हुआ, इसकी गणना नहीं की जा सकती। महान् वैज्ञानिक विद्वान् गुरुदत्त विद्यार्थी ने लिखा था :- मैंने सत्यार्थप्रकाश को १८ बार बढ़ा है, जब-जब भी मैं इसे पढ़ता हूं नई-नई बातें ज्ञात होती हैं। यदि सत्यार्थप्रकाश की कीमत १ हजार रुपये होती तो तब भी मैं इसे अपनी जमीन-जायदाद बेचकर भी इसे पढ़ता।" दादा भाई नौरोजी को सत्यार्थप्रकाश का पाठ करते देखकर लोकमान्य तिलक ने कहा था :- **"क्या आर्यसमाजी होगए हो।"** दादा जी ने कहा था **सत्यार्थप्रकाश से मुझे स्वराज्यप्राप्ति की सुदृढ़ भावना प्राप्त होती है।** सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास के बारे में ब्रिटिश विद्वानों का कहना था कि इसका प्रयोजन यह निश्चित करना था कि देश के स्वतन्त्र हो जाने पर देश का शासन किस प्रकार किया जायेगा। ऋषि ने वेद, मनुस्मृति, चाणक्य-नीति, महाभारत के अनुसार इसका प्रारूप तैयार कर दिया था। किन्तु महर्षि इस्लाम और ईसाइयत से बहुत

ही शंकित थे, उन्होंने इन दोनों मतों के बारे में अलग से समुल्लास १३ व १४ लिखे जिनमें इन मतों की समीक्षा की गई है। यदि आज महर्षि की बात पर ध्यान दिया जाता तो न पाकिस्तान बनता, न भारत में ईसाइयत का प्रचार बढ़ता। महर्षि ने इस शंका को सच्ची सिद्ध करते हुए २५-२६ वर्ष बाद सन् १९०१ में तत्कालीन जनसंख्या अध्यक्ष मि० बर्न ने लिखा था :- "Dayananda feared Islam and christianity because he considered because the adoption and adoptation of any forign creed would endanger the national feelings he wished to foaster." "अर्थात् दयानन्द इस्लाम और ईसाइयत से इसलिए शंकित थे; क्योंकि वे समझते थे कि विदेशी मतों के अपनाने से देशवासियों की राष्ट्रीय भावनाओं को क्षति पहुंचेगी जिन्हें वे पुष्ट करना चाहते थे।"

कलकत्ता बंगाल से लौटने के बाद १८७३-७४ में महर्षि ने दो पुस्तकें आर्याभिविनय तथा सत्यार्थप्रकाश लिखकर तैयार कर दिये थे। आर्याभिविनय बेशक प्रार्थना पुस्तक हो, उसमें ५३ मन्त्रों की आयोजना करके उसमें भी १०८ बार परमेश्वर से स्वराज्यप्राप्ति की प्रार्थना की गई है। उसमें उल्लिखित दूसरे मन्त्र :- **इषे पिन्वस्व०** में महर्षि दयानन्द ने लिखा था :- "अन्य देशवासी राजा हमारे देश में कभी न हों तथा हम लोग पराधीन कभी न रहें।" क्या उस समय ऐसा लिखना स्वराज्य की स्पष्ट घोषणा नहीं ? क्या यह अंग्रेजी राज्य के विरुद्ध बगावत नहीं थी ? इसी से हम उस महान् देशोद्धारक महर्षि को "बागी दयानन्द", "भारतभाग्यविधाता दयानन्द" छाती तानकर कहते हैं।

महर्षि चाहते थे कि तत्कालीन बंगाली नेता देवेन्द्रनाथ तथा केशवचन्द्र सेन आदि-आदि देशोद्धार के कार्य में सहायक बनें, वेदों को ईश्वरीय ज्ञान स्वीकार करें किन्तु वे सब ईसाइयत की ओर जा चुके थे। अत एव आज कहीं पर भी ब्राह्मसमाज, प्रार्थनासमाज, देवसमाज का नाम तक नहीं है। अत एव ११वें समुल्लास के अन्त में ब्राह्मसमाज की आलोचना करते हुए महर्षि ने लिखा था :- "इन लोगों में स्वदेशभक्ति बहुत न्यून है। ईसाइयों के आचरण बहुत से लिए हैं। खानपान विहारादि के नियम भी बदल दिये हैं। अपने देश की प्रशंसा व पूर्वजों की बड़ाई करना तो दूर रहा, उसके स्थान में पेटभर निन्दा करते हैं। व्याख्यानों में ईसाई आदि अंग्रेजों की प्रशंसा भरपेट करते हैं :- ब्रह्मादि ऋषियों का नाम भी नहीं लेते। वेदों की प्रतिष्ठा तो दूर परन्तु निन्दा करने से भी पृथक् नहीं रहते।"

इन परिस्थितियों में महर्षि मुम्बई पहुंचे। उन्होंने वेदप्रचार तथा सामाजिक सुधार कार्य को कार्य करना था। ऐसा समाज बनाने का उनका विचार चल रहा था, कई लोगों ने उस समाज का नाम **"सत्यसमाज"** भी सुझाया था। २४ नवम्बर १८७४ से ही यह परामर्श चल रहा था। अनेक अनुयायी शीघ्र ही ऐसे समाज के सदस्य बनना चाहते थे। उनमें सेठ मथुरादास, सेवकलाल, करसनदास, गिरधारीलाल, दयालदास कोठारी बी०ए० एल-एल० बी० आदि ने आर्यसमाज स्थापित करने का संकल्प ले लिया था।

आर्यसमाज की स्थापना :-

महर्षि ने इस समाज का नाम **"आर्यसमाज"** रक्खा, जो सबने स्वीकार किया। उस समय वहां १०० लोग उपस्थित थे। महर्षि ने शुरू में राजमान्य राजश्री पानाचन्द आनन्द जी पारीख को आर्य

के नियमों का प्रारूप तैयार करने को नियत किया। उन्होंने वह तैयार करके महर्षि के सामने प्रस्तुत किया, महर्षि ने उसमें उचित संशोधन कर दिया।

तब चैत्र शुक्ला तिथि ५ शनिवार, संवत् १९३२ एवं १० अप्रैल १८७५ एवं र वी उल् अव्वल सन् १२९२, हिजरी एवं शाके शालिवाहन १७९५ एवं फसली सन् १२८३ एवं सन् खुर्दादसन् १२८४ पारसी, को गिरगाव रोड में प्रार्थनासमाज के मन्दिर के निकट डा० माणिक जी की बागबाड़ी में सायंकाल के ५ बजे एक सभा की गई जिसमें **आर्यसमाज** स्थापित किया गया। जैसे कि शुरु में २८ नियम प्रस्तुत किये गये थे, बाद में १८७७ में लाहौर पंजाब में उनमें संशोधन करके १० नियम ही रक्खे गए थे। ये सुनहरी नियम विश्वशान्ति के आधार हैं और अन्त में कविवर प्रकाश जी के शब्दों में आर्यसमाज की उपलब्धियां सुनिये :-

होता न आर्यसमाज यहां तो कौन हमें सन्मार्ग दिखाता।
तर्क कसौटी से कौन हमें फिर सत्यासत्य का बोध कराता।
कौन कहो, फिर घोर घमण्डियों धूर्त पाखण्डियों के गढ़ ढाता।
एक अखण्ड अगोचर ईश की कौन हमें भक्ति सिखलाता।
कौन सनातन वेद के अर्थ सही, शुचि यज्ञ महत्त्व सिखाता।
इन पादरी मुल्लों के चंगुल से प्रियराम की सन्तति को कौन बचाता।
कौन निराश्रित दीन-दु:खी विधवा अनाथों की धीर बन्धाता।
हम कीचड़ में ही पड़े रहते, शुचि हीरा हमें फिर कौन बनाता।
होता ना आर्यसमाज यहां तो कौन कहो नव जागृति लाता।
आर्यसमाज के पुत्र हैं हम और आर्यसमाज हमारी माता।

यह देखो, इधर से यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद कितने जोर से नारों की आवाज सुनाई दे रही है :- **आर्यसमाज अमर रहेगा। वेद की ज्योति जलती रहेगी। ओं का झण्डा ऊंचा रहेगा। महर्षि दयानन्द की जय हो।**

सम्पादक के नाम पत्र

आपका लेख आर्यसमाज को समर्पित एक महान् संन्यासी (स्वामी विद्यानन्द सरस्वती) २८ फरवरी १९९७ के सर्वहितकारी पत्रिका पृष्ठ-१ पर पढ़ा बहुत ही सराहनीय है पढ़कर बहुत प्रसन्नता हुई। पूज्य स्वामी जी महाराज के बारे में आपने बहुत ही गूढ़ बातें लिखी हैं जिसका हर एक को ज्ञान नहीं है। इस लेख में उनकी जन्मतिथि ३० अगस्त १९१४ लिखी हुई है उनको पीछे जन्मदिन पर अभिनन्दन ग्रन्थ देहली में भेंट किया गया उस ग्रन्थ में उनकी जन्मतिथि पृष्ठ १ पर "मनीषी की जीवनयात्रा" के लेख में २० जनवरी १९१४ लिखी हुई है। मैं सन् १९५४ से लगभग १५ साल आर्य कालेज पानीपत का सेकेट्री रहा हूं। अब भी उनके दर्शन होते रहते हैं। शराबबन्दी, गोरक्षा के बारे में कई पुस्तकें लिखी हैं मैंने तपोवन देहरादून में यह पुस्तकें दी थी। जहां कभी भी भूल हो संशोधन हो जाये तो अच्छी बात है क्षमा चाहता हूं।

भवदीय : रामगोपाल एडवोकेट

ऋषि दयानन्द से पूर्व भारत की दुर्दशा

एक समय अज्ञान के बादल इस भारत पर छाये थे।
अन्धकार में स्वार्थियों ने बहुविधि लाभ उठाये थे।
वेदज्ञान बिन ईशभक्ति प्रतिमा पूजन को माना था।
ईश्वर का सच्चा स्वरूप भी लोगों ने नहीं जाना था।
अवतारवाद के धोखे में पोपों ने सबको फांसा था।
सच पूछो तो भक्तजनों को दिया उन्होंने झांसा था।
गुरुडम और सम्प्रदायवाद ने देशद्रोह सिखलाया था।
धर्मभीरुता ने यहां प्रलयकारी दृश्य दिखाया था।
झूठा गर्व जाति का तप और श्राद्ध-तीर्थ फैले झूठे।
पुरोहितों ने यजमानों और कितने ही चेले लूटे।
कल्पित स्वर्ग-नर्क बतला ना जाने कितने दान लिये।
कितने वैतरणी पार किये या प्रवंचकों को दान दिये।
पीकर भंग-शराब मन्दिरों में व्यभिचार चलाया था।
मद्य-मांस का सेवन कर एक वाममार्ग फैलाया था।
भूत-प्रेत का भय दिखला जन यहां डराये जाते थे।
जन्त्र-तन्त्र गंडा-डोरा ताबीज बनाये जाते थे।
नवग्रहों की पूजा कर पाखण्ड दिखाये जाते थे।
कर्मकाण्ड सब वेदों के विपरीत कराये जाते थे।
लाखों अछूत भारत के पूत यहां पर ठुकराये जाते थे।
इसलिए नित्य यहां ईसाई और यवन बनाये जाते थे।
विपरीत वेद के बहुविवाह भारत में रचाये जाते थे।
यहां बालविवाह और वृद्धविवाह सर्वत्र कराये जाते थे।
विधवाविवाह पर रोक लगी उन्हें पतित बनाया जाता था।
गाली और ताइने दे देकर उन्हें नित्य सताया जाता था।
नारी का जीवन नर्क बना अपमान शूद्र का होता था।
विद्याधिकार छीना उनका सम्मान कहीं नहीं होता था।
निर्दोष पशु गौ-अश्व आदि यज्ञों में कटवाये जाते थे।
इस भांति न जाने कितने ही यहां पाप कमाये जाते थे।
ऋषि दयानन्द ने भारत में जब वेदप्रचार किया भारी।
पन्थाई घबराये सारे तब वैदिक धर्म किया जारी।
वेदज्ञान का सूर्य उगा है टिक न सकेगा तम अज्ञान।
आर्यजाति के शिक्षित जन को हुई असत्-सत् की पहचान।
भूमण्डल पर धीरे-धीरे फैल रहा है आर्यसमाज।
'कविराज' एक दिन आवेगा फिर होगा यहां वैदिकराज।

—कविराज सी० आर० शर्मा शास्त्री
विद्यावाचस्पति ए० एस० वी०

दिल्ली में आर्यसमाज का वानप्रस्थ दीक्षा समारोह सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सिद्धान्त रक्षिणी सभा की ओर से आर्यसमाज, आर्यनगर पहाड़गंज नई दिल्ली में पन्द्रह दिवसीय राष्ट्रीय शिविर लगाकर वानप्रस्थ दीक्षा समारोह में तीन व्यक्तियों को दीक्षा दिलाई गई।

इसके संयोजक श्री आर्यमुनि जी, आचार्य भद्रकाम वर्णी ने जिसमें भाग लिया सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, स्वामी सत्यपति जी, स्वामी मुनीश्वरानन्द जी, स्वामी स्वरूपानन्द जी, डा० महेश वेदालंकार, डा० शिवकुमार शास्त्री, श्री धर्मपाल जी आर्य आदि विद्वान् व नेताओं ने भाग लिया।

—ब्र० भवभूति आर्य

२०४ ईसाई वैदिक धर्म में दीक्षित

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से चल रहे धर्म रक्षा अभियान के अन्तर्गत श्री महात्मा प्रेमप्रकाश (धुरी) की अध्यक्षता में ग्राम कुमुण्डे (बलांगीर) में २०४ ईसाई बन्धुओं ने श्रद्धामय वातावरण में यज्ञ में आहुति दे यज्ञोपवीत लेकर वैदिक धर्म में प्रवेश पाया। श्री धर्मानन्द जी की प्रेरणा पर गुरुकुल के उपाचार्य श्री स्वामी व्रतानन्द जी ने इस आयोजन की व्यवस्था की इसका संचालन श्री पं० विशिकेशन जी शास्त्री ने बहुत व्यवस्थित ढंग से किया श्री आशाराम जी के भजनोपदेश तथा धनुर्विद्या का प्रदर्शन बहुत प्रभावशाली रहा। इस अवसर पर कुमुण्डे घुसरापालि तथा जामपालि में वैदिकधर्म के विषय में विद्वानों के प्रवचन हुए। —पीताम्बरप्रसाद कृते प्रधान उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से अकाल सहायता प्रारम्भ

उड़ीसा का कालाहाण्डी जिला वैसे ही अभावग्रस्त है फिर अनावृष्टि होने से हालात दयनीय हो जाती है, इस वर्ष उड़ीसा के कई जिले सूखाग्रस्त हैं, अत: उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा ने अधिक से अधिक सहायता असहाय लोगों को देने का विचार बनाया है, तदनुसार २६ दिसम्बर को गुरुकुल आश्रम आमसेना में सहायता केन्द्र खोल दिया गया है। उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री स्वामी धर्मानन्द जी तथा खटियार रोड पुलिस स्टेशन के अधिकारी ने आस पास के १५ गांव के लगभग ५०० व्यक्तियों को वस्त्र प्रदान कर सहायता केन्द्र प्रारम्भ किया, यह सहयोग कार्य निरन्तर अलग-अलग क्षेत्रों में किया जायेगा और आगामी फरवरी से असहाय वृद्धों को प्रतिमास अन्न की सहायता भी दी जायेगी, आशा है धर्मप्रेमी सज्जन इस कार्य में अधिक से अधिक सहयोग देकर पुण्यलाभ करेंगे।

—विशिकेशन शास्त्री
मन्त्री उत्कल आर्य प्र० सभा

कन्या गुरुकुल आमसेना में आर्य वीरांगना शिविर सम्पन्न

परिवार एवं समाज के निर्माण में महिलाओं का विशेष स्थान है। इनके मूर्ख एवं पतित होने से सारा समाज बिगड़ जाता है। दुर्भाग्यवश आज भोगवादी संस्कृति ने महिलाओं को भोग की वस्तु मान लिया है। जबकि इनका चरित्रवान् एवं मान-सम्मान करना आवश्यक है। इसी भावना को लेकर कन्या गुरुकुल आमसेना में आचार्य वीरांगना शिविर २५-३१ दिसम्बर तक सम्पन्न हुआ। इसमें लगभग १०० कन्याओं ने शारीरिक एवं बौद्धिक प्रशिक्षण प्राप्त किया। कन्याओं ने इस शिविर से प्राप्त ज्ञान को आगे फैलाने का संकल्प लिया, इस शिविर का संचालन सार्वदेशिक आर्य वीर दल के वरिष्ठ शिक्षक श्री हरिसिंह तथा उत्कल आर्य वीर दल संचालक श्री कुंजदेव मनीषी ने किया।

—स्वामी व्रतानन्द सरस्वती उपाचार्य गुरुकुल आश्रम आमसेना

सत्यार्थप्रकाश महोत्सव, १९९७ सम्पन्न

स्वामी दयानन्द यदि १० वर्ष और जीवित रहते तो लोग अंधविश्वास एवं कुरीतियों को भूल जाते। —भैरोसिंह शेखावत

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती ३१ लाख रुपये से सम्मानित : नवलखा महल के पुनरुद्धार हेतु ४० लाख रुपये का कोष स्थापित : एक समारोह में एकत्रित यह राशि अपूर्व : प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु

मनमोहनकुमार आर्य

राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री भैरोसिंह शेखावत ने आह्वान किया कि सत्यार्थप्रकाश का सन्देश इस नवलखा महल से पूरी दुनिया में पहुंचना चाहिए। उन्होंने कहा कि सत्यार्थप्रकाश का निरन्तर पाठ एवं इसकी एक-एक बात का विश्लेषण होना चाहिए। मुख्यमन्त्री ने श्रोताओं को कहा कि वह स्वामी दयानन्द से कुरीतियों से झूझने की प्रेरणा लें। आगे उन्होंने कहा कि सत्यार्थप्रकाश से लाभ तब होगा जब इसका जन-जन में प्रचार होगा। श्री शेखावत उदयपुर में सत्यार्थप्रकाश न्यास एवं आर्यसमाज सान्ताक्रुज, मुम्बई के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित स्वामी विद्यानन्द सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में बोल रहे थे। समारोह की अध्यक्षता हनुमानप्रसाद चौधरी एवं संचालन प्रसिद्ध आर्यनेता कैप्टेन देवरत्न आर्य ने किया। अपने भाषण के आरम्भ में श्री शेखावत ने नवलखा महल के पुनरुद्धार कार्य को देखकर प्रसन्नता व्यक्त की तथा कहा कि वह बचपन में वैदिक पाठशाला में पढ़े हैं जहां प्रतिदिन सन्ध्या एवं साप्ताहिक यज्ञ होता था। उन्होंने बताया कि उस विद्यालय में सत्यार्थप्रकाश व्याख्यानमाला भी चलती थी। आपने कहा कि आर्यसमाजियों की ही तरह वह भी संस्कारी हैं। समाज में ऊंच-नीच तथा सामाजिक कुरीतियों का उल्लेख कर मुख्यमन्त्री ने कहा कि यदि स्वामी दयानन्द १० वर्ष और जीवित रहते तो लोग इन्हें न केवल खत्म ही कर देते अपितु भूल ही जाते। स्वामी दयानन्द एवं आर्यसमाज के परिप्रेक्ष्य में भी शेखावत ने कहा कि समाज निष्ठा से मार्गदर्शन करनेवाले मनीषियों का अनुकरण करने के लिए तैयार हैं उन्होंने लोगों का मन परिवर्तन करने की आवश्यकता बताई।

श्री शेखावत ने कहा कि नवलखा महल ही पर्याप्त नहीं है, वह अन्य आवश्यकतायें भी पूरी करेंगे। उन्होंने लोगों को कहा कि वह महल को ऐसा रूप दें जिससे महल में प्रविष्ट होते ही सत्यार्थप्रकाश की भावना मन में पैदा हो। देश के कोने-कोने से आये लगभग १५ हजार लोगों के जनसमूह को उन्होंने कहा कि उन्होंने अपना कर्त्तव्य पूरा किया है, किसी को कृतज्ञ नहीं किया। आगे भी जब जो सहयोग आर्यसमाज चाहेगा, उसे वह पूरा करेंगे।

इससे पूर्व मुख्यमन्त्री ने आर्यजगत् के शिरोमणि, मनीषी, अपरिग्रहवर्ती, सत्यासत्य मीमांसक स्वामी विद्यानन्द सरस्वती को ३१ लाख रुपये का चैक, एक ट्राफी तथा अभिनन्दन पत्र भेंट किये। स्वामी विद्यानन्द जी ने अपने धन्यवाद में कहा कि आर्य भारत में मूल निवासी हैं जबकि इसके विपरीत, राजस्थान के स्कूलों में पढ़ाया जाता है कि आर्य बाहर से आये थे। इसके दुष्प्रभाव का उल्लेख कर स्वामी जी ने पाठ्यक्रम में संशोधन की मांग की। मुख्यमन्त्री ने कहा कि वह पुस्तकों को स्वयं पढ़कर निर्णय करेंगे। स्वामी

जी के सम्मान से पूर्व मुम्बई के विद्वान् डा० सोमदेव शास्त्री ने उनका विस्तृत परिचय दिया तथा आर्यसमाज सान्ताक्रुज मुम्बई के मन्त्री संगीत शर्मा ने स्वामी जी को प्रस्तुत अभिनन्दन पत्र पढ़ा। सम्मान समारोह के संयोजक कैप्टेन देवरत्न आर्य ने श्रोताओं को सूचित किया कि यह अभिनन्दन पत्र देहरादून के मनमोहन आर्य द्वारा तैयार हुआ है। समारोह एवं ट्रस्ट के मन्त्री श्री गोपीलाल एरन ने पुष्पहार से उनका सम्मान किया।

कैप्टेन देवरत्न आर्य ने कहा कि नवलखा महल आर्यसमाज के इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण अंग है। महल के पुनरुद्धार एवं विकास के लिए बनाई गई ५१ लाख रुपये की योजना की सूचना देते हुए उन्होंने बताया कि ४० लाख रुपया एकत्र कर लिया गया है। प्रसिद्ध अन्वेषक आर्यविद्वान् प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु के अनुसार किसी एक कार्यक्रम में एकत्रित ४० लाख रुपये की यह राशि आर्यसमाज के इतिहास में सर्वाधिक है। स्वागत भाषण में प्रथम आर्यसमाज, काकड़वाड़ी के प्रधान झाऊलाल शर्मा ने मुख्यमन्त्री को देवपुरुष कहा। उन्होंने कहा कि कपड़े को काटकर सीलने की ही तरह मण्डन से पूर्व खण्डन आवश्यक है। सत्यार्थप्रकाश के अन्तिम चार अध्यायों को उन्होंने सत्यार्थप्रकाश की शोभा बताया। समारोह के अध्यक्ष हनुमानप्रसाद चौधरी ने न्यास का परिचय देते हुए न्यास की आवश्यकताओं का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि न्यास का पुनरुद्धार ही उनके जीवन का एकमात्र लक्ष्य है। सार्वदेशिक सभा के मन्त्री स्वामी सुमेधानन्द, कार्यकर्त्ता प्रधान स्वामी धर्मानन्द सरस्वती सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने स्वामी विद्यानन्द जी का पुष्पहार से सम्मान किया। समारोह में मुख्यमन्त्री श्री भैरोसिंह शेखावत का भी सम्मान किया गया।

समारोह के प्रथम दिन २६ फरवरी को नवलखा महल के अन्दर परिसर में यज्ञ एवं ध्वजारोहण के पश्चात् स्वामी विद्यानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में सत्यार्थप्रकाश सम्मेलन हुआ। सम्मेलन में सांसद रासासिंह, झाऊलाल शर्मा, मनुस्मृति के भाष्यकार डा० सुरेन्द्रकुमार (रोहतक) सहित अनेक विद्वानों के प्रवचन हुए। अध्यक्षीय भाषण में स्वामी विद्यानन्द ने कहा कि सत्यार्थप्रकाश में सिद्ध किया गया है कि आर्य कहीं बाहर से नहीं आये। आर्यों को उन्होंने भारत का मूल निवासी बताकर कहा कि आर्यों ने ही विश्व के सभी देशों को बसाया है। उन्होंने मांग की कि संविधान में संशोधन कर देश का नाम "आर्यावर्त्त" किया जाये। स्वामी दयानन्द के व्यक्तित्व की चर्चा करते हुए स्वामी जी ने कहा कि उन्होंने हर समस्या के मूल पर आक्रमण किया और सत्य व यथार्थ को स्थापित करने का प्रयास किया। "दयानन्द की बात मानी होती तो कश्मीर का हिस्सा पाकिस्तान में नहीं जाता।" सरदार पटेल के इस वाक्य का उल्लेख कर स्वामी जी ने माउण्ड बेटन के कश्मीर को पाकिस्तान का अंग बनाने की दिशा में किये गये उनके कुत्सित प्रयासों पर प्रकाश डाला। स्वामी जी ने कहा कि काश्मीर समस्या का मूल, सत्यार्थप्रकाश के छठे समुल्लास की शिक्षा के विरुद्ध एक विदेशी राजनयिक माउंटबेटन को गवर्नर जनरल बनाने की गलती थी। आचार्य वेदव्रत मीमांसक ने अपने प्रवचन में कहा कि संसार की हर बात का समाधान सत्यार्थप्रकाश में मिल जाता है। इस सम्मेलन के बाद नवलखा महल में महर्षि दयानन्द के जीवन की घटनाओं पर आधारित एक भव्य **"चित्र दीर्घा"** का उद्घाटन सम्भागीय आयुक्त श्री के० ए० मणि ने किया।

शहीद सम्मेलन में पं० लेखराम एवं रामप्रसाद बिस्मिल को स्मरण कर डा० भवानीलाल भारतीय ने कहा कि शहीदों का गुणानुवाद ही पर्याप्त नहीं है। इस सम्मेलन के मुख्य वक्ता प्रा० राजेन्द्र जिज्ञासु,

अबोहर ने शहीदों को भूलने की प्रवृत्ति पर पीड़ा व्यक्त की। ओजस्वी भाषण में उन्होंने कहा कि पं० लेखराम को इतिहास का सबसे अधिक ज्ञान था। पं० लेखराम के साहस एवं शास्त्रार्थों के लोहमर्षण उदाहरण प्रस्तुत कर आर्यसमाज के प्रमुख विद्वानों के जीवनी लेखक एवं तड़प के धनी प्रा० जिज्ञासु ने उन्हें **प्रतिष्ठा का पर्वत** बताया। लेखराम जी के फारसी एवं उर्दू ज्ञान का उल्लेख कर ओजस्वी वक्ता ने कहा कि लेखराम जी ने मिर्जा गुलाम अहमद के चुनौतीपूर्ण पद्यात्मक आक्रमणों का उसी छन्द में उत्तर देकर अपने विपुल फारसी व उर्दू ज्ञान का परिचय दिया था। उन्होंने पं० लेखराम की वैदिक धर्म के प्रति अटूट निष्ठा, उन्हीं के शब्दों में :- **"चाहे कोई मुझे काट दे, चाहे जीवित जला दे, परन्तु मैं वेद मार्ग से नहीं हटूंगा।"** में प्रस्तुत की। अपने भाषण के आरम्भ में श्री जिज्ञासु ने समारोह को ऐतिहासिक अवसर बताकर ग्यारह एवं इकतीस-इकतीस लाख रुपये की धनराशि से स्वामी ओमानन्द, स्वामी सर्वानन्द एवं स्वामी विद्यानन्द जी का सम्मान करने एवं समाज को इन प्रभूत साधनों को उपलब्ध कराने के लिए कैप्टेन देवरत्न आर्य को आर्यसमाज का गौरव बताया।

राष्ट्ररक्षा सम्मेलन के अध्यक्ष कैप्टेन देवरत्न आर्य ने कहा कि आर्यसमाजों में शहीदों के चित्र लगाये जाने चाहियें। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज एक ऐसी मशीन है जिसमें बुरा आदमी अच्छा बनाया जा सकता है। अपने पक्ष में श्री आर्य ने अमीचन्द एवं स्वामी श्रद्धानन्द जी के नामों का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि विगत १०० वर्षों में ऐसे लोग भी आर्यसमाज में आये, जो अच्छों को बुरा बताते हैं। उनसे सतर्क रहने की श्री आर्य ने आवश्यकता बताई।

कैप्टेन देवरत्न आर्य ने भारत द्वारा पाकिस्तान एवं चीन के साथ हुए युद्धों की पृष्ठभूमि एवं भारत को हुई हानि की विस्तार से चर्चा एवं समीक्षा की। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द देशरक्षा के लिए एक भाषा एवं एक धर्म को आवश्यक मानते थे। श्री आर्य ने कहा कि आर्यसमाज जातिवाद में फंस गया है। इस पर रोष व्यक्त कर उन्होंने एक जाति बनाने की अपनी इच्छा व्यक्त की। कैप्टेन आर्य ने कहा कि देश की भाषा एक होनी चाहिए। अवतारवाद का उल्लेख कर उन्होंने कहा कि आज देश में ६०० जीवित भगवान् हैं एवं मूर्तिपूजा का उल्लेख कर उन्होंने इससे समाज को होनेवाली हानि पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि एक पूजा पद्धति होने पर ही राष्ट्र की रक्षा हो सकती है। कैप्टेन देवरत्न आर्य ने कहा कि मनुष्य को मनुष्य बनाने के लिए स्वामी दयानन्द का जीवन बीता। आर्यसमाज की अपनी एक अलग पहचान रही है। वह पहचान अब खोती जारही है। बच्चों को देशभक्त बनाने का आह्वान कर प्रख्यात आर्यनेता ने अपने व्याख्यान को विराम दिया।

अपने प्रवचन में झज्जर के स्वामी ओमानन्द जी ने कहा कि आर्यसमाज का इतिहास बलिदानियों का इतिहास है। स्वामी जी ने कहा कि देश व धर्म की रक्षा के लिए जितने बलिदान आर्यसमाज ने दिए हैं उतने अन्य किसी ने नहीं दिये। आयोजन में ब्र० आर्यनरेश एवं स्थानीय विधायक श्री सनाढ्य ने भी विचार व्यक्त किये।

२५ फरवरी को दिल्ली से चेतक एक्सप्रेस से उदयपुर के लिए प्रस्थान के अवसर पर गाड़ी के समारोह में भाग लेनेवाले आर्यों की भारी संख्या एवं रेल के प्रत्येक डिब्बे में भजनों एवं सामूहिक सन्ध्या ने वेद एवं अध्यात्म सरिता प्रवाहित कर दी। आर्यसमाज के क्षेत्र में विगत २८ वर्षों से सक्रिय जीवन में ऐसा उत्साह, रंग, रस एवं श्रद्धा पहली बार देखने को मिली।

—मनमोहनकुमार आर्य
१६६ ब्लाक दो, चुक्खूवाला, देहरादून-२४८००१

निष्कासन का उत्तर आर्य ने उदयपुर में दे दिया

२६-२७-२८ फरवरी को उदयपुर के गुलाब बाग स्थित नवलखा महल में सम्पन्न सत्यार्थप्रकाश एवं अभिनन्दन समारोह अपने आपमें अभूतपूर्व रहा। कई वर्ष के पीछे आर्यजनता में ऐसा उत्साह देखने को मिला।

२६ फरवरी के अभिनन्दन समारोह में १०-१२ हजार आर्य नरनारी जब कैप्टेन देवरत्न आर्य के नेतृत्व में तुमुल जयघोष द्वारा अपने पूज्य संन्यासी सन्तशिरोमणि श्री स्वामी विद्यानन्द जी एवं राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्री भैरोसिंह शेखावत का अभिनन्दन कर रहे थे तो आर्यजनता में उत्साह की तरंग आई हुई थी। आर्यजनता रुपयों की वर्षा कर रही थी, ३१ लाख रुपये के स्थान पर लगभग ५१ लाख रुपये संग्रहीत हुए। उस स्वागत समारोह में जहां देश के सभी प्रान्तों से आर्यजनता पधारी वहां सैकड़ों साधु-संन्यासी वानप्रस्थी और विद्वान् भी मंच पर उपस्थित थे। पूज्य स्वामी ओमानन्द जी, पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी, पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी, श्री प्रो० शेरसिंह आदि प्रमुख व्यक्तियों का भी आर्यजनता ने हार्दिक स्वागत किया। समारोह पूज्य स्वामी विद्यानन्द जी के करकमलों द्वारा ओम् पताका उत्तोलन के साथ प्रारम्भ हुआ। तत्पश्चात् सत्यार्थप्रकाश सम्मेलन मनाया गया। मध्याह्नोत्तर भव्य शोभायात्रा नगर के प्रमुख स्थानों से निकाली गई इसके स्वागत के लिए वहां की जनता ने सैकड़ों हार बनाये। रात्रि में मनुस्मृति सम्मेलन तथा अगले दिन रात्रि में शहीद सम्मेलन सार्व० सभा के कार्यकर्त्ता प्रधान श्री धर्मानन्द जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुये। इस शहीद सम्मेलन में जब ओजस्वी वक्ता श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु जी ने शहीदों के त्याग से सोमनाथ मरवाह की करतूतों की चर्चा की तो उपस्थित जनता भावविह्वल हो उठी। इस पर भी कैप्टेन देवरत्न जी ने कहा निष्कासन का उत्तर तो आर्यजनता दे ही रही है कि आर्यजनता के हृदय में कौन निष्कासित है। इस प्रकार तीनों दिनों का यह समारोह भी चौ० हनुमानप्रसाद जी की अध्यक्षता में श्री कै० देवरत्न जी के संयोजकत्व में इसके स्वागताध्यक्ष श्री झाऊलाल जी शर्मा एवं यज्ञ के ब्रह्मा श्री डा० सोमदेव जी (मुंबई) श्री डा० सुरेन्द्रकुमार जी, श्री धर्मपाल जी, श्री धर्मजित् जिज्ञासु अमेरिका आदि का मार्गदर्शन भी जनता को मिलता रहा।

—पीताम्बरप्रसाद आर्य,
कार्यालयाध्यक्ष उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा

सोमनाथ मरवाह का कृत्य निन्दनीय

१६ मार्च को साप्ताहिक सत्संग के पश्चात् आर्यसमाज बस्ती शेख जालन्धर की अन्तरंग सभा की एक बैठक समाज प्रधान श्रीमान् भाई रामकृष्ण जी एडवोकेट की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई जिसमें सोमनाथ मरवाह के उस कृत्य की घोर निन्दा की गई जो समाचार उसने सार्वदेशिक साप्ताहिक पत्रिका में छपवाया कि स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती संचालक गुरुकुल झज्जर व प्रो० शेरसिंह पूर्व केन्द्रीय मन्त्री तथा सात और मूर्धन्य आर्यनेताओं को आर्यसमाज से निष्कासित कर दिया गया है। प्रस्ताव में कहा गया है कि सार्वदेशिक सभा के संविधान के अनुसार यह व्यक्ति सोमनाथ मरवाह तो सभा का विधिवत् प्रतिनिधि भी नहीं तो फिर कार्यकर्त्ता प्रधान काहे का और फिर उस द्वारा विधान की जिस धारा-१३ का उल्लेख किया गया है उसमें ऐसा कुछ भी अंकित नहीं है।

प्रस्ताव में सार्वदेशिक सभा के प्रधान से प्रार्थना की गई है कि उस सोमनाथ मरवाह के विरुद्ध उचित कार्यवाही तुरन्त की जाए ताकि आर्यसमाज के संगठन को फिर कोई और मरवाह निर्बल करने का दुःसाहस न कर सके, क्योंकि निष्कासन का निर्णय लेने का अधिकार केवल स्थानीय आर्यसमाज को ही है किसी सोमनाथ या भैरोनाथ को नहीं।

—स० भारद्वाज प्रबन्धक आर्यसमाज
१७-३-९७ घास मण्डी, बस्ती शेख, जालन्धर-२

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में शहीदी दिवस सम्पन्न

२३ मार्च राजगुरु, सुखदेव, भगतसिंह के शहीदी दिवस पर गुरुकुल के सभागार में सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर शहीदों की याद में गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता चौ० हुकमसिंह जी राठी मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ ने की तथा मंच संचालन श्री दिलीपकुमार मलिक अध्यापक गुरुकुल भैंसवाल द्वारा किया गया। गायन प्रतियोगिता में गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ से ब्र० सत्यप्रकाश, ब्र० सुनील आर्य, गुरुकुल फतेहाबाद के ब्र० राजेन्द्र आर्य तथा श्री विजयपाल शास्त्री आदि ने शहीदों की याद में देशभक्ति के गीत गाये। आर्यसमाज फरीदाबाद से आये श्री रोशनलाल आर्य ने भी अपने विचार रखे। अध्यक्षीय भाषण देते हुए श्री राठी जी ने सरदार भगतसिंह के जीवन की अनेक घटनाएं बताते हुए युवकों को आह्वान किया कि महापुरुषों से प्रेरणा लें।

अन्त में गुरुकुल फतेहाबाद के आचार्य श्री हरिसिंह भूषण, गुरुकुल आर्यनगर हिसार के श्री रमेश शास्त्री, गुरुकुल भैयापुर लाढ़ौत के श्री सुरेन्द्र शास्त्री, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के श्री गोपालकृष्ण शास्त्री तथा उपस्थित सभी गुरुकुलों के ब्रह्मचारियों ने दो मिनट का मौन रखकर शहीदों को श्रद्धांजलि दी।

शोक समाचार

मेरी पूज्या स्नेहमयी माता श्रीमती जानकीदेवी के आकस्मिक देहावसान के अवसर पर इस दुःख की वेला में जिन भाई-बहिनों एवं आर्यबन्धुओं ने आकर या फोन और पत्रों द्वारा सहानुभूति एवं आत्मीयता प्रकट की और अपना प्यार दर्शाया है। एतदर्थ आप सब का हृदय से धन्यवादी हैं।

—सोमनाथ

महामन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा, गुड़गांव

आर्य वीर दल हांसी की गतिविधियां

हांसी २ मार्च ९७— आर्य वीर दल हांसी द्वारा दिनांक १-२ मार्च ९७ को वैदिक पर्व (सीताष्टमी) सीता जी का जन्म दिवस एवं चतुर्थ वार्षिकोत्सव बड़ी धूमधाम एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया जिसमें प्रातः यज्ञ, भजन तथा प्रवचन, दोपहर व रात्रि के कार्यक्रम भी आयोजित किये गये। इस कार्यक्रम की संयुक्ताध्यक्षा श्रीमती कैलाशदेवी आर्या तथा भान्वती आर्या ने की। जिन्हें आर्य वीर दल द्वारा सत्यार्थप्रकाश का ग्रन्थ भेंट किया गया।

इस शुभ अवसर पर प्रज्ञाचक्षु पं० रामसेवक जी संगीताचार्य हमीरपुर (उत्तरप्रदेश), श्री वेदपाल आर्य हरयाणा वेदप्रचार मण्डल हांसी, जयदेव शास्त्री, पुरोहित आर्यसमाज बड़ी छानी (राजस्थान), महात्मा हरिदेव जी व अन्य विद्वानों ने अपने-अपने विचार रखे।

अन्त में कार्यक्रम के संयोजक एवं आर्य वीर दल के संचालक वैदिक विद्वान् श्री भरतलाल शास्त्री ने महर्षि दयानन्द व वैदिक धर्म की जय के घोष के उद्घोषों से गुंजायमान करते हुए कार्यक्रम को सम्पन्न कराया। इसी के साथ आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मोत्सव भी मनाया गया। **—कर्मवीर प्रजापति**

मन्त्री आर्यसमाज जी० टी० रोड, हांसी

शोक प्रस्ताव

गुरुकुल प्रभात आश्रम के प्रथम वरिष्ठ उदीयमान स्नातक श्री वेदपाल जी के अचानक असामयिक निधन के समाचार से प्रभात आश्रम में शोक छा गया। इस अवसर पर एक शोकसभा की गई जिसमें आश्रम के आचार्य पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी ने उनकी अनेक विशेषताओं का वर्णन करते हुए कहा कि उनके निधन से प्रभात आश्रम की ही नहीं अपितु आर्यजगत् की महती क्षति हुई है जिसकी पूर्ति निकट भविष्य में सम्भव नहीं है। आचार्य जी ने विद्यार्थियों को उनकी भांति ही विद्यानुरागी बनने की प्रेरणा दी। परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

—अभयानन्द गुरुकुल प्रभात आश्रम

सर्वहितकारी ७ अप्रैल, १९९७
रजि० नं० P/RTK-४९

प्रेषक :-
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन
दयानन्दमठ, रोहतक

सेवा में :-
35 पुस्तकालयाध्यक्ष गुरुकुल कांगड़ी
विश्वविद्यालय हरिद्वार
(सहारनपुर उ. प्र.)

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ रजि० नं० P/RTK—४६ फोन :- ४०७२२

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री सहसम्पादक :- डा० सुदर्शनदेव आचार्य

वर्ष २४ अंक २३ ७ मई १९९७ वार्षिक शुल्क ५०) आजीवन शुल्क ५०१)

स्वामी रत्नदेव स्मृति विशेषांक

जन्म	परिवर्तिन संसारे मृतः को वान जायते।	पुण्यतिथि
जनवरी १९३३	स जातो येन जातेन देशो याति समुन्नतिम्।।	२१-४-९६

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ४६८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक से प्रकाशित।

स्वा० रत्नदेव जी ने संन्यास की दीक्षा ग्रहण करने से पूर्व श्रावणी पर्व पर गुरुकुल झज्जर में मुझसे नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा ग्रहण की थी। आर्यसमाज के कार्य के प्रचार-प्रसार के लिये अपनी जन्मभूमि में १२ वर्ष तक आर्य पाठशाला का संचालन किया। तत्पश्चात् १९६८ में गुरुकुल कुम्भाखेड़ा (हिसार) तथा १९७६ में कन्या गुरुकुल खरल (जीन्द) की स्थापना की। हिन्दी रक्षा आन्दोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया। गोरक्षा आन्दोलन में जेल-यात्रा की तथा वहीं स्वा रामेश्वरानन्द सरस्वती से संन्यास आश्रम की दीक्षा ली। तत्पश्चात् समाज-सुधार तथा गुरुकुल शिक्षा पद्धति के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य किये। शराबबन्दी आन्दोलन में मुझसे कन्धे-से-कन्धा मिलाकर धरना, प्रदर्शन और लाठियां खाकर वीर योद्धा की भांति लड़ते रहे। आज आर्यसमाज के ऐसे निष्काम सेवक दिखाई नहीं देते हैं। आर्यसमाज उनकी सेवाओं को कभी भुला नहीं सकेगा।

—ओमानन्द सरस्वती
प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि स्वा० रत्नदेव जी की पुण्यस्मृति में सर्वहितकारी पत्र का एक विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है। शराबबन्दी आन्दोलन में स्वामी जी महाराज के तथा उनके द्वारा स्थापित गुरुकुल कुम्भखेड़ा का विशेष योगदान रहा है। स्वामी जी नई पीढ़ी को चरित्रवान् तथा आत्मबली बनाने में जुटे रहे। आप द्वारा संस्थापित गुरुकुल कुम्भाखेड़ा तथा कन्या गुरुकुल खरल में आज वे सब सुविधायें उपलब्ध हैं जो एक शिक्षण संस्था को सुचारु रूप से चलाने के लिये आवश्यक हैं। विद्यार्थियों में शारीरिक तथा बौद्धिक विकास के साथ-साथ सुरापान जैसी घातक सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध आन्दोलन करने की भावना भी जागरित की जाती है। स्वामी जी का जन-जागरण, गुरुकुल शिक्षा पद्धति की सेवा तथा समाजसेवा आदि अनुकरणीय कार्य सदा स्मरणीय रहेंगे।

—प्रो० शेरसिंह
प्रधान, अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद्,
नई दिल्ली

स्वा० रत्नदेव सरस्वती की प्रथम पुण्य-तिथि के अवसर पर मैं उन्हें अपनी हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूं। सभा के साप्ताहिक पत्र सर्वहितकारी ने स्वामी जी की पुण्य स्मृति में विशेषांक प्रकाशित कर एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है। स्वामी जी वास्तव में तप, त्याग एवं साहस की प्रतिमूर्ति थे। आ.प्र. सभा हरयाणा को वरिष्ठ उपप्रधान के रूप में उनका सदा भरपूर सहयोग मिलता रहा। शराब आन्दोलन के द्वितीय सर्वअधिकारी के रूप में सभा के साथ मिलकर इस आन्दोलन में श्लाघनीय योगदान दिया। हरयाणा के पिछड़े हुये क्षेत्रों में छात्र और छात्राओं के पृथक्-पृथक् गुरुकुलों की स्थापना करके महर्षि के स्वप्न को साकार किया। ऐसे आदर्श तपस्वी संन्यासी समाज के लिये सदा ही अनुकरणीय बने रहेंगे।

—प्रो० सत्यवीर शास्त्री,
पूर्व सभामन्त्री, डालावास
(भिवानी)

स्वर्गीय स्वामी रत्नदेव जी की पुण्यतिथि के अवसर पर मैं उन्हें अपनी हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूं। पूज्य स्वामी जी आर्यजगत् के कर्मठ योद्धा थे, हरयाणा के शराबबन्दी आन्दोलन के वे अग्रणीय नेताओं में से एक थे। वे हर किसी के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर सामाजिक बुराइयों के खिलाफ हमेशा लड़ाई लड़ते रहे। उनके द्वारा संस्थापित गुरुकुल कुम्भाखेड़ा मेरे अपने जिले हिसार में पड़ता है। वहां के कई वार्षिकोत्सवों पर मुझे जाने का अवसर प्राप्त हुआ और मैंने देखा कि साधनों के अभाव में भी पूज्य स्वामी रत्नदेव जी महाराज की तपस्या व त्याग का परिणाम सामने था। वहां के गगनचुम्बी भवन विशाल खेल के मैदान व हृष्ट-पुष्ट ब्रह्मचारियों के चेहरे उनकी मेहनत का जीता-जागता प्रतिरूप थे। हिसार आर्यसमाज के वार्षिकोत्सवों पर उनकी दोनों ही वाटिकाओं कन्या गुरुकुल खरल व कुम्भाखेड़ा के छात्र-छात्राओं का व्यवहार स्वामी जी महाराज के उच्चतर ज्ञान व तपोनिष्ठा का स्पष्ट प्रतिबिम्ब था। उनकी कमी हमेशा राष्ट्र को खलती रहेगी। हम पूरी लगन व निष्ठा के साथ उनके कार्यों को आगे की ओर ले जायें, यही हमारी उनके प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि हो सकती है।

—चौधरी हरिसिंह सैनी,
प्रधान, आर्यसमाज,
नागौरी गेट, हिसार

सम्पादकीय

एक भावना-पत्र

डॉ० सुदर्शनदेव आचार्य

श्रद्धेय स्वामी रत्नदेव जी,

स्वर्गधाम !

सादर नमस्ते। आशा है आप परमात्मा की व्यवस्था से कुशलपूर्वक होंगे। यहां कुछ ऐसा देखा जा रहा है कि जो भी परमेश्वर द्वारा प्रतिपादित वैदिकधर्म की सेवा में समर्पित हो जाता है उसे परमात्मा अपने पास स्वर्गधाम शीघ्र ही बुला लेते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती आयु परीक्षा ५९/१०० अंक प्राप्त करके अपने महान् कार्य वेदभाष्य, चक्रवर्ती राज्य की स्थापना और संसार को आर्य बनाने का कार्य अधूरा छोड़कर मोक्ष-धाम चले गये। पं० लेखराम ने महर्षि दयानन्द के कार्य को पूरा करने का व्रत लिया था वे भी महर्षि दयानन्द के पावन-चरित के पन्ने लिखते-लिखते शत्रु के छुरे के वार से स्वर्ग सिधार गये। पं० गुरुदत्त विद्यार्थी ने महर्षि के मिशन को पूरा करने के लिये डी०ए०वी० शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की थी वे तो केवल आयु-परीक्षा में २६/१०० अंक प्राप्त करके स्वर्गधाम के पथिक बन गये।

यतिवर ! आपने भी उन्हीं महापुरुषों की श्रेणी में अपना नाम लिखाया था। वैदिकधर्म का दीवाना बनकर घर-परिवार के सुखों को छोड़कर, विषयों से मुख मोड़कर, समाजसेवा का पावन व्रत लिया था। इस पावन व्रत की साधना में आपने प्रथम गुरुकुल महाविद्यालय कुम्भाखेड़ा की स्थापना की। वहां कितने निर्धन मजदूर-किसानों के लाड़ले बेटों को अपनी गोदी में बैठाकर अपना विद्या-पुत्र बनाकर वेदामृत पयःपान कराया। कन्या गुरुकुल महाविद्यालय खरल की स्थापना करके कितनी ही अबोध बालिकाओं को अपनी विद्या-पुत्री समझकर विद्यामृत का प्याला पिलाया। समस्त हरयाणा के प्रत्येक घर को अपना घर समझकर द्वार-द्वार जाकर वेदों का नाद बजाया। कितने ही भटके हुये नौ-जवानों को अपथ से हटाकर वैदिकधर्म के सुपथ में दीक्षित किया।

महात्मन् ! आज आपकी दोनों शिक्षण संस्थायें आपके स्वर्गधाम चले जाने से अपने आपको अनाथ-सा अनुभव कर रही हैं। कभी-कभी तो यह भी विश्वास नहीं होता कि आप इस धरा को छोड़कर स्वर्गधाम चले गये हो। आपके उक्त पुत्र और पुत्रियां आपके पुनरागमन की बाट देखती रहती हैं किन्तु आपके स्वर्गधाम गमन को स्मरण करके पुनः अपने दैनिक कार्यों में लग जाती हैं। हां ! कभी-कभी आपने उक्त पुत्र और पुत्रियों तथा आपके मित्र एवं सहयोगी जनों को स्वप्न में दर्शन अवश्य हो जाते हैं। वे उसको अपने मन का अवलम्बन समझ रहे हैं।

भगवन् ! आप सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी और सर्वव्यापक हो। मेरा यह भावना-पत्र हमारे श्रद्धेय आत्मा के पास अवश्य भेज देना क्योंकि मेरे पास स्वर्गधाम में पत्र भेजने की व्यवस्था नहीं है और उस महान् आत्मा को नया सुन्दर चोला पहनाकर हमारे मध्य में पुनः भेजने की अवश्य कृपा करना।

आचार्यप्रवर ! हम आपकी शिक्षण-संस्थाओं के अधिकारी, आचार्य, शिक्षक, कर्मचारी तथा छात्र-छात्रायें आपके आदेशों का श्रद्धापूर्वक पालन करते रहेंगे और आपके अपूर्ण कार्य को सर्वतोभावेन पूर्ण करने में लगे रहेंगे।

२१-४-९७ ई०

निर्वाण दिवस

—सुदर्शनदेव आचार्य,

स० सम्पादक

श्री स्वामी वेदानन्द सरस्वती

श्री ब्रह्मचारी रत्नदेव जी स्कूल से मैट्रिक परीक्षा देकर आगे गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से अध्ययन करने की भावना से गुरुकुल झज्जर में आचार्य भगवान्देव जी के पास गये थे। मैं भी उस समय वहां अध्ययन के साथ-साथ गुरुकुल के संचालनार्थ प्रबन्ध-व्यवस्था आदि करता था। ब्रह्मचारी जी स्कूल शिक्षा से विमुख होकर महर्षि दयानन्द सरस्वती प्रदर्शित पाठविधि से वेदशास्त्रों के अध्ययन की प्रबल इच्छा मन में रखकर ही गुरुकुल में गये थे। वहां रहकर आपने नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा ली और आर्षपाठविधि से अष्टाध्यायी पढनी प्रारम्भ की किन्तु कुछ काल पश्चात् आप गुरुकुल झज्जर छोड़कर आगये।

वह आयु ही ऐसी थी जिसमें भावुक व्यक्ति अपनी भावनाओं के प्रवाह में बहकर एक स्थान पर प्रायः नहीं टिक पाता। आगे चलकर आपने समाजसेवा और वैदिक धर्मप्रचार का कार्य अति उत्कट अभिलाषा और लग्न से किया। नवयुवक और नवयुवतियों को शिक्षित करके आर्यराष्ट्र बनाने की भावना से पृथक्-पृथक् दो गुरुकुल खोलकर उनका संचालन किया।

ब्रह्मचर्य से सीधा संन्यास ग्रहण करके स्वामी रत्नदेव बने और जब आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपप्रधान बने तब स्वामी ओमानन्द जी की प्रेरणा से स्वामी वेदानन्द सरस्वती नाम धारण किया।

जीवन के अन्तिम वर्षों में आप गुरुकुल संस्थाओं से भी कुछ असन्तुष्ट से होगये थे और अधिक समय समाज सुधार और वेदप्रचार कार्य में ही व्यतीत करने लगे थे। वेदप्रचार मण्डल जींद और आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के माध्यम से आपने अनेक अनुकरणीय कार्य किये हैं जो इतिहास में सदा याद किये जायेंगे।

ऐसे उत्साही त्यागी तपस्वी और कर्मठ कार्यकर्त्ताओं के अभाव में समाजसुधार और वेदप्रचार के कार्य में शिथिलता अनुभव की जा रही है। इस शिथिलता को दूर करने के लिए आप जैसे सैकड़ों उत्साही त्यागी तपस्वी संन्यासियों की समाज को आवश्यकता है।

आपकी स्मृति में सर्वहितकारी का विशेषांक निकालने में जहां आपकी सेवा के प्रति कृतज्ञता प्रकाशन हेतु है वहां यह भी भावना है कि सम्भव है कुछ नवयुवक आपके जीवन से प्रेरणा लेकर समाजसेवा के लिए आगे आयें।

—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री

कर्मठता के प्रतीक स्वामी रत्नदेव सरस्वती

आदरणीय स्वामी रत्नदेव जी के कार्यों को देखकर, **'प्रत्यक्षे किं प्रमाणम्'** इस उक्ति को स्पष्ट रूप से बल मिलता है। पूज्य स्वामी जी महाराज दिन-रात लगे रहने वाले योद्धा थे। उनका कार्यक्षेत्र विस्तृत था। जहां उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में इस इलाके के लिये अविस्मरणीय कार्य करते हुए दो गुरुकुलों की स्थापना की, वहीं वेद प्रचार मण्डल के अध्यक्ष के रूप में गांव-गांव घूमकर वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार किया। शराबबन्दी आन्दोलन के द्वारा कुरीति उन्मूलन अभियान चलाया। अनेक आर्य सम्मेलनों के आयोजनों द्वारा जातिवाद, अन्धविश्वास, साम्प्रदायिकता, नशाखोरी, रिश्वत, बाल-विवाह, दहेजप्रथा, नारी दुर्दशा आदि अनेक सामाजिक बुराइयों के खिलाफ कार्य किया। अगर आर्यसमाज के सभी साधु इसी तरह कार्य करें तो 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का नारा सफल हो सकता है। मैं उनके अधूरे कार्य को जीवनपर्यन्त पूरा करने के लिये कटिबद्ध रहूंगा।

—ब्र० ब्रह्मपुत्र, संयोजक, वेद प्रचार मण्डल, जिला जीन्द, प्रबन्धक, गुरुकुल कुम्भाखेड़ा

समाजसेवा के अविश्रान्त पथिक

स्वामी रत्नदेव सरस्वती

(जीवन व कार्यों पर एक दृष्टि)

जन्म व बाल्यावस्था :- हरयाणा के ऐतिहासिक जिले जीन्द में, जीन्द से गोहाना मार्ग पर लगभग १५ किलोमीटर पूर्व की ओर ग्राम निडाणा में पूज्यपाद स्वामी रत्नदेव जी महाराज का जन्म जनवरी १९३३ में हुआ। आपके दादा का नाम चौधरी पानाराम जी व पिता का नाम चौधरी सहीराम जी था। आपकी माता श्रीमती नन्हींदेवी आपकी बाल्यावस्था में ही स्वर्ग सिधार गई। आपकी चाची समांकौर ने ही आपका पालन-पोषण किया जो बड़े ही साधु स्वभाव की व सेवाप्रिय महिला हैं। आपके चाचा श्री बेलीराम जी पहलवान थे जिनके प्रभाव से आप व्यायाम के प्रति रुचि रखने लगे तथा बाद में श्रेष्ठ खिलाड़ी बने। आपके दो भाई तथा दो बहनें हैं जिनका आपसे बड़ा स्नेह रहा। आपके बड़े भाई धाराराम के शीत-स्वभाव ने आपके जीवन पर गहरा प्रभाव डाला। अत: धार्मिक विचार आपको पैतृक सम्पत्ति के रूप में प्राप्त हुए।

शिक्षा :- उस समय लोग शिक्षा के महत्त्व को अधिक नहीं समझते थे तथा साधन भी उपलब्ध नहीं थे। आपके पिताजी शिक्षा के प्रति बड़े जागरूक थे। उन्होंने पुत्रों को उच्च शिक्षा दिलवाई। प्रारम्भिक शिक्षा गांव की पाठशाला में ग्रहण कर जाट हाई स्कूल जीन्द से आपने दसवीं की परीक्षा सन् १९५१-५२ में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। पंजाब विश्वविद्यालय से हिन्दी प्रभाकर एवं रत्न की परीक्षा को पास किया। वेदों का अध्ययन करने के लिए व्याकरण, महाभाष्य, निरुक्त आदि ग्रन्थों को पढ़ने के लिये आप झज्जर गये। किसी कारणवश आपकी आकांक्षा पूरी न हो सकी। तब आपने स्वतन्त्र रूप से बहुत स्वाध्याय किया और अपने जीवन को अनुशासित बनाया।

समाजसेवा का व्रत :- वह समय ऐसा था। लोग अधिक पढ़े-लिखे नहीं थे। आप उच्चशिक्षा प्राप्त कर चुके थे। आप चाहते तो कोई सरकारी पद प्राप्त करके आनन्द की जिन्दगी बिता सकते थे लेकिन आप समाजसेवा को ही सबसे बड़ा आनन्द मानते थे और वही धुन आपको सवार थी जिसने आपको इतना आन्दोलित कर दिया कि आप पारिवारिक बन्धनों को तोड़कर देव-दयानन्द के दिखाये मार्ग पर चल पड़े। इस मार्ग पर आपको जितने कष्ट झेलने पड़े, उनका वर्णन लेखनी से असम्भव है। उदाहरण के तौर पर एक बार आपको गन्नों के खेत में दो रात व एक दिन भूखे बिताना पड़ा। प्रात:काल समीप के गांव में माताजी से रोटियां खाकर भूख को शान्त किया। इस तरह के अनेक कष्ट जो उन्हें झेलने पड़े, उनकी हम विस्तार से व्याख्या नहीं कर सकते आप कष्टों को कष्ट नहीं मानते थे और अपने मन में समाजसेवा का व्रत धारण कर १९५३ में प्रतिज्ञा कर चुके थे। किसी कवि ने ठीक ही कहा है :-

बाधाएँ कब बाँध सकी हैं, आगे बढ़ने वालों को।
मौत कब डरा सकी है, मरकर जीनेवालों को।।

इस उक्ति को चरितार्थ करते हुए स्वामी जी अपने क्षेत्र में आगे ही बढ़ते रहे और वे धारणा कर चुके थे कि महान् पुरुष महानताओं के लिये जीते हैं, तुच्छ वासनाओं के लिये नहीं।

हिन्दी सत्याग्रह में योगदान :- आर्यसमाज ने १९५७ में हिन्दी सत्याग्रह आरम्भ किया। आर्यसमाज के अनेक साधु-महात्माओं ने इसमें बढ़-चढ़कर भाग लिया। इस आन्दोलन ने पूरा जोर पकड़ा। हजारों लोगों की गिरफ्तारियाँ हुईं। स्वामी रत्नदेव जी महाराज ने भी इसमें बढ़-चढ़कर भाग लिया। जगह-जगह पर हड़तालों, जुलूसों व सरकार के खिलाफ प्रदर्शनों में स्वामी जी ने नेतृत्व किया। स्वामी जी को प्रमुख आन्दोलनकारी मानकर सरकार द्वारा गिरफ्तार करके जेल भेज दिया गया। इससे स्वामी जी महाराज का हिन्दी के प्रति लगाव कितना अधिक था, स्पष्ट रूप से प्रकट होता है।

गोरक्षा आन्दोलन व संन्यास दीक्षा :- देश आजाद होने के बाद भी अनेक जगहों पर गो-हत्थे खुले हुए थे जिनमें सरेआम गोओं को काटा जाता था। गो-हत्या बन्द करवाने के लिये आर्यसमाज ने सन् १९६६ में गोरक्षा आन्दोलन चलाया। इस आन्दोलन में कई लाख लोगों ने गिरफ्तारियाँ दी। स्वामी जी महाराज इस आन्दोलन के प्रमुख नेताओं में से थे। अतः आपको पकड़कर तिहाड़ जेल में डाल दिया गया। इससे पहले आप स्वामी ओमानन्द जी महाराज से गुरुकुल झज्जर में श्रावणी पर्व पर नैष्ठिक दीक्षा ले चुके थे। इसी दौरान तिहाड़ जेल में ही संन्यास ग्रहण किया तथा आप स्वामी रत्नदेव सरस्वती के नाम से विख्यात हुए।

शिक्षा के क्षेत्र में अद्वितीय कार्य :- सन् १९५३ से ही अपने जीवन की समाजसेवा रूपी यज्ञ में आहुति डाल, शिक्षा के क्षेत्र में कूद पड़े। आपने निरन्तर १२ वर्ष तक ग्राम निड़ाना में बच्चों को शिक्षा देने का कार्य किया। आप बड़े लगनशील, ईमानदार व अनुशासनप्रिय थे। आपकी देख-रेख में पाठशाला ने बहुत अधिक उन्नति की तथा अनेक छात्रों को शिक्षित किया। आप अद्भुत प्रतिभा के धनी थे तथा कुछ अधिक ही कार्य करना चाहते थे। अतः इस संस्था से आपकी क्षुधा शान्त न हुई। तब आपने दो संस्थाओं की स्थापना की।

गुरुकुल कुम्भाखेड़ा :- १९६८ में श्रावणी के पर्व पर गाँव कुम्भाखेड़ा में गुरुकुल की स्थापना की। यह गाँव जिला जीन्द व हिसार की सीमा पर स्थित है। उस समय यह एक सूखा व साधनों के अभाव का क्षेत्र था। देखनेवाले सभी कहते थे कि यहाँ गुरुकुल का चलना असम्भव है, परन्तु फिर भी साधनों के अभाव में भी आपने कठिन परिश्रम से वह सब कर दिखाया जो कल्पना में भी नहीं था। आपने ऊबड़-खावड़ झाड़-झुण्डों से युक्त जमीन को खून-पसीने से समतल कर गुरुकुल रूपी पौधे को खड़ा किया जिसकी छत्रछाया में आज हजारों छात्र शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। आरम्भ में स्वामी जी स्वयं १०० फुट गहरे कुएँ से पानी खींचकर बच्चों को नहलाते व उनके वस्त्र साफ करते थे। स्वामी जी की सतत मेहनत व लगन से यह गुरुकुल दिन दोगुनी, रात चौगुनी उन्नति करता हुआ आज अपने जीवन के २९ वर्ष पूरे कर चुका है। वर्तमान में गुरुकुल अपने अलग छात्रावास भवन, अलग विद्यालय भवन, तालाब, नलकूप, कुएँ, चहचहाती हुई फुलवाड़ी, खेल के मैदानों व अन्य अनेक सुविधाओं से युक्त है। स्वामी जी के निर्देशन में इस संस्था ने जहां शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं, वहीं खेलों के क्षेत्र में भी राष्ट्रीय स्तर तक यहाँ के खिलाड़ी भाग लेते हैं। महान् व्यक्तित्व के धनी स्वामी जी के संरक्षण में ही यह सब सम्भव हो सका।

कन्या गुरुकुल खरल :- स्वामी जी महाराज नारी को समाज का महत्त्वपूर्ण अंग मानते थे। महर्षि मनु की धारणा के अनुसार, **"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता:"** के आदर्श का पालन करते हुए स्वामी जी ने नारी उद्धार के लिये २६ जनवरी, १९७६ को कन्या गुरुकुल खरल की स्थापना की। महाशय सूबेदार भरतसिंह शास्त्री, कमलसिंह, मांगेराम यात्री व महाशय रणसिंह आदि ने इस कार्य में उनका बड़ा सहयोग किया। वर्तमान समय में यह संस्था जिला जीन्द ही नहीं बल्कि पूरे हरयाणा का गौरव है जिसमें १२०० कन्यायें छात्रावास में रहती हुई प्रथम श्रेणी से शास्त्री विभाग (बी०ए०) तक शिक्षा पा रही हैं.। जिला जीन्द की तहसील नरवाना से १५ किलोमीटर दूर शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़े हुए क्षेत्र में शिक्षा का उत्तम केन्द्र है। यहां छात्राओं को शिक्षा के साथ-साथ शरीर-सौष्ठव निर्माण की शिक्षा जैसे-योगासन, लाठी, कराटे व आत्मरक्षा के लिए बन्दूक, तलवार आदि का प्रशिक्षण भी दिया जाता है। यहां की आचार्या कुमारी दर्शनादेवी के सफल निर्देशन में यह संस्था दिन दोगुनी-रात चौगुनी उन्नति कर रही है। पूज्यपाद स्वामी जी महाराज का यह एक ऐसा साहसिक कदम था जिसके लिये आने वाली पीढ़ियाँ उन्हें हमेशा याद रखेंगी।

कन्या गुरुकुल हसनगढ़ व कन्या गुरुकुल निडाना की स्थापना :- पूज्य स्वामी जी महारजा कन्याओं की शिक्षा के प्रति बड़े जागरूक थे। उन्होंने हरयाणा में १०० गुरुकुल खोलने की योजना बनाई। इसी के तहत उन्होंने गांव हसनगढ़ में कन्या गुरुकुल की स्थापना की थी। भवन भी बनवाए थे परन्तु गांव द्वारा सहयोग न मिलने पर यह कन्या पाठशाला के रूप में सरकार को सौंप दी गई।

इसी तरह अपनी जन्मस्थली में भी लोगों द्वारा ६ लाख रुपये इकट्ठे करके स्वामी जी को सौंप दिए। स्वामी जी महाराज ने उनको सरकार में जमा करवाकर मैचिंग ग्रान्ट के रूप में १८ लाख रुपये से गांव निडाना में बड़ी सुन्दर कन्या पाठशाला बनवाई। ये उनकी लगन व तड़प का ही परिणाम था।

स्वामी भीष्म आर्य भजनोपदेशक विद्यालय की स्थापना :- स्वामी जी महाराज वैदिक सिद्धान्तों की धूमधाम मचाना चाहते थे। इसके लिए उन्होंनें समाज में भजनोपदेकों की कमी को महसूस किया तथा इसके लिए उन्होंने आर्यसमाज मन्दिर रामनगर जीन्द में स्वामी भीष्म आर्य भजनोपदेशक विद्यालय की स्थापना की। आदरणीय पं० चन्द्रभान जी को आचार्य नियुक्त किया। श्री रमेशकुमार आर्य नौजवान भजनोपदेशक उसी विद्यालय की देन है। यह नौजवान स्वामी जी महाराज के प्रति यही सच्ची श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता है कि मैं जीवनपर्यन्त उनके बताए मार्ग पर चलूंगा।

वेदप्रचार मण्डल अध्यक्ष :- जहां स्वामी जी ने शिक्षा क्षेत्र में बहुत अधिक कार्य किया, वहाँ वैदिक सिद्धान्तों व आर्यसमाज की धारणाओं के प्रचार कार्य में भी उन्होंने कोई कमी नहीं छोड़ी। आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा ने १९९० में वेदप्रचार मण्डलों का प्रत्येक जिले में गठन किया था। जिला जीन्द वेदप्रचार मण्डल की जिम्मेदारी स्वामी जी ने अपने ऊपर ली तथा लोगों में जागृति उत्पन्न करने के लिये आस-पास के ८० गांवों का दौरा किया तथा उनमें आर्यसमाजों का गठन किया। वेदप्रचार मण्डल के तत्त्वावधान में अपने जीवनकाल में उन्होंने पाँच सम्मेलन किये जिनके कारण सारे इलाके में आर्यसमाज के प्रचार की धूम मच गई। मास्टर रायसिंह आर्य, मास्टर ओमप्रकाश आर्य, प्रोफेसर ओमकुमार, लाला जयकिशन आर्य उचानां मण्डी, लाला रामकुमार जी आर्य नरवाना मण्डी, प्रोफेसर इन्द्रदेव व मंगलदेव

लाम्बा जीन्द, पण्डित रामेश्वर जी तारखा आदि अनेक ऐसे कर्मठ कार्यकर्त्ता तैयार हुए जिनके कारण उनके देहावसानोपरान्त भी वेदप्रचार मण्डल का कार्य सुचारुरूप से चल रहा है तथा संयोजक के पद पर ब्रह्मचारी ब्रह्मपुत्र जी कार्य कर रहे हैं।

शराबबन्दी आन्दोलन में द्वितीय सर्वाधिकारी :- स्वामी जी महाराज ने जहां गुरुकुल खोले, कार्य किया, वहीं सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध भी लड़ाई लड़ी। अपने सम्मेलनों में दहेजप्रथा, साम्प्रदायिकता, जातिवाद, अनेक बुराइयों के खिलाफ सम्मेलन रखे तथा शराबबन्दी को मुख्य मुद्दा बनाया। आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा चलाये गये शराबबन्दी आन्दोलन के वे द्वितीय सर्वाधिकारी थे। जगह-जगह पर ठेकों की नीलामी के समय धरने दिये, हड़तालें की व शराब के खिलाफ प्रदर्शन किया। सभी आर्यनेताओं को साथ लेकर वे हरयाणा से शराब को नष्ट करने के लिए दिन-रात लगे रहे, परन्तु दुर्भाग्य से अपनी मेहनत द्वारा साकार सपने को वे अपनी आँखों से नहीं देख सके, परन्तु युवाओं के लिए एक प्रेरणास्रोत अवश्य बने रहेंगे।

आर्य वीर दल के मुख्याधिष्ठाता :- पूज्य स्वामी जी आर्यवीर दल को बहुत अधिक चाहते थे। उनकी धारणा थी कि जब तक गांव-गांव व शहर-शहर में हजारों आर्य जवानों को तैयार नहीं किया जायेगा, तब तक आर्यसमाज का कार्य पूरा नहीं हो सकता। वे आर्यवीर दल हरयाणा के मुख्याधिष्ठाता पद पर रहे। प्रान्तीय स्तर के आर्यवीर दल के सम्मेलनों में अपने दोनों ही गुरुकुलों के छात्र-छात्राओं सहित पूरे दल-बल के साथ शामिल होते थे तथा जवानों का आह्वान करते हुए कहते थे, "उठो, जागो जवानो, देश में परिवर्तन लाना है। क्रान्ति आयेगी, वर्तमान समाज की सारी दूषित व्यवस्था को बदलकर भारत में आर्यों का एक छात्र राज्य कायम होगा, तभी समाज का कल्याण हो सकता है। इसके लिये एक नहीं, हज़ारों जवानों को आगे आना होगा।

देशप्रेम व राष्ट्रीय भावना :- स्वामी जी में देशभक्ति कूट-कूट भरी थी। वे हमेशा ही भारत के अन्दर एक ऐसी व्यवस्था चाहते थे जिसमें देश का हर नागरिक सच्चा राष्ट्र भक्त, उसके प्रति समर्पित भावना वाला हो। अपने उद्‌बोधन में वे कहते थे कि जिस दिन लोकसभा तथा विधान सभाओं में वेदों के विद्वान् बैठे होंगे, हवन-यज्ञ से सत्र शुरु होंगे, मनु के अनुसार संविधान होगा, नारी को बराबर का अधिकार होगा, तभी यह भारत पुनः संसार का गुरु कहलाने का गौरव प्राप्त करेगा। यही भावना वे अपने छात्र-छात्राओं में हमेशा भरने का प्रयत्न करते थे। आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के वरिष्ठ उपप्रधान पद पर रहते हुए शराबबन्दी सम्मेलन व राष्ट्रीय सम्मेलन में यही विचार व्यक्त किये थे। वे आर्यसमाज का प्रचार करनेवाले प्रचारकों व विद्वानों का बड़ा सम्मान करते थे। इससे स्पष्ट है कि स्वामी जी महाराज में राष्ट्रीय भावना कूट-कूटकर भरी हुई थी।

इहलीला समाप्ति :- देश के उत्थान व योजनाओं को वे एक के बाद एक, कार्यरूप देते जा रहे थे, और बड़ी-बड़ी आशाएं उनके दिमाग में थीं, परन्तु महान् आत्माओं के लिये शायद परमात्मा लालायित रहते हैं। जैसे कि महर्षि दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी रामतीर्थ आदि अनेक महान् विभूतियां अत्यन्त थोड़ी आयु में ही चल बसीं। इसी प्रकार २१ अप्रैल १९९६ को दोपहर एक बजे वह महान् आत्मा भी आकस्मिक रूप से हमारे मध्य से चली गई और अपनी चिरसंचित आशाओं को पूरी तरह फलान्वित होते नहीं देख सकीं।

—**दिलबागसिंह शास्त्री**, (एम.ए., बी.एड.)
आचार्य गुरुकुल कुम्भाखेड़ा (हिसार)

मेरे धर्म पिता : स्वामी रत्नदेव सरस्वती

डॉ० कु० दर्शनादेवी

जिसने समाज हित में अपने जीवन को समर्पित कर बिखेरा है।
उस त्यागी-तपस्वी साधु को सादर प्रणाम मेरा है।।

भारतवर्ष एक महान् देश है। इस धरती पर समय-समय पर महान् विभूतियों ने जन्म लिया है और देश को अपने-अपने ढंग से नया मार्ग दिखाने का कार्य किया है। किसी ने ईश्वरभक्ति का उपदेश दिया तो किसी ने समाज सुधार का कार्य किया है। जैसे कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज, स्वामी श्रद्धानन्द जी, भक्त फूलसिंह जी ने वेदप्रचार के माध्यम से व शिक्षालयों के माध्यम से समाज सुधार का कार्य किया है समाज में विशेष जागृति लाने का कार्य किया है। इन्हीं की श्रृंखला में नाम आता है एक और अमर ज्योति स्तम्भ के रूप में स्व० स्वामी रत्नदेव सरस्वती जी महाराज का।

इनका जन्म सन् १९३३ ई० में ग्राम निडाना (जीन्द) में आदरणीय श्री सहीराम मलिक के घर में हुआ था। इनकी प्राथमिक शिक्षा भी गांव के ही प्राइवेट विद्यालय से पूर्ण हुई थी। उच्चशिक्षा जाट उच्च विद्यालय जीन्द से प्राप्त की थी और प्रभाकर साहित्यरत्न आदि की परीक्षा उत्तीर्ण करके गांव के विद्यालय में ही अध्यापन कार्य करना आरम्भ कर दिया था। **'होनहार बिरवान के होत चीकने पात'** के अनुसार इन्हें अपनी जन्मभूमि के विद्यालय में अध्यापन कार्य करवाते समय ही अल्पायु में ही वैराग्य उत्पन्न होगया था। नंगे पैर नंगा सिर बदन रखकर केवलमात्र एक खद्दर का कटिवस्त्र धारण करके जंगलों में भ्रमण करते रहे। प्रात:काल विद्यालयों में प्रार्थना के समय जाकर विद्यार्थियों में भाषण देते रहते थे उस समय गांव निवासियों ने यहां तक कहना शुरु कर दिया था कि मा० रत्नसिंह का दिमाग चल गया है अर्थात् यह पागल होगया है। लेकिन इनके सिर पर जो धुन सवार भी उसे परमात्मा ही जानता था।

इन्होंने गुरुकुल झज्जर में व गुरुकुल सिंहपुरा में भी संरक्षक के रूप में कुछ समय कार्य किया था। नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा श्रावणी पर गुरुकुल झज्जर की यज्ञवेदी पर ली थी। पूर्णरूप से समाजसेवा का व्रत धारणकर सामाजिक क्षेत्र में आ कूदे। सबसे पहले हिन्दीरक्षा आन्दोलन में इन्होंने बढ़-चढ़कर भाग लिया जेलों में गये। तदनन्तर गोरक्षा आन्दोलन चला उसमें इन्होंने सराहनीय हिस्सा लिया। इनकी निडरता-निर्भीकता अपने आप में अनुपमेय थी। जिस समय नरवाना में श्री गुलजारीलाल नन्दा आरहे थे तब इन्होंने काला झण्डा दिखाकर Go back का नारा उनके प्रति लगाया था जिसके कारण स्वामी जी ने जेल भी जाना पड़ा था। वैसे स्वामी जी साधु भी जेल के ही थे। क्योंकि उन्होंने संन्यास तिहाड़ जेल में स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती के हाथों से ही लिया था।

औरों के गम में जलना संन्यास है,
पराई चिता पर पड़ कर जलना संन्यास है।
कदम तेग की धार पर धरके चलना संन्यास है,
न हरगिज मचलना न फिसलना संन्यास है।।

एक बार महात्मा बुद्ध से उनके शिष्यों ने पूछा-प्रभु क्या इस संसार में ऐसी भी कोई चीज है जो चट्टानों से भी कठोर हो। उत्तर मिला ऐसी वस्तु लोहा है। फिर प्रश्न हुआ कि क्या लोहे से

भी कठोर वस्तु है ? उत्तर मिला कि लोहे से कठोर अग्नि है क्योंकि अग्नि लोहे को पिंघला देती है। फिर प्रश्न किया क्या अग्नि से भी कठोर चीज है ? उत्तर मिला-पानी। क्योंकि पानी अग्नि को बुझा देता है। फिर प्रश्न किया क्या पानी से भी कठोर चीज है ? उत्तर मिला कि वायु जो पानी की दिशा को बदल देती है। शिष्य ने फिर प्रश्न किया महात्मा जी वायु से श्रेष्ठ वस्तु क्या है ? तब महात्मा बुद्ध ने कहा कि वायु से श्रेष्ठ मन की संकल्प शक्ति है जो मनुष्य को महान् बनाती है। क्योंकि दृढ़ संकल्प के द्वारा हम वायु को भी वश में कर लेते हैं। संकल्प शक्ति से मनुष्य ऐसे कार्य भी कर जाता है जो सदा असम्भव से लगते हैं।

ऐसा ही समाजसेवा में समस्त जीवन समर्पित करने का दृढ़ संकल्प लिया था पूज्यपाद स्वर्गीय स्वामी रत्नदेव सरस्वती जी ने।

जिस समय स्वामी जी श्री रामचन्द्र वैद्य डूमरखां निवासी के साथ गांव खरल (जीन्द) में रह रहे थे तब महाशय मंगतसिंह कुम्भाखेड़ा (हिसार) निवासी स्वामी जी के पास गुरुकुल खोलने की इच्छा को लेकर आये। स्वामी जी ने उनकी इस इच्छा को सहर्ष स्वीकार किया और महाशय रणसिंह आदि के सहयोग से श्रावणी पर्व पर सन् १९६८ ई० में कुम्भाखेड़ा के ऊंचे टीलों पर लड़कों का गुरुकुल खोल दिया। जितनी भूमि पर गुरुकुल बना हुआ है वह सब जमीन महाशय मंगतसिंह ने दान में दे दी थी। वर्तमान समय में ब्रह्मचारी ब्रह्मपुत्र जी के, कमेटी के सान्निध्य में आचार्य श्री दिलबागसिंह शास्त्री जी की देखरेख में संस्था कुशलरूपेण चल रही है। खेलों में, परीक्षा परिणामों में इस संस्था का नाम हिसार जिले में प्रशंसनीय ढंग से लिया जाता आरहा है। क्योंकि स्वामी जी के इन विचारों को लेकर कि-

मन से अपना काम करें हम, थककर ही आराम करें हम।
कल करना सो आज करें हम, ना पल भर बर्बाद करें हम।।

संस्था के आचार्य, कमेटी व अध्यापकगण तन-मन से श्रद्धा के साथ संस्था की प्रगति-उन्नति हेतु लगे हुये हैं।

आठ वर्ष के पश्चात् स्वामी जी के दिल में कन्या गुरुकुल भी खोलने का विचार आया। वे वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना बड़े ही खुश होकर प्रतिदिन प्रातःकाल गाया करते थे। जिसमें एक पंक्ति आती है कि -

'आधार राष्ट्र की हो नारी सुभग सदा ही।'

उन्होंने विचार किया कि लड़कों की ओर ध्यान तो सब परिवार रिश्तेदार देते हैं लेकिन लड़कियों के उज्ज्वल भविष्य की ओर किसी का ध्यान नहीं जाता जो कि राष्ट्र का आधारस्तम्भ है क्योंकि एक अच्छे राष्ट्र का निर्माण तभी सम्भव है जब मानव समाज का निर्माण होगा और मानव का निर्माण एक नारी पर ही निर्भर करता है। **'माता निर्माता भवति'** मां निर्माण करनेवाली होती है।

'मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद' शतपथ ब्राह्मण के अनुसार भी नारी को सन्तान का सबसे पहला गुरु माना गया है। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भी नारी को 'मातृशक्ति' कह कर सम्बोधित किया है। इन्हीं विचारों से ओत-प्रोत होकर स्वामी जी के दिल में नारी उत्थान की जो ज्वाला जल रही थी उसका प्रत्यक्ष उदाहरण है कन्या गुरुकुल खरल (जीन्द) की स्थापना करना। इन्होंने २६ जनवरी १९७६ ई० में अपने कर-कमलों से इस संस्था की नींव रखी थी। जो कि आज हरयाणा में अपना विशेष स्थान बनाए हुए है। प्रतिवर्ष हजारों छात्राएं विद्या ग्रहण करके संस्था से जाती रहती हैं। मनुष्य पुरुषार्थ से शिव बन जाता है और आलस्य से शव। स्वामी जी का कण-कण, रोम-रोम पुरुषार्थमय था जिसके कारण उनकी दोनों प्रिय संस्थाओं ने समाज में अच्छी ख्याति प्राप्त की है।

गुरुकुलों की स्थापना के साथ-साथ इन्होंने गांव हसनगढ़ (हिसार) में भी एक कन्या पाठशाला चलाई थी जो वर्तमान समय में सरकार द्वारा चलाई जा रही है। इसके पश्चात् गांव निडाना स्वयं की

जन्मभूमि पर भी कन्या पाठशाला बनवाई जो कि वर्तमान में सरकार द्वारा चलाई जा रही है। क्योंकि लोगों की दानवृत्ति में कमी देखकर व सहयोग न मिलने के कारण ये दोनों विद्यालय स्वामी जी ने स्वेच्छा से सरकार को दिलवा दिये थे। शिक्षा प्रसार के साथ-साथ स्वामी जी ने वेदप्रचार मण्डल का भी संगठन किया और प्रचार के माध्यम से शराबबन्दी, दहेजबन्दी अन्य सामाजिक बुराइयों के विरोध में जीन्द जिले में धूम मचाई हुई थी। दोनों शिक्षण संस्थाओं को अपने सिद्धान्तों के अनुरूप बनाये रखने के लिए स्वामी जी को बड़े-संघर्षों में से निकलना पड़ा।

कन्या गुरुकुल खरल के विषय तो कई बार कह दिया करते थे कि लड़कियों को संरक्षण देना एक तरह काले सांप को खिलाना है। उस पवित्र आत्मा को मैंने बहुत नजदीक से देखा है क्योंकि मेरा सम्पर्क सन् १९७८ में जब वे मेरे माता-पिता से मेरी जन्मभूमि पर जाकर मुझे अपनी विद्यापुत्री-धर्मपुत्री के रूप में लेकर आये थे तभी से था। जिस तरह से एक माता-पिता के लिए अपनी सन्तान उनके दिलों का हार होती है उसी तरह मैं भी अपने आप को उनकी इकलौती बेटी मान कर चली हूं बेटे की तरह से निर्भीक होकर मैंने स्वामी जी का संस्था में ही नहीं, अपितु हर सामाजिक कार्यक्षेत्र में साथ दिया है। इस सहयोग से जनता भी भली-भांति परिचित है। जिसने जन्म लिया है उसे मरना तो अवश्य है और मौत सदैव बहाना बनकर आती है जो कि पीछे रहने वाले के लिए एक पश्चात्ताप छोड़ जाती है।

पूज्य स्वामी जी का स्वास्थ्य लगभग पांच वर्ष से ढीला अस्वस्थ चल रहा था। नजला और दस्त दोनों बीमारियों ने उनको ग्रस्त किया हुआ था। एक वर्ष पैरों पर सूजन रही देशी इलाज उनका चलता रहता था। धीरे-धीरे मधुमेह की बीमारी भी उन्हें हो गई थी। घी-दूध हरी सब्जियां आदि उनकी लगभग चार वर्ष से बन्द थी। ठण्डा खाते थे नजला बढ़ जाता था और गर्म खाते थे तो दस्त लग जाते थे। शारीरिक बीमारियों के प्रति वे काफी परेशान रहते थे लेकिन किसी को अहसास नहीं होती देते थे। क्योंकि परमात्मा ने उनको हौसला-उत्सुकता हिम्मत ही इतनी दी हुई थी कि दिन रात आराम लेने का नाम नहीं लेते थे। जब कभी मैं उन्हें कहती थी कि स्वामी जी स्वास्थ्य भी जरूरी है और आपका स्वास्थ्य ये शरीर अब आराम चाहता है आराम करें दिन-रात का चलना-फिरना आपके लिए ठीक नहीं है हमें आप केवल बैठे दिखते रहें काम अपना हम करेंगे। लेकिन हंसकर ये कहकर चल देते थे कि संन्यासी चलता भला। काम करते रहना चाहिए शरीर थक जायेगा तब अपनी बेटी के पास आ जायेंगे। लेकिन बेटी उनकी जितनी सेवा करना चाहती थी परमात्मा ने मुंह मांगा भी उतना अवसर हमें नहीं दिया।

नजले से परेशान हुए स्वामी जी १५ अप्रैल को प्रातः गुरुकुल कुम्भाखेड़ा से सेवक श्री नारायण को लेकर गोहाना में डा० वेदव्रत मलिक के पास पहुंच गये। वहां उन्होंने देशी दवाई नाकों के द्वारा देकर उन्हें उल्टी दस्त लगवाये जिसे स्वामी जी सहन नहीं कर पाये और घबराहट सी महसूस करने लगे। वैसे भी दस्तों से पीड़ित शरीर में शक्ति तो इतनी थी नहीं, आयु के साथ भी कमजोरी स्वतः आ जाती है। उसी रात्रि में ९.०० बजे मुझे डाक्टर की श्रीमती का फोन मिला जिसमें उसने कहा कि चिन्ता वाली ऐसी कोई बात नहीं है हमारा इलाज ही ऐसा है कि एक बार आदमी अपने को ऐसा अनुभव कर लेता है कि बस मर गया। उसी समय मैंने स्वामी जी से फोन पर बातें की तब स्वामी जी ने सबसे पहले कहा था कि पुत्री क्या हाल है क्योंकि हमारे पास से स्वामी को गये हुए लगभग दस दिन होगये थे। गुरुकुल में नया प्रवेश चल रहा था। जब मैंने पूछा कि स्वामी जी मैं आपके पास आ जाऊं उनके

प्रत्युत्तर में हां कह दी और मैं उसी रात्रि के समय ही गुरुकुल से चल पड़ी चुनावों का समय था जगह-जगह पर गाड़ी का निरीक्षण होता गया धीरे-धीरे मैं लगभग १-०० बजे रात्रि को गोहाना पहुंच गई। मेरे पहुंचते ही डा० मलिक भी हैरान हुआ कि जैसा गर्व स्वामी जी अपनी बेटी पर वार्तालाप में कह रहे थे वास्तव में बेटी-बेटी ही है यह कहकर सिर को हिलाया। पूज्य स्वामी जी को भी कुछ हौसला मेरे जाने पर हुआ।

अगली सुबह फिर उनको दस्त और उल्टी लगने की दवा दी गई बस इस दवा से शरीर की समस्त शक्ति जाती रही और छः दिन-रात तक जहां भी कहा वहीं लेकर जाती रही मेरे साथ में पूज्य स्वामी जी की इच्छानुसार उनका सेवक और गुरुकुल कुम्भाखेड़ा के आचार्य भी साथ थे। सरकारी अस्पतालों में या प्राइवेट अच्छे-अच्छे हस्पतालों में ले जाने के लिए हमने उनको बहुत मनाया लेकिन वे देशी दवाएं ही लेने के लिए अडिग रहे इस मामले में हमारी उन्होंने नहीं चलने दी। आखिरकार जिद करके हम उनको मालाबार हस्पताल रोहतक में लेकर आ गये। हमारे हाथों से पहले दिन खूब स्नान किया सिर पर हाथ रखकर उन्होंने कहा बेटी मुझे खूब नहला मेरे शरीर पर अच्छा पानी डालकर नहलाओ शायद परमात्मा को यही मंजूर है। बेटी मैंने तुझे बनाया है हर संघर्ष में तुझे साथ रखकर साहसी बनाया है निर्भीक रहकर समाज की सेवा करते रहना यही स्नेह रूप में मेरा आशीर्वाद है। लोक अपवादों से तू घबराती ही नहीं है। जिस तरह से पं० गुरुदत्त विद्यार्थी को जब स्वामी दयानन्द जी का सत्संग उनका उपदेश लगा था उन्होंने आर्यसमाज के दसों नियमों को एक कपड़े पर लिखकर गले में डाल लिया था और गली-गली में आर्यसमाज का दीवाना बनकर घूमता रहता था तब लोगों ने उसे कहना शुरु कर दिया था कि यह पागल होगया है लेकिन गुरुदत्त का उत्तर यही होता था कि-

इन बिगड़े दिमागों में भरे अमृत के लच्छे हैं।
हमें पागल ही रहने दो हम पागल ही अच्छे हैं।।

इसी तरह से तूने भी अपना दिल मजबूत करके चलना है और ये कहकर कि ये दुनिया है इसका व्यवहार यही रहा है सामाजिक भलाई करनेवालों को दुःख देना उसे हमेशा गलत संदेह की नजर से देखना और मरने के बाद उसी के मीठे-मीठे गीत गाना। इस प्रकार प्रतिदिन दिन-रात हमें अपना हार्दिक स्नेह आशीर्वाद रूप में देते रहते थे। परमात्मा की विधि से बाहर कोई नहीं जा सकता। इन्सान केवल सेवा करने का अधिकार तो रखता है लेकिन प्राणरक्षा परमात्मा के अधीन होती है। कोई नहीं चाहता कि उसके माता-पिता का बड़ों बुजुर्गों का हाथ उसके सिर पर से उठे लेकिन इन्सान की चाहत परमात्मा की इच्छा पर होती है। हमारे भाग्य में विधाता ने नहीं लिखा था कि हम अपने पिता का प्यार-दुलार इससे आगे भी पायें। २१ अप्रैल १९९६ रविवार के दिन दोपहर सवा बजे दिल के दौरे ने मधुमेह के कारण उनकी जीवनलीला को समाप्त कर दिया। उसी दिन सायंकाल कन्या गुरुकुल खरल की भूमि पर ही मेरे द्वारा ही उनको मुखाग्नि दी गई क्योंकि ऐसी अभिलाषा उन्होंने मुझे बता दी थी। एक सन्तान की अपने माता-पिता के प्रति जो कृतज्ञता बनती है उसे निभाने के लिए मैंने पूरी-पूरी कोशिश की है और भविष्य में भी उन्हीं के यश के लिए मेरा जीवन समर्पित रहेगा।

जिन लोगों ने स्वामी जी को जीवित समय पर कोई महत्त्व नहीं दिया उनके विरोध में बोलते थे आज वे ही उन्हें अपना कहकर उनके भक्त बनना चाहते हैं उनके हितैषी अपने को दिखलाकर समाज में अच्छा बनना चाहते हैं और जिस बेटी ने सारी जवानी उनकी संस्था की सेवा में, उनके सामाजिक क्षेत्र के कार्यों में लगाई हर आपत्ति में संघर्ष में उनके दाएं-बाएं रही और अब भी उनके स्वप्नों को साकार करने में समर्पित है उस पर

स्वामी जी की मौत की पाप की गठरी रखने का प्रयास करना चाहते हैं। **'लेकिन सांच को आंच नहीं।'** इन लोगों के दिलों में वास्तविक दर्द-दुःख तो है स्वामी जी की संस्थाओं का उनकी मृत्यु के पश्चात् भी ज्यों का त्यों स्वच्छ सुन्दर वातावरण से परिपूर्ण सुगन्धित अनुशासित रूप से चलने का। इनकी बहुरूपिया चाल रही है संस्था का कार्य विचलित होजाये और समाज में मजाक बने कि स्वामी जी के बाद चलाई संस्था ? इन लोगों से हमारा मान, हमारा स्नेह, हमारी खुशियां सहन नहीं हो रहीं। लेकिन ये तो परमपिता का वरदान है पूज्यपिता की आत्मा का स्नेहिक आशीर्वाद है संस्था के विद्रोही लोग अपने सिर पर पाप की गठरी का बोझ रखने के सिवाय और कुछ नहीं कर सकते क्योंकि मैंने भी बहादुर बाप की बहादुर बेटी ही बने रहने का संकल्प लिया हुआ है। घबराने का जमाना जा चुका है। परमात्मा की दया से इस संस्था का प्रधान भी संयोगवश हमें ऐसा मिला है जो कि स्वामीजी की तरह संस्था हित में अटल है और उनसे भी मुझे बराबर निर्भीकता के गुण मिलते रहते हैं। जब भी वे बातें करते हैं तो सर्वप्रथम यही कहते हैं कि घबराने की जरूरत नहीं है अपना कार्य करते चलो। यथा नाम तथा गुण के अनुसार इनका नाम भी विजयसिंह नैन है और विजय की ओर ही इनका चरण अग्रसर रहता है। अन्य सभासदगणों का भी मुझे पिता की तरह से स्नेह व आवश्यकतानुसार सम्मान मिल रहा है। पूज्य स्वामी जी की दोनों गुरुकुलरूपी फुलवारी अमरज्योति का कार्य करती रहेंगी उनके स्वप्नों को साकार करने के लिए दोनों चिरागरूपी ये संस्थाएं सदैव समर्पित रहेंगी।

प्रतिज्ञा करती हूं मैं अपने धर्मपिता के आदर्शों को न बिसरायेंगे।
सादर श्रद्धाञ्जलि समर्पित है मेरी उनके स्वप्नों को साकार कर दिखलायेंगे।।

-**डा० दर्शना देवी**, प्रधानाचार्या, कन्या गुरुकुल खरल (जीन्द)

महाशय अर्जुनसिंह आर्य का निधन

दिनांक २४ अप्रैल १९९७ सायं सवा चार बजे महाशय अर्जुनसिंह आर्य ग्राम खरक जाटान (रोहतक) में देहान्त होगया। वे अस्सी वर्ष के थे। उनकी अन्त्येष्टि दिनांक २६.४.९७ को उनके पैतृक गांव खरक जाटान, खण्ड महम (रोहतक) में स्वामी ओमानन्द जी द्वारा की गई। बचपन से आर्यसमाज से जुड़े होने और सात्विक आचार-विचार के कारण वे वृद्धावस्था के बावजूद स्वस्थ एवं गतिशील रहे।

श्रीयुत अर्जुनसिंह आर्य अपने क्षेत्र के प्रख्यात समाजसेवी एवं पंचायती व्यक्ति माने जाते थे। उनके आकस्मिक निधन का समाचार पाते ही हजारों लोग अन्तिम दर्शन के लिए उनके निवास स्थान पर एकत्रित होगए। अन्त्येष्टि के समय स्वामी ओमानन्द व चौबीसी पंचायत के प्रधान श्री सूरतसिंह सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

श्री आर्य अपने पीछे पत्नी के अलावा चार पुत्र, दो पुत्रियां, सात पौत्र, चार पौत्रियां व तीन प्रपौत्र छोड़ गए हैं। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत को सद्गति तथा उनके परिवार को वियोग सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

—मन्त्री, आर्यसमाज

समाजसेवा का महान् व्रती : स्वामी रत्नदेव जी सरस्वती

❑ अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी, सभा उपदेशक

सर्वप्रथम १९७७ में आर्यसमाज कंवारी (हिसार) के वार्षिक उत्सव पर स्वर्गीय स्वामी रत्नदेव जी सरस्वती से सम्पर्क हुआ तथा उनके क्रान्तिकारी विचार सुनने को मिले। उसके बाद २१ जनवरी १९७८ में हम १७ आर्यसज्जन स्वामी अग्निदेव जी भीष्म के नेतृत्व में हिसार गोरक्षा आन्दोलन के लिए आर्यसमाज करोलबाग दिल्ली पहुंचे। २२ जनवरी प्रातः ९ बजे नारे लगाते हुए स्वामी रत्नदेव जी के साथ तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्री मोरारजी देसाई की कोठी पर गिरफ्तारी दी। उस समय भी स्वामी जी के विचार सुनने को मिले। स्वामी जी वास्तव में सच्चे गोरक्षक एवं गोभक्त थे। स्वामी जी गौ का ही दूध पीते थे। ध्यान रहे १९६६ में श्री स्वामी जी ने गोरक्षा आन्दोलन में बढ़चढ़कर भाग लिया। कई महीने तिहाड़ जेल दिल्ली में रहे। जेल में ही स्वामी रामेश्वरानन्द जी से संन्यास की दीक्षा ली थी। इससे पहले स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती से गुरुकुल झज्जर में श्रावणी पर्व पर नैष्ठिक की दीक्षा ले चुके थे। स्वामी रत्नदेव जी ने हिन्दी आन्दोलन में भी बढ़चढकर भाग लिया था।

स्वामी जी ने शिक्षा के क्षेत्र में विशेष्र कार्य किया। सर्वप्रथम १२ वर्ष तक अपनी जन्मभूमि ग्राम निडाना (जीन्द) में एक पाठशाला चलाई। तत्पश्चात् १९६८ में गुरुकुल कुम्भाखेड़ा (हिसार) की स्थापना की। आपने स्वयं महीनों तक शारीरिक परिश्रम करके उबड़-खाबड़ जमीन समतल करके गुरुकुल का निर्माण किया जो आज २६ वर्ष से शिक्षा एवं खेलों के क्षेत्र में विशेष प्रगति पर है। सन् १९७८ में आपने कन्या गुरुकुल खरल (जीन्द) की स्थापना की। जहां अब लगभग १२०० छात्राएं शिक्षा ग्रहण कर रही है। अन्तिम दिनों स्वामी जी को ग्राम निडाना की पंचायत ने बुलाकर ६ लाख रुपये उनकी झोली में डाल दिए कि आप हमारे यहां कन्या पाठशाला बनवाओ। उस समय सरकार की ओर से कन्या विद्यालय के लिए ३ गुणा ग्राण्ट मिलती थी। स्वामी जी ने गांव के कुछ सज्जन व्यक्तियों की एक कमेटी बनाकर अपनी देखरेख में १८ कमरे बनवाये जहां वह पाठशाला विधिवत् चल रही है। स्वामी जी सहशिक्षा के सदा विरोधी रहे।

स्वामी जी दोनों गुरुकुलों को अपने पांवों पर खड़ा करके अब ज्यादा समय देहात क्षेत्र में वेदप्रचार एवं शराबबन्दी में देने लगे। आपने विशेषकर जिला जीन्द में वेदप्रचार मण्डल के प्रधान के नाते विशेष कार्य किया। कई गांव में नई आर्यसमाजों की स्थापना की। पुरानी आर्यसमाजों में जान फूंकी। कई गांव में शराब जैसी भयंकर बुराई को छुड़वाने का प्रयास किया। सन् १९८४ में आप ग्राम बालावास (हिसार) में जहां मैंने ग्रामवासियों के सहयोग से शराब का ठेका बन्द करवाने के लिए सर्वप्रथम धरना दिया था, उसमें आप हमारे सहयोग के लिए पधारे। ठेका बन्द होने के बाद ग्राम नलवा (हिसार) में एक आर्यविद्वानों एवं कार्यकर्त्ताओं की मीटिंग बुलाई। आचार्य डा० सुदर्शनदेव के सुझाव पर वेदप्रचार को गति देने के लिए वैदिक धर्म महासभा का गठन किया गया। जिसके आप सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने गये। महासभा के माध्यम से जिला हिसार के ८-१० गांवों में वेदप्रचार किया गया।

उसके बाद आप आर्य प्रतिनिधि हरयाणा से जुड़ गए। स्वामी ओमानन्द जी के नेतृत्व में उनके साथ मिलकर कार्य करने लग गए। आप सर्वसम्मति

से सभा के उपप्रधान चुने गये। हरयाणा में पूर्ण शराबबन्दी लागू करने के लिए सभा द्वारा चलाये गये आन्दोलन के दौरान शराबबन्दी सत्याग्रह के द्वितीय सर्वाधिकारी चुने गए।

आपने कई गांवों में, कस्बों में शराबबन्दी सम्मेलनों की अध्यक्षता की। ग्राम बालसमन्द आदि ऐतिहासिक धरनों पर आपने कई-कई बार जाकर धरनाधारियों का हौसला बढ़ाया। जिला जीन्द में तथा जिला हिसार में आपने कई बार ठेकों की नीलामी पर प्रदर्शनों में गुरुकुल के छात्रों के साथ पूर्ण सहयोग दिया एवं मार्गदर्शन किया। हमारा भी लगभग १८ वर्ष से निरन्तर कन्या गुरुकुल खरल तथा गुरुकुल कुम्भाखेड़ा के वार्षिक उत्सव पर आना जाना रहा। स्वामी जी भी परिवार में तथा हमारे ग्राम कंवारी तथा नलवा में वार्षिक उत्सव पर बराबर आते रहे।

स्वामी जी तीनों ऐषणाओं पुत्रैषणा, लोकैषणा, वित्तैषणा से कोसों दूर थे। स्वामी रत्नदेव जी सरस्वती वास्तव में आर्यजगत् के एक स्पष्ट वक्ता दृढ़ ईश्वरविश्वासी, ईमानदार, चरित्रवान् निर्भीक, कर्मठ, शिक्षाविद्, अनुशासनप्रिय, गोरक्षक, भारतीय सभ्यता और संस्कृति के पोषक, नारी जाति के रक्षक, समाज सुधारक, त्यागी-तपस्वी थे तथा अन्तिम क्षणों तक उनकी भारत में आर्यों का राज्य हो, ऐसी प्रबल इच्छा थी। अनेक बार स्वामी जी अपने क्रान्तिकारी भाषणों में यह भावनाएं व्यक्त किया करते थे।

मेरी दृष्टि में स्वामी रत्नदेव जी ने अपने जीवन की अल्प अवधि में महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी श्रद्धानन्द जी के अधूरे कार्य को पूरा करने का पूरी निष्ठा से यत्न किया।

अनथक कार्य करने तथा भागदौड़ के कारण स्वामी जी अस्वस्थ रहने लगे। नजले का रोग कई वर्ष से पीछे पड़ा हुआ था। अन्त में २१ अप्रैल १९९६ को स्वामी जी भयंकर दस्त (पिचिस) की बीमारी के कारण इस संसार से चल बसे। ☆

मिली स्वर्ग की राही

२१-४ वैशाख शुद्धि फिर साल ९६ आई।
श्री स्वामी रत्नदेव जी नै मिली स्वर्ग की राई।।टेक।।

जीन्द जिले मैं गाम निडाना जहां पै आपनै जन्म मिला।
मात-पिता की भक्ति से एक सुन्दर घर मैं फूल खिला।
पर उपकार कमाने का एक बढ़िया होगा शुरु शिला।
ईश्वरभक्ति करने के लिए छोड़ गाम घरबार चला।
महापुरुषों के सत्संग से फिर होगी कला सवाई।।१।।

राष्ट्रभक्ति गऊ सेवा का पूरा ख्याल किया करते।
कन्याओं की शिक्षा की सही सम्भाल किया करते।
गुरुकुल और पाठशाला की सही रखवाल किया करते।
जनता के दुःख दूर करनसे ना हरगिज टाल किया करते।
दहेज शराब खत्म करने की सारै धूम मचाई।।२।।

सोने की चिड़िया हो भारत ऐसी नियत आपकी थी।
निर्धनों और गरीबों से भी सच्ची प्रीत आपकी थी।
डंका बजा नशाबन्दी का ये भी जीत आपकी थी।
जिओ और जीने दो की ये असली रीत आपकी थी।
जनता भूल नहीं सकती जो आपने करी भलाई।।३।।

गोरक्षानन्द कह वेदों का प्रचार करणिया नहीं रहा।
निर्धन और गरीबों के दुःख दर्द हरणिया नहीं रहा।
गऊओं और कन्याओं की पुकार सुणनिया नहीं रहा।
जाति देश धर्म के ऊपर आज मरणिया नहीं रहा।
रामेश्वर को पता चला जब रो कै नाड़ हिलाई।।४।।

प्रस्तुतकर्त्ता :- गुरनामसिंह आर्य
(लेखक पं० रामेश्वर आर्य, तारखा, जीन्द)

☆ ☆ ☆

स्वर्गीय स्वामी रत्नदेव जी सरस्वती

टेक :- स्वामी जी ! तुम थे रत्न महान्।
गुण, कर्म, स्वभाव आपके कैसे करें बखान ?..स्वामी जी !

१. विद्या पाकर कभी आपने पद का लालच किया नहीं।
खाने और कमाने के हित कभी भी जीवन जिया नहीं।
भोग-विलास से विरक्त सदा रहे, गृहस्थाश्रम किया नहीं।
यथाशक्ति ज्ञान दिया है, बदले में कुछ लिया नहीं।
सत्य साधनानिष्ठ सदा ही, रखा कर्म प्रधान।................स्वामी जी !

२. विद्या का प्रसार लक्ष्य कर, गुरुकुल पद्धति अपनाई।
कुम्भाखेड़ा तथा खरल में घर-घर जाकर अलख जगाई।
अनपढ़ मानव पशु बराबर, गूढ़ बात यह समझाई।
हरयाणा के पिछड़े राज्य में, वैदिक ज्ञान की धूम मचाई।
परिश्रम फलित हुआ आपका, माने सकल जहान।.................स्वामी जी !

३. अनपढ़ जनता पाखण्डों के मायाजाल में लटक रही।
मार्ग न सूझे सत्य धर्म का, अन्धी होकर भटक रही।
पोप-पाखण्डी लूट मचाते, कष्ट कमाई को झटक रही।
सुरा सुन्दरी के चक्कर पर, दुराचारिणी मटक रही।
वेदप्रचार आपका सुनकर, खुल गये अब सबके कान।.....................स्वामी जी !

४. यज्ञ हवन की रीति छोड़कर जनता कष्ट उठाती है।
सेवन बढ़ा दवाइयों का और विरथा स्वास्थ्य गंवाती है।
रहन-सहन स्वदेशी तजकर, भोण्डा रंग अपनाती है।
विश्व गुरु कहलाने वाली, जनता बौराई जाती है।
आपके दर्शाए मार्ग पर लोग लगे हैं देने ध्यान।..................स्वामी जी !

५. टेढ़ी चाल रही जगत् की, यह इतिहास बताता है।
सत्य मार्ग दर्शाने वाला सदा लताड़ा जाता है।
मान-अपमान और कष्ट भूलकर जो निज धर्म निभाता है।
अन्त समय में वही महामानव जननायक कहलाता है।
दृढ़ संकल्प पथिक आप थे, दुर्गम मार्ग बना आसान।......................स्वामी जी !

६. आर्य वीर दल के संचालक, क्रान्तिकारी उपदेशक थे।
आर्य बनाना पूर्ण विश्व को, उज्ज्वल भविष्य के इच्छुक थे।
भ्रष्टाचार का हो उन्मूलन, शासन परिवर्तन चाहते थे।
मनु महाराज और चाणक्य नीति को अपनाना चाहते थे।
धरी रह गई कल्पनाएं सब, होनी नैन बड़ी बलवान्।.....................स्वामी जी !

—सूबेदार विजयसिंह नैन, प्रधान कन्या गुरुकुल खरल

आर्यसमाज के महान् योद्धा : स्वामी रत्नदेव सरस्वती

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की स्थापना करके वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार किया, पाखण्ड अन्धकार में डूबी हुई आर्यजाति को उभार दिया। उसी शृंखला में स्वामी श्रद्धानन्द जैसे वीर संन्यासी पैदा हुए जिन्होंने अपना सर्वस्व बलिदान करके गुरुकुल प्रणाली की पुन: स्थापना की और ऋषि दयानन्द के काम को आगे बढ़ाया। गुरुकुल कांगड़ी व दूसरे गुरुकुलों में पढ़कर अनेक विद्वान् देश-विदेश तक पहुंचे और वैदिक धर्म का प्रचार किया। इसी कड़ी में कड़ी जोड़ते हुए स्वामी रत्नदेव जी आर्यसमाज के एक महान् योद्धा के रूप में कार्यक्षेत्र में आए। जब से घर बार छोड़ करके आर्यसमाज का काम करने के लिए निकले, मेरा सर्वप्रथम सम्पर्क उनसे गुरुकुल झज्जर में हुआ। उनकी लगन, आर्यसमाज के कार्य करने की भावना को देखकर मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि यह नौजवान जरूर जीवन में कुछ करेगा। भारी संघर्षों से गुजरते हुए स्वामी रत्नदेव जी ने अपना रास्ता तय किया। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में अविस्मरणीय कार्य किया। पिछड़े हुए क्षेत्रों में जाकर स्वामी जी ने लड़कियों के लिए शिक्षा के द्वार खोले। नारी की पूजा करवाने के लिए स्वामी जी ने खरल गांव में कन्या गुरुकुल की स्थापना की। यह एक जटिल कार्य था, जिसमें उनको सिद्धि प्राप्त हुई।

गुरुकुल कुम्भाखेड़ा व कन्या गुरुकुल खरल के जलसों में मुझे स्वामी जी हर साल बुलाते थे। मैं इन दिनों संस्थाओं के कार्य को देखकर उनके होते हुए भी खुश होता था और आज भी मुझे इनको पनपता हुआ देखकर बेहद खुशी है। उन्होंने अपने जीवन में चार संस्थाओं का संचालन किया। मैं उनकी कर्मठता को देखकर जरूर कहूंगा कि ये एक कर्मयोगी थे।

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।"

गीता के सिद्धान्त को उन्होंने अपने जीवन में पूणर्परूप से धारण किया हुआ था। चाहे गोरक्षा का कार्य हो, वेदप्रचार का कार्य हो, चाहे शिक्षा का कार्य हो स्वामी जी हर पहलू पर आगे बढ़कर साहसिक कदम रखते थे। वे आर्यसमाज के इतिहास में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बनाकर चले गये। वे बड़ी आयु में भी एक युवक जैसा हृदय रखते थे। कभी भी कमजोरी की बात न कहते थे, न ही सुनना पसन्द करते थे।

स्वामी जी के स्वर्गवासी होने के पश्चात् भी मैं गुरुकुल कुम्भाखेड़ा व कन्या गुरुकुल खरल के उत्सवों पर गया, मुझे वहां स्वामी रत्नदेव जी की तपस्या का स्वरूप दिखाई दिया। गुरुकुल कुम्भाखेड़ा के आचार्य श्री दिलबागसिंह शास्त्री और बहिन दर्शनादेवी आचार्या कन्या गुरुकुल खरल को अपनी-अपनी कमेटियों के सहयोग से अपनी-अपनी संस्थाओं का संचालन कर रहे हैं।

भारतीय संस्कृति के ये गुरुकुलरूपी दीप जलते रहेंगे। यहां से वैदिक धर्म का प्रकाश दुनिया में फैलता रहेगा, स्वामी जी की तपस्या हमें उनकी याद दिलाती रहेगी।

मैं आर्यसमाज के नौजवानों का आह्वान करता हूं कि स्वामी रत्नदेव जी की कर्मठता को अपने जीवन में अपनाकर आर्यसमाज के लिए कुछ कर गुजरने का संकल्प धारण करें। ऐसे महान् योद्धा को यही सच्ची श्रद्धांजलि हो सकती है कि हम उनके कार्य को आगे बढ़ायें। वे संगठनकर्त्ता थे, समस्या से जूझना ही अपना कर्त्तव्य समझते थे, समय के बहुत ही अधिक पाबन्द थे। सारे हरयाणे के अन्दर एक ही क्रान्ति की ज्वाला फूंकने के लिए दिनरात अनथक राही की तरह लगे रहते थे। उनके चले जाने से आर्यसमाजरूपी भवन का एक खम्भा ढह गया।

—स्वामी इन्द्रवेश पूर्व सांसद

स्वामी रत्नदेव : एक महान् व्यक्तित्व

महापुरुषों की पंक्ति में अग्रणी के रूप में अपना नाम लिखवाकर स्व० स्वामी रत्नदेव जी इस संसार से विदा होगये। स्वामी जी मरकर भी अमर हैं। आज उनके द्वारा संस्थापित कन्या गुरुकुल खरल, गुरुकुल कुम्भाखेड़ा, हसनगढ़ पाठशाला व निडाना कन्या स्कूल आदि संस्थाएं उनके अमरत्व की कहानी बड़े गम्भीर स्वर में कह रही हैं। इन संस्थाओं में शिक्षा ग्रहण करके हजारों छात्र-छात्राएं आज भी महर्षि दयानन्द का काम पूरा करने के लिए अग्रसर हैं। एक साधारण किसान के घर में पैदा होकर भी स्वामी रत्नदेव जी के मन में देश और समाज को प्राण देने की प्रबल भावना का मतलब है कि स्वामी जी पूर्वजन्म के संचित प्रबल संस्कारों से अनुप्राणित थे। उनका घर बार छोड़कर समाजसेवा में लगना परम वैराग्य का द्योतक है। जब गोरक्षा आन्दोलन चला, उस समय बालू गांव में स्वामी रत्नदेव जी से मेरा पहला साक्षात्कार हुआ। गऊओं की रक्षा के लिए वे अनेक बार जेल गये। उनको गोवध बन्द करवाने की धुन थी। गोरक्षा आन्दोलन बन्द होने के बाद भी उन्होंने अनेक बार गोरक्षा सत्याग्रह दिल्ली में चलाने का प्रयास किया।

अनेक बार संस्था में व्यवधान पैदा हुए, आर्थिक कठिनाइयों से जूझना पड़ा, अन्तर्विरोधियों का सामना भी करना पड़ा, मगर स्वामी रत्नदेव जी एक क्षणभर के लिए भी नहीं घबराये। वे किसी भी बात को असम्भव नहीं मानते थे। नरवाना के इलाके में किसान-मजदूर अपनी बेटियों को पढ़ाना पाप मानते थे। कन्या गुरुकुल खरल के खुलने से आज यह स्थिति है कि लड़कों से ज्यादा संख्या में लड़कियां पढ़ने लग गई हैं। इस संस्था के चलाने में भी स्वामी जी को अनेक बार संघर्ष का सामना करना पड़ा। उन्होंने कभी भी संघर्षों के दौरान थकान महसूस नहीं की। आज भी उनके स्वर्गवासी होने के पश्चात् दोनों गुरुकुल भारत में अपना नाम रखते हैं। आर्यसमाज को इन संस्थाओं पर नाज है।

स्वामी जी ने अपने स्वास्थ्य का ध्यान न रखते हुए देश और समाज के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। वे जिन्दगी भर बुराइयों से संघर्ष करते रहे। हम स्वामी रत्नदेव जी के जीवन से पुरुषार्थ, संघर्ष, समाजसेवा, शिक्षा-प्रचार, धर्मप्रचार और नैतिकता की भावना को सीख सकते हैं। आज वे हमारे बीच नहीं हैं, मगर उनके आदर्श विचार हमेशा रहेंगे। महर्षि दयानन्द के अधूरे कार्य को पूरा करने के लिए अपनी जीवनांजलि देना ही ऐसे महापुरुषों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

—रामधारी शास्त्री, जीन्द

कैंसर के मुफ्त इलाज का शिविर

(दिनांक १६ मई से २१ मई १६६७ तक)

आर्यसमाज नरेला, दिल्ली-४० के तत्त्वावधान में सेठ मुन्नीलाल सुपुत्र श्री स्व० नत्थूमल जी नरेला निवासी के सौजन्य से स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती द्वारा कैसा भी कैंसर हो, शर्तिया इलाज दिनांक १६-५-९७ से २१-५-९७ तक प्रातः ८ बजे से १२ बजे तक प्रतिदिन किया जायेगा। सम्पर्क करें :-

चौ० लायकराम प्रधान फोन : ७२८२३८५ **मा० पूर्णसिंह आर्य मन्त्री,** फोन : ७२८२२२६

मा० सत्यवीर मन्त्री फोन : ७२८२९३७ **मा० ओम्प्रकाश कोषाध्यक्ष** फोन : ७२८४३६४

मा० राजसिंह आर्य उपमन्त्री फोन : ७२८१५५४

आर्यसमाज नरेला, दिल्ली-४०.

हार्दिक उद्‌गार

श्रद्धेय स्वर्गीय स्वामी रत्नदेव जी सरस्वती आर्यजगत् के एक अमूल्य रत्न थे। पूर्ण यौवनकाल में घर-परिवार तथा सांसारिक विषय जाल से मुख मोड़कर वैदिक धर्म की पावन सेवा का कठोर व्रत धारण कर लिया। नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेकर कार्यक्षेत्र में उतर पड़े।

हरयाणा के पिछड़े क्षेत्र में गुरुकुल कुम्भाखेड़ा तथा कन्या गुरुकुल खरल की स्थापना करके शिक्षा की क्रान्ति का बिगुल बजाया। हिन्दीरक्षा आन्दोलन तथा गोरक्षा आन्दोलन में आर्यनेताओं की प्रथम पंक्ति में खड़े होकर अन्याय के विरुद्ध लोहा लिया। आर्य वीर दल तथा वेदप्रचार मण्डल के अध्यक्ष बनकर घर-घर जाकर समाजसुधार का नाद बजाया।

आर्यसमाज के क्षेत्र में आज ऐसे कर्मठ, वैदिक धर्म के लिए निष्काम भावना से समर्पित महान् व्यक्तित्व का अभाव प्रत्येक समाज सेवक के हृदय में अश्रुधारा बहा रहा है।

—सुखदेव शास्त्री, महोपदेशक दयानन्दमठ, रोहतक

स्वामी रत्नदेव का शुभ आगमन

हरयाणा में रत्नदेव आये हैं, जो कर गये अमर निशानी।
उत्तर में भान खिला हे, प्रकट हुई देवकला हे।
ईश्वर ने साधु बनाये हे...............।
एक नगरी है निडाना, जहां चमका सर्वहित परवाना।
वे सहीराम के घर आये हे............।
बचपन में वैराग्य हुआ था देशहित में ध्यान हुआ था।
घर छोड़ वनों में ध्याये हे............।
शिक्षा का प्रचार करैं थे, सबके संग प्यार करैं थे।
मन सबके हर्षाये हे............।
कहीं गुरुकुल कहीं पाठशाला, कहीं खोली वेद यज्ञशाला।
विद्या के बाग लगाये हे............।
जहां मातृभाषा प्यारी, वहां पढ़ते हैं नर-नारी।
खुशबू के फूल खिलाये हे............।
परहित में सब संघर्ष सहे जेलों में भी ले जाये गये।
पर दिल अन्दर ना घबराये हे............।
इक्कीस अप्रैल की घड़ी आई, ले ली उन्हें हमसे विदाई।
इसमें ना पार बसाये हे............।
कहे दर्शना बहन हमारी, खिलती रहे उनकी फुलवारी।
तन मन अपना लगाये हे............।

—सुमन (१०+२) कन्या गुरुकुल खरल

महान् विभूति को प्रणाम

किया है जो काम स्वामी रत्नदेव आपने।
गायेगी गीत दुनिया जब तक रहेगी।

विद्यालय में बदल गया एकदम रुख तेरा।
ज्ञान से चमक उठा भान की ज्यूं मुख तेरा।
देखा ना सुख तेरा मां और बाप ने।

छोड़कर परिवार प्यार दिल में वैराग्य किया।
इन्द्री मन वश में किये विषयों का त्याग किया।
चेतन चिराग किया सच्चे ओ३म् जाप ने।

२६ जनवरी १९७६ तक खरल में अंधेरा था।
गुरुकुलीय शिक्षा का किसी को न बेरा था।
दिया हुआ घेरा था अविद्या और पाप ने।

माता जी की मौत पर शोक भी छाया था।
छोटीसी उमर में अन्दर न चित्त डगमगाया था।
आपको दुःखी किया अनपढ़ कन्या के विलाप ने।

तेरा ही बन गया वो तेरे जो नजदीक आया।
गुरुकुल कुम्भाखेड़ा खोलकर फिर खरल में चलाया।
कन्याओं को लिखाया पढ़ाया तेरे मीठे आलाप ने।

—सुदेश लिपिका, कन्या गुरुकुल खरल

मेरे संस्मरणों में स्वामी रत्नदेव

स्वामी रत्नदेव जी से सम्पर्क सूबेदार भरतसिंह मोखरा के साथ घोगड़ियां गांव में हुआ। सबसे पहले कन्या गुरुकुल घोगड़ियां में खोलने का विचार बना। कन्या उच्च विद्यालय घोगड़ियां में यज्ञ हुआ तथा एक सौ कन्या पाठशाला खोलने का विचार बनाकर कन्या गुरुकुल खरल व कन्या गुरुकुल हसनगढ़ की शुरुआत की गई। क्योंकि ये दोनों गुरुकुल नियाण खाप में खोलना स्वामी जी की दूरदर्शिता थी। भारत गांवों में बसा है अत: अधिक से अधिक कन्याओं की शिक्षा गांवों में फैलनी चाहिए, यह स्वामी जी महाराज का लक्ष्य था। अपने लक्ष्य के लिए उन्होंने दिनरात प्रयत्न किया। गांव हसनगढ़ की संस्था लोगों की अज्ञानता के कारण सहयोग न दिये जाने पर बन्द हो गई, लेकिन कन्या गुरुकुल खरल एक प्रकाशस्तम्भ की तरह भारत में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी अपनी ज्योति फैला रहा है। संस्थाओं का चलाना कोई आसान कार्य नहीं है। समय-समय पर अनेक समस्याएं अपने पैर फैलाती हैं, जिसके परिणामस्वरूप सन् १९८५ में कन्या गुरुकुल खरल पर भी आर्थिक संकट गहराया। इसे हल करने के लिए स्वामी जी ने आमरण अनशन शुरू कर दिया और दस लाख रुपये एकत्र करने की योजना रखी। हम स्वामी जी के अनशन पर पहुंचे और सौ रुपये के एक हजार सदस्य प्रतिवर्ष कम से कम पांच वर्ष तक बनाने की योजना बनाई गई। हमारे आश्वासन पर स्वामी जी ने अनशन त्याग दिया और इस प्रकार संस्था का आर्थिक संकट दूर किया गया।

स्वामी जी त्यागमूर्ति, अनथक परिश्रमी, निष्ठावान् कार्यकर्त्ता तथा धुन के धनी थे। कई बार असहनीय संकट आये पर कभी भी घबराये नहीं। महर्षि दयानन्द के गुरुदत्त विद्यार्थी की भांति सच्चे भक्त थे। कन्या गुरुकुल खरल व कुम्भाखेड़ा को सुचारुरूप से चालू मानकर जिला जीन्द वेदप्रचार मण्डल का गठन किया तथा वेदप्रचार कार्य में लग गये। कन्या गुरुकुल खरल भी सुचारुरूप से चल रहा है। स्वामी जी को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वरिष्ठ उपप्रधान बनाया गया तथा समय की मांग को देखते हुए उन्होंने जिला जीन्द में शराबबन्दी अभियान शुरू कर दिया। वे हरयाणा के अन्दर स्वच्छ शासन चाहते थे, लेकिन यह दुर्भाग्य रहा कि स्वामी जी बहुत जल्दी ही संसार से चल बसे।

स्वामी जी एक निर्भीक आर्यसमाजी, अनथक योद्धा, सफल कार्यकर्त्ता, कुशल राजनीतिविद्, समाजसेवी, संगठनकर्त्ता तथा परमात्मा के विश्वासी महान् पुरुष थे। हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि हमें उनके आदर्शों पर चलने की शक्ति दे जिससे हम उनके अधूरे कार्यों को पूरा कर सकें।

—रायसिंह आर्य घोगड़ियां

श्री बेगराज शास्त्री का निधन

लाढ़ौत ग्राम में जन्मे और वर्तमान में रोहतक नगरनिवासी श्री बेगराज जी शास्त्री का देहान्त ३० अप्रैल को प्रात:काल होगया। उनकी अन्त्येष्टि खोखराकोट श्मशान भूमि में की गई। उनकी आयु ८० वर्ष थी।

श्रद्धांजलि सभा उनके निवास स्थान पर रोहतक में ११ मई रविवार को प्रात:काल १० बजे होगी।

—वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री

स्वामी रत्नदेव : एक चन्दन का वृक्ष

स्वामी गोरक्षानन्द जी सरस्वती

हरयाणा प्रान्त के जीन्द जिले में एक ग्राम निडाना जिसमें महापुरुष स्वामी रत्नदेव जी का जन्म हुआ। स्थानविशेष की कोई बात नहीं ये धरातल उस परमात्मा का है। उसकी कृपा से इस वसुधा पर पता नहीं किस स्थान पर चन्दन का वृक्ष उग जाये और उसकी महक से इस पृथिवी का भाग बहुत सुगन्धित होजाये। इसी प्रकार स्वामी रत्नदेव जी महाराज एक चन्दन वृक्ष बहुत बड़े परमहंस थे जिनके परोपकार के कार्य संसार में उनके पुरुषार्थ को दर्शा रहे हैं। स्वामी जी महाराज ने लड़कों का गुरुकुल, कन्याओं का गुरुकुल, आर्यसमाज का उत्थान, गोमाता की सेवा, जाति-पाति इस रूढ़िवाद को दूर करने के लिए उन्होंने दिनरात सेवा की। देशभक्ति, गोभक्ति, ईश्वरभक्ति उनके जीवन में टपक रही थी। ऐसे महापुरुष संसार में बहुत कम ही मिलते हैं। अगर स्वामी रत्नदेव जी जैसे हजारों संन्यासी हो जायें तो **"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"** हो सकता है। गोमाता की हत्या बन्द हो सकती है। चारों वर्ण नफरत को छोड़कर एक पटल पर बैठ सकते हैं। बहुत से लोग व्याकरण पढ़ जाते हैं, वेद-दर्शनों को पढ़ जाते हैं, फिर भी उनकी बुद्धि में जाति-पाति का जहर, मान की भूख (लालसा) और दूसरे को गिराने की कोशिश उनके मन के अन्दर बनी रहती है। स्वामी रत्नदेव जी महाराज ऐसे कार्यों से और ऐसे आदमियों से सदा दूर रहते थे क्योंकि मैंने उनको बहुत नजदीक से देखा है। इसलिए उस महापुरुष के गुणों को जानता हूं, उनमें क्या गुण थे। मैं तो कहूंगा स्वामी जी महाराज बहुत बड़े कर्मयोगी थे। वे कथनी को महत्त्व न देकर करनी के महत्त्व को मानते थे इसलिए मैं उनको कर्मयोगी मानता हूं। वे दिनरात परोपकार के कार्य में लगे रहते थे। ईश्वरभक्ति, गोभक्ति, देशभक्ति, गरीबों का उत्थान, इन कर्मों को दिनरात करके भी उन्होंने थकान को महसूस नहीं किया वे अत्यन्त पुरुषार्थी थे। इसमें कपिल मुनि का भी प्रमाण है :-

अथ त्रिविधदुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थः। (१।१)

तीन प्रकार के दुःखों को दूर करने के लिए यह सांख्यदर्शन का प्रथम सूत्र लिखा गया है। आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक दुःखों से संसार पीड़ित रहता है इसलिए स्वामी रत्नदेव जी महाराज ने दुःखों की निवृत्ति के लिए ही पुरुषार्थ का कार्य किया है। सांख्यशास्त्र में दूसरा सूत्र भी आता है :-

कार्यतस्तत्सिद्धेः।। (२।६)

किसी के कार्य को देखकर उसकी सिद्धि का प्रमाण मिलता है। जैसे :- दो गुरुकुल, दो पाठशाला और गुरुकुलों से कितने लड़के शास्त्री तथा कितनी लड़कियां शास्त्री करके आज पुरुषार्थ का कार्य कर रहे हैं इसलिए उनकी सिद्धि का प्रमाण मिलता है। स्वामी जी महाराज का रत्नदेव नाम रखा गया है यथा नाम तथा गुण। लड़के-लड़कियों को रत्न बनाकर देश को सौंप दिया, जो देश का बहुत बड़ा काम कर रहे हैं। इति।

—स्वामी गोरक्षानन्द सरस्वती
गोशाला बाबा फूलू साध, उचाना खुर्द, जीन्द

आर्य सन्त, मनस्वी सेवक : स्वामी रत्नदेव

स्वामी रत्नदेव जी का जीवन भी आर्यसमाज के संस्कारों से ओतप्रोत था। वे महान् पुरुष थे। स्वामी जी का परिवार आर्य परिवार था। वे बचपन से ही आर्यसमाज के संस्कारों में पले तथा बढ़े। आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के जीवन से प्रेरणा ली। महर्षि जी के लिखे अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश का अच्छी प्रकार अध्ययन व मनन किया। इसलिए शिक्षा-दीक्षा के उपरान्त आजीवन ब्रह्मचारी रहने का संकल्प लिया। वे व्यक्ति, समाज व राष्टनिर्माण हेतु संसार-समर में कूद पड़े। समाज में फैल रही कुरीतियों, अन्धविश्वासों तथा अपराधों को हटाने के लिए वैदिक प्रचार के कार्य में जुट गये। स्वामी जी का प्रारम्भिक कार्यक्षेत्र जिला जीन्द रहा। लेकिन कुछ समय उपरान्त जीन्द से बाहर हरयाणा प्रान्त तथा दूसरे प्रान्तों में भी आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के कार्यों के लिए समय लगाया। स्वामी जी प्रारम्भिक जीवन में शिक्षा उपार्जन के अनन्तर गुरुकुल भैंसवालकलां में गये। वहां के तत्कालीन आचार्य श्री महामुनि जी से मिले। स्वामी जी आचार्य महामुनि जी की जीवनचर्या से बड़े प्रभावित थे। आचार्य महामुनि जी गुरुकुल भैंसवाल के प्रारम्भ के स्नातकों में से थे। स्वामी रत्नदेव जी आचार्य महामुनि जी से मिलकर तथा कुछ समय उनके निकट रहकर उनसे बहुत प्रभावित हुए। इसके उपरान्त स्वामी जी गुरुकुल झज्जर के आचार्य स्वामी ओमानन्द (आचार्य भगवान्देव) जी से मिले और उनके गुरुकुल में कुछ समय तक निवास किया। वहां रहकर उन्होंने वैदिक धर्म के प्रचार का कार्य करने की योजना बनाई।

स्वामी रत्नदेव जी ने बालकों की शिक्षा वैदिक पद्धति से दिलवाने का निश्चय किया और बालकों की शिक्षा हेतु गुरुकुल खोलने का निश्चय किया। उन्होंने जिला हिसार के पिछड़े क्षेत्र कुम्भाखेड़ा गांव में गुरुकुल की स्थापना की। यह गुरुकुल सुव्यवस्थित ढंग से चल रहा है और इसके आचार्य श्री दिलबागसिंह जी हैं। बालकों की शिक्षा के साथ-साथ उन्होंने बालिकाओं की शिक्षा के लिए नरवाना तहसील खरल गांव में कन्या गुरुकुल की स्थापना की। आज कन्या गुरुकुल खरल में भारतवर्ष के भिन्न-भिन्न प्रान्तों की तथा विदेशों की बालिकाएं शिक्षा पा रही हैं। कन्याओं की आवास की, भोजन की तथा पढ़ाई-लिखाई की इस गुरुकुल में अति उत्तम व्यवस्था है। इस गुरुकुल की आचार्या डा० दर्शना जी हैं। कु० दर्शना आचार्या ने घर की समस्त सुख-सुविधाओं का परित्याग करके कन्याओं की सेवा का व्रत लिया हुआ है। ये विदुषी, तपस्विनी हैं। बड़ी साहसी, निर्भीक व उद्यमी हैं। गुरुकुल की सेवा दिनरात परिश्रमपूर्वक करती हैं। इस गुरुकुल के वर्तमान प्रधान व कुलपति श्री विजयसिंह नैन हैं। श्री नैन साहब बड़े सुध-बुध के नेक इन्सान व सच्चे गुरुकुल हितैषी हैं। प्रधान जी गुरुकुल के विकास के कार्यों में आचार्या कु० दर्शना जी को पूरा सहयोग देते हैं।

स्वामी रत्नदेव जी ने बालक-बालिकाओं की गुरुकुल प्रणाली से शिक्षा की व्यवस्था करके वैदिक धर्म के प्रचार की ओर अपने को समर्पित कर दिया। वे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के वरिष्ठ उपप्रधान रहे। गोरक्षा आन्दोलन में बढ़चढ़कर कार्य किया। शराबबन्दी आन्दोलन में श्री विजयकुमार आई०ए०एस० के साथ मिलकर कार्य किया और बाद में हरयाणा शराबबन्दी आन्दोलन के संयोजक के रूप में कार्य किया। स्वामी जी कहा करते थे कि मनुष्य जिस काम

को करने की ठान ले और हिम्मत से काम ले तो उसे सफलता अवश्य मिलती है। मनुष्य को विपत्ति में कभी घबराना नहीं चाहिए। बुराई का डटकर मुकाबला करना चाहिए। स्वामी जी अपने इन दृढ़संकल्पों के साथ वेदप्रचार और शराबबन्दी के कार्यों में जुट गये। शराबबन्दी के लिए स्वामी जी ने पदयात्राएं कीं, गांव-गांव में उत्सव किये। वेदप्रचार करके लोगों में शराब व दूसरे नशों की बुराइयां तथा हानियां उजागर कीं। इस तरह स्वामी जी ने जनसेवा में अपना सारा जीवन समर्पित कर दिया। भूख-प्यास की परवाह न करके वेदप्रचार में मतवाले होगये। शरीर से रोगी होगये लेकिन कोई परवाह न करके समाज में फैलती जारही बुराइयों को हटाने के लिए प्रचार करते हुए व अपने जीवन को न्यौछावर कर गये। वे हम सबके लिए प्रेरणास्रोत हैं।

स्वामी रत्नदेव जी (वेदानन्द जी) का जीवन तप और त्याग की साक्षात् मूर्ति था। उन्होंने कभी भी धन-सम्पत्ति का संचय नहीं किया। अपनी सुख-सुविधाओं के लिए कोठी बंगले नहीं बनवाये। बैंकों में रुपया-पैसा जमा नहीं करवाया। वे सचमुच "कुम्भीधान्य" सन्त-महात्मा थे। वे जिस काम को, जिस योजना को प्रारम्भ करते उसे पूरा करके ही दम लेते थे क्योंकि **"प्रारब्धमुत्तमजना न परित्यजन्ति।"** स्वामी जी ने सेवाकार्यों में सर्दी-गर्मी, आंधी-तूफान की कभी परवाह नहीं की–**"कार्यं वा साधयेयम् देहं वा पातयेयम्"** उनका लक्ष्य था। वे जिसे मिलने का अथवा उत्सव आदि में आने का जो समय निर्धारित करते, वे ठीक समय पर उपस्थित हो जाते थे। वे खानपान के सादे थे। जो मिल जाता उसी में सन्तुष्ट रहते थे। स्वामी जी मिलनसार, हंसमुख, निस्पृह तथा समभाव के सन्तोषी सन्त थे। स्वामी जी का जीवन तप-त्याग तथा तपस्या का साक्षात् मूर्तरूप था। वे मनस्वी थे। वे चिन्तक तथा साधक थे। आर्यसमाज के महान् पुरुष व साहसी योद्धा थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती के सच्चे अनुयायी थे। वेद के पुजारी थे। स्वामी जी का जीवन प्रेरणादायक व अनुकरणीय है।

–इन्द्रदेव शास्त्री

प्रिंसिपल छोटूराम किसान कालिज, जीन्द

क्रान्तिकारी विचारोंवाला स्वामी नहीं रहा

सुदूर ग्रामीण अंचल में छोटे-छोटे जुगनुओं के समान प्रकाश फैलानेवाली तमाम भारतवर्ष के कोने-कोने से उमड़ी उठी बालिकाओं से जगमग जिला जीन्द का खरल गांव सौभाग्यशाली ही कहना चाहिए जिसका स्वामी रत्नदेव जी जैसे कर्मयोगी संन्यासी ने अपनी कर्मस्थली के रूप में चयन किया।

यद्यपि उनके साथ काम करने का थोड़ा ही अवसर, मिला। उन्होंने शराबबन्दी आन्दोलन का जीन्द जिले में नेतृत्व किया। वेदप्रचार का कार्य भी बड़े सुचारुरूप में संचालन करने में सबसे अग्रणी रहे। उनके साथी प्रो० ओम्‌कुमार जी ने उनके साथ वेदप्रचार मण्डल जीन्द के माध्यम से आर्यसमाज संस्थाओं में नये जीवन का संचार किया और नई आर्यसमाजें बनाने का भी बीड़ा उठाया।

उनके कार्यक्षेत्र में कई बार ईर्ष्यालु लोगों ने विघ्न डालने का प्रयत्न भी किया परन्तु सब कुछ बड़े धैर्य के साथ सहन करते हुए विजयश्री प्राप्त की।

मैं उनकी कार्यशैली से बड़ा प्रभावित था और आपस में कुछ नजदीकी होने का प्रयत्न भी किया परन्तु मेरा यह दुर्भाग्य ही कहूंगा कि उनके साथ घनिष्ठता करने में सफलता नहीं मिली और ईश्वर ने अपने पास आने का बुलावा भेज दिया।

उनके इस असामयिक निधन से जहां जगमग करता हुआ मनुष्यों का समूह मुंह ताकता रह गया वहां आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता भी बेसहारा रह गये।

–सूबेसिंह पूर्व सभामन्त्री

सर्वहितकारी ७ मई, १९९७
रजि० नं० P/RTK-४९

प्रेषक :-
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन
दयानन्दमठ, रोहतक

सेवा में :-

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० २३२०७/७३ रजि० नं० P/RTK—४६ फोन :- ४०७२२

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

सम्पादक :- वेदव्रत शास्त्री, सभामन्त्री सहसम्पादक :- डा० सुदर्शनदेव आचार्य

वर्ष २४ अंक ३६ १४ अगस्त १९९७ वार्षिक शुल्क ५०) आजीवन शुल्क ५००)

वेद स्वाध्याय विशेषांक

स्वाध्यायान्मा प्रमद

प्रतिदिन नियमपूर्वक स्वाध्याय कर

"यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः"। (वेद)

मैं कल्याणवाणी वेद का सबके लिये उपदेश करता हूं।

पहले वेदांग पढ़ें

महर्षि मनु, महर्षि पतञ्जलि, महर्षि दयानन्द सरस्वती आदि सभी महर्षियों ने वेद के पढ़ने-पढ़ाने का निर्देश/उपदेश दिया है। यह सर्वथा मानने और क्रियात्मक रूप में अनुष्ठान करने योग्य है।

सहस्रों वर्षों की दासता और सामाजिक परिस्थितियों के कारण वर्तमान में वेद को विधिवत् पढ़ने-पढ़ाने की परम्परा क्षीण होगई है। इसी कारण कुछ विशिष्टजनों को छोड़कर अधिकांश जनसमुदाय वेद के अध्ययन में अपने आप को सक्षम नहीं समझ रहा है।

कुछ श्रद्धालु स्त्री पुरुष जो साधारण पढ़े लिखे होते हैं, वेदभाष्य खरीदकर वेद पढ़ना (स्वाध्याय करना) आरम्भ कर देते हैं। निरन्तर दीर्घकाल तक वेद का स्वाध्याय करके भी वे अपने परिश्रम के अनुसार फल प्राप्त नहीं कर पाते और कुछ वेद से विमुख भी हो जाते हैं।

ऐसे श्रद्धालु सज्जनों से मेरा निवेदन है कि वे वेद से पहले वेदांगों के पढ़ने में कुछ परिश्रम करें। १. शिक्षा, २. कल्प, ३. व्याकरण, ४. निरुक्त, ५. छन्द और ६. ज्योतिष ये ६ वेदांग हैं। जो जितना अधिक पढ़ सकेगा वह अधिक लाभ प्राप्त करेगा। कम से कम शिक्षा, व्याकरण और निरुक्त की जानकारी वेद के स्वाध्याय से पूर्व आवश्यक है। वेदांगों में व्याकरण प्रधान वेदांग माना गया है। इसके पढ़ने में कुछ अधिक परिश्रम करना पड़ता किन्तु इसके पश्चात् अन्य शास्त्रों के पढ़ने में अधिक श्रम नहीं करना पड़ता।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के तीसरे समुल्लास में इस विषय में विस्तार से लिखा है। वे लिखते हैं कि पढ़ने और पढ़ानेवाले ध्यानपूर्वक पढ़ें तो शिक्षा, व्याकरण और निरुक्त चार पांच वर्ष में पढ़-पढ़ाकर शब्दशास्त्र का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

आर्यों से निवेदन है कि अपने पुत्र और पुत्रियों को ऐसे गुरुकुलों में पढ़ावें जहां वेद-वेदांगों के पठन-पाठन की व्यवस्था है और स्वयं कुछ समय निकालकर वर्णोच्चारणशिक्षा, अष्टाध्यायी, महाभाष्य निरुक्त आदि का अध्ययन करें। इनके पढ़ने में कुछ वर्ष जरूर लगेंगे किन्तु बाद में आप देखेंगे कि आपके लिये वेद का पढ़ना सरल होजायेगा और थोड़े ही परिश्रम से अधिक लाभान्वित हो सकेंगे।

ऐसे अनेक व्यक्ति हैं जिन्होंने बड़ी आयु में व्याकरण निरुक्त आदि पढ़कर वेदों का अध्ययन किया है और वेदभाष्य तक भी किया है। बड़ी आयु के सज्जन निराश न हों। शरीर वृद्ध होता है आत्मा नहीं। जब भी आप धारणा बनाकर अध्ययन प्रारम्भ करेंगे, सफलता अवश्य मिलेगी।

-वेदव्रत शास्त्री

श्रावणी पर्व पर वेदाध्ययन का सन्देश

❑ डॉ० रामनाथ वेदालंकार, वेदमन्दिर, ज्वालापुर (हरद्वार)

प्राचीन परंपरा में वेदाध्ययन द्विजमात्र का पवित्र कर्त्तव्य माना जाता था। मनु ने कहा है कि जो वेद नहीं पढ़ता वह इसी जन्म में शूद्रत्व को प्राप्त कर लेता है। पतंजलि कहते हैं कि ब्राह्मण को चाहिए कि वह निष्कारण ही अर्थात् बिना किसी लाभ की आशा के छहों अंगों से युक्त वेद का अध्ययन करे और उसका ज्ञान प्राप्त करे। तो आइये, 'वेद क्यों ?' इसका उत्तर खोजने का यत्न करें।

साहित्यिक दृष्टि

वेदों की गणना उच्चकोटि के साहित्यों में की जाती है। वेद के ही शब्दों में वेद एक ऐसा काव्य है जो न कभी मरता है, न कभी पुराना होता है-**देवस्य पश्य काव्यं न ममार न जीर्यति** (अथर्व० १०.८.३२)। जो काव्य में उत्कर्षाधायक तत्त्व अभिधा, लक्षणा, व्यंजना, शब्दालंकार, अर्थालंकार आदि माने जाते हैं वे सब वेदकाव्य में उत्कृष्ट रूप में विद्यमान हैं। वेद के शब्दों में विविध अर्थों को देने की जैसी शक्ति उपस्थित है, वैसी संसार की अन्य किसी भी भाषा में नहीं है। वेद के अनेक मंत्र जिस प्रकार अध्यात्म, अधिदैवत, अधियज्ञ, अधिराष्ट्र आदि विविध अर्थों को देने की क्षमता रखते हैं वैसी क्षमता किसी अन्य भाषा के साहित्य में नहीं है। वेदों के मन्त्र कवीन्द्र रवीन्द्र की गीतांजलि के गीतों से अधिक भावपूर्ण हैं। यदि हम कालिदास, भवभूति, भारवि, माघ, श्री हर्ष, बागभट्ट आदि संस्कृत कवियों के साहित्य को पढ़ने में गौरव अनुभव कर सकते हैं, तो वेद का साहित्य तो उससे भी अधिक प्राजंल है। यदि हम ग्रीक, लेटिन, अंग्रेजी, पारसी, फ्रेंच, रशियन, जर्मन, तमिल, मराठी, बंगाली, गुजराती, हिन्दी आदि साहित्य को पढ़ते समय यह प्रश्न नहीं उठाते कि इस साहित्य को क्यों पढ़ें तो वैदिक साहित्य के लिए ही प्रश्नचिन्ह क्यों ? साहित्य का अध्ययन स्वान्तःसुखाय होता है, वह स्वान्तःसुख वैदिक साहित्य के मर्म में प्रवेश करनेवाले साहित्याराधक को कहीं अधिक प्राप्त हो सकता है।

सांस्कृतिक दृष्टि

वैदिक संस्कृति संसारभर की संस्कृतियों में एक विशिष्ट संस्कृति है। वर्णाश्रमव्यवस्था, यज्ञ, दान, अतिथि-सत्कार, तपस्या, ब्रह्मचर्य, अनिवार्य शिक्षा, आतुरों की सेवा, ईश्वरपूजा, सौहार्दभावना, स्वराज्य, समृद्धि, अग्रगामिता, पाशविक शक्तियों पर विजय आदि इस संस्कृति के प्रमुख अंग हैं। वैदिक संस्कृति का उपासक जिस स्तर पर खड़ा है उससे और ऊंचा उठना चाहता है। उसकी यह अभीप्सा होती है कि पृथिवी से उठकर मैं अन्तरिक्ष में पहुंच जाऊ, अन्तरिक्ष से उठकर द्युलोक में पहुंच जाऊं, द्युलोक से उठकर स्वर्लोक में पहुंच जाऊं। इस संस्कृति पर हम नहीं सारा विश्व मुग्ध है। वैदिक संस्कृति का अध्ययन करने के लिए ही जर्मनी, इंग्लैंड आदि देशों के विद्वानों ने भी वेदों का अध्ययन किया है और इतना परिश्रम किया है कि हमारा परिश्रम उसके आगे हार मानता है, यद्यपि यह दूसरी बात है कि वे कई ऐसे परिणामों पर पहुंचे हैं जिनसे वेदाध्ययन की भारतीय विचारधारा सहमत नहीं हो सकती। जो संस्कृति इतनी महत्त्वपूर्ण है उसका प्रामाणिक ज्ञान हम वेदों को पढ़कर ही कर सकते हैं। गंभीर और सही पद्धति से वेदों का अध्ययन न होने के कारण पाश्चात्यों ने वैदिक संस्कृति के संबंध में जो कई एक अनर्थमूलक कल्पनाएं कर डाली हैं, उनकी परीक्षा भी हम वेदों का गहन अध्ययन करके ही कर सकते हैं।

भाषावैज्ञानिक दृष्टि

भाषाविज्ञान पाश्चात्य देशों में नवीन विज्ञान के नाम से उदित हुआ है, जिसे आरंभ हुए लगभग सवासौ वर्ष ही हो पाये हैं, यद्यपि भारतीय अलंकारशास्त्री और वैयाकरण पहले ही इसके अनेक अंगों पर पर्याप्त अनुसंधान कर चुके थे। यह भाषाविज्ञान ग्रीक, लेटिन, अंग्रेजी, वैदिक एवं लौकिक संस्कृत, पाली, प्राकृत, भारत की प्रान्तीय भाषाओं आदि के तुलनात्मक अध्ययन से विकसित हुआ है और आज भी यह विकासोन्मुख ही है, क्योंकि इसके सिद्धान्त अभी अन्तिम रूप से मान्य नहीं कहे जा सकते। इस भाषाविज्ञान के विकास में वैदिकभाषा के अध्ययन ने विशेष योगदान दिया है और आगे भी दे सकता है। आज भाषाविज्ञान में भारोपीय भाषा-परिवार सबसे बड़ा और महत्त्वपूर्ण परिवार माना जाता है, जिसका उद्गम किन्हीं अंशों में वैदिक भाषा-परिवार से भिन्न परिवारों को सर्वथा स्वतन्त्र मानता है, और उनका वैदिकभाषा से कोई संबंध नहीं स्वीकार करता। किन्तु वैदिकभाषा के अधिकाधिक तुलनात्मक अध्यनन से भविष्य में संभव है हम इस परिणाम पर भी पहुंच सकें कि सभी भाषा-परिवार किसी सीमा तक वैदिकभाषा से सम्बद्ध हैं। तब भाषाविज्ञान के क्षेत्र में वेद और भी अधिक महत्त्व की वस्तु बन जायेंगे एवं भाषावैज्ञानिक दृष्टि से भी वेदों का एवं वैदिकभाषा का अध्ययन स्वागत योग्य है।

धार्मिक दृष्टि

भारतीय धर्मशास्त्र में वेदों का सबसे अधिक महत्त्व माना गया है। यदि वेद और स्मृति आदि में कहीं परस्पर विरोध हो तो उस दशा में वेद की बात ही प्रामाणिक मानी जाएगी, यह सर्वमान्य सिद्धान्त रहा है। उदाहरणार्थ, यदि किसी स्मृति में स्त्रियों को वेदाध्ययन के अधिकार से वंचित किया गया है तो उस स्मृति की यह बात वेदविरुद्ध होने से मान्य नहीं है। इसी प्रकार यदि किसी धर्मग्रन्थ में यज्ञों में पशुबलि देने का विधान है, तो यह भी वेदविरुद्ध होने से त्याज्य ठहरेगा। मध्यकाल में वेदों के नाम पर अनेक वेदविरुद्ध बातें बालविवाह, छुआछूत, मूर्तिपूजा, अनेकेश्वरवाद, जन्ममूलक वर्णव्यवस्था, मृतक-श्राद्ध आदि प्रचलित हो गयी थीं, स्वामी दयानन्द के समय भी चल रही थीं, और पत्र-पत्रिकाओं में लेख लिखे जाते हैं कि गोहत्या और गोमांसभक्षण वेदानुमोदित है, वेदों में नारी की घृणित स्थिति है, सतीप्रथा वेद से ही आयी है, धार्मिक असहिष्णुता वेदों की देन है आदि। वेदों पर थोपी जानेवाली इस प्रकार की वेदविरुद्ध बातों का खण्डन हम तभी कर सकेंगे, जब हमारा वेदों का गम्भीर अध्ययन होगा।

धार्मिक दृष्टि से कर्त्तव्याकर्त्तव्य का बोध करने के लिए भी वेदाध्ययन की आवश्यकता है। क्या धर्म है और क्या अधर्म है, यह वेद ही बतलाता है। पर वेद उसे ही बतला सकता है, जो वेदज्ञ है। अल्पश्रुत व्यक्ति वेद से धर्माधर्म का बोध प्राप्त नहीं कर सकते। इसीलिए उक्ति प्रसिद्ध है कि अल्पश्रुत व्यक्ति से वेद भय खाता है कि यह तो उल्टा मुझ पर ही प्रहार कर देगा-**बिभेत्यल्पश्रुताद् वेदो मामयं प्रहरिष्यति।** यही सब ध्यान में रखकर आर्यसमाज के नियमों में यह सम्मिलित किया गया है कि 'वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।"

आनुसन्धानिक दृष्टि

वैदिकभाषा और वैदिक साहित्य बहुत महत्त्वपूर्ण है, यह हम अभी ऊपर कह चुके हैं। भारत के प्राचीन मनीषियों ने वेदों पर बहुत कुछ अनुसंधान किया था। प्रातिशाख्यकारों ने एवं आचार्य पाणिनि आदि वैयाकरणों ने वैदिकभाषा का सूक्ष्म अध्ययन करके तत्संबंधी नियमों का आविष्कार किया था। याज्ञवल्क्य आदि ब्राह्मणग्रन्थकारों एवं श्रौतसूत्रकारों ने वेदों के आधार पर याज्ञिक कर्मकाण्ड तैयार किया था। गृह्यसूत्रकारों ने वेदों के आधार पर जातकर्म, नामकरण आदि संस्कारों की सृष्टि की थी। अनुक्रमणीकारों ने वेदमन्त्रों के ऋषि, देवता, छन्दों का पर्यविक्षण किया था। वेदों के

ही आधार पर आरण्यकग्रन्थों एवं उपनिषदों की रचना हुई थी। ब्राह्मणग्रन्थकारों एवं नैरुक्तों ने वेदार्थ का अनुसंधान किया था। कतिपय वेदभाष्यकार भी इसमें सहायक हुए थे। महर्षि दयानन्द ने इस वेदानुसन्धान को और आगे बढ़ाया। वेदविरुद्ध प्रचलित मिथ्या धारणाओं को बलपूर्वक झकझोरा और सत्य वेदार्थ को प्रकाशित किया। वेदार्थ के सम्बन्ध में अनेक नवीन दिशाओं को प्रशस्त किया। आज भी वेद प्रतीक्षा कर रहे हैं कि वैदिकभाषा पर, वेदार्थ पर और वैदिक मान्यताओं एवं सिद्धान्तों पर सही दिशा में अनुसंधान हो। वेदों के अनेक सूक्त रहस्यों से भरे हुए हैं, उन रहस्यों का उद्घाटन आज भी अपेक्षित है। वैदिकभाषा पर प्रातिशाख्यों, पाणिनि के वैदिक व्याकरण और मैकडानल की 'वैदिकग्रामर' के होते हुए भी आज भी अनुसंधान की आवश्यकता है। हम वेदानुसंधान की दिशा को पाश्चात्य विचारधारा के चाकचक्य से मुक्त करके उनकी अच्छाइयों को ग्रहण करते हुए एक नया मोड़ दे सकते हैं, और वह नया मोड़ होगा दयानन्द-प्रदर्शित वैदिक मान्यताओं के प्रकाश में।

बालक, युवक, वृद्ध, नर-नारी सभी को चाहिए कि प्रतिदिन वैदिक स्वाध्याय करें, और वेद में जो कर्त्तव्य प्रेरणाएं आशावाद, आत्म-विश्वास एवं अग्रगामिता का संदेश दिया गया है उससे अनुप्राणित होकर जीवन में सदा अग्रगामी बने रहें। प्राचीनकाल में श्रावण पूर्णिमा को वेदाध्ययन का सत्र प्रारंभ होता था और सम्मिलित वेदपाठ की ध्वनि से दिशाएं मुखरित हो जाती थीं। साथ ही वेदार्थ का अनुसंधान भी होता था। ऋग्वेद के मण्डूक सूक्त में वर्षा ऋतु में मेंढकों के संगीत की उपमा व्रतचारी ब्राह्मण बटुओं के सस्वर वेदपाठ से दी गयी है। इसी का अनुकरण करते हुए कवि तुलसी ने भी कहा है - 'दादुर धुनि चहुं ओर सुहाई, वेद पढ़त जनु बटु समुदाई'। आइये, श्रावणी के पवित्र पर्व पर हम सब मिलकर वेदाध्ययन का व्रत धारण करें।

वेदों का डंका

टेक – वेदों का डंका बजा दिया ऋषि दयानन्द ने

सब भारतवासी सोवें थे, उन्हें हाथ पकड़कर उठा दिया
जो जाति के अभिमानी थे, उनको नीचा दिखा दिया
जिनको शूद्र बतलाते थे, ब्राह्मण और क्षत्री बना दिया
स्त्रियों को नहीं पढ़ावें थे, कन्या विद्यालय खुला दिया
जो मुफ्ती माल उड़ावें थे, अब उनको काम पै लगा दिया
सब ईसाई यवन घबराये, हिन्दुओं का हाजमा बढ़ा दिया
घर घर में डैरूं बाजें थे, भक्तों का कूदना छुड़ा दिया
कहीं पोप बैठते वरण में, गरुड़ ठिकाने धरा दिया
कहीं विधवा गर्भ कढ़ावें थी, उनका पुनर्विवाह रचा दिया
कहीं पोप मोल 'जप' बेचें थे, अब गायत्री को जपा दिया
सब मिलन लगे भारतवासी, इस फूट आग को बुझा दिया
'नित्यानन्द' आल्हा गाया करते, आर्यों का भजनी बना दिया

(स्वामी नित्यानन्द आर्योपदेशक, "गीत हरयाणा" से)

सम्पादकीय

श्रावणी-उपाकर्म
(ऋषि-तर्पण)

प्राचीनकाल में वेद और वैदिक साहित्य के ही पठन-पाठन का प्रचार था। वैसे तो लोग प्रतिदिन वेद का स्वाध्याय करते थे। किन्तु वर्षाऋतु में वेद के स्वाध्याय का विशेष आयोजन किया जाता था। इसका कारण यह है कि भारतवर्ष एक कृषिप्रधान देश है। यहां की जनता आषाढ़ और श्रावण मास में कृषि-कार्य में व्यस्त रहती थी। श्रावणी (सावणी) की जुताई और बुवाई आषाढ़ से लेकर श्रावण मास के अन्त तक समाप्त हो जाती है। लोक श्रावणी पूर्णिमा पर कृषि-कार्यों से निवृत्त होकर वेद के स्वाध्याय में प्रवृत्त हो जाते थे। ऋषि-मुनि लोग भी वर्षा के कारण अरण्य को छोड़कर ग्रामों के निकट आकर रहने लगते थे और वहीं वेदाध्ययन, धर्म-उपदेश और ज्ञानचर्चा में अपना चातुर्मास्य (चौमासा) बिताते थे। श्रद्धालु लोग उनके पास जाकर वेद-अध्ययन और उपदेश-श्रवण में अपना समय लगाते थे और ऋषि-जनों की सेवा करते थे। इसलिए यह समय ऋषि-तर्पण भी कहलाता है। जिस दिन से वेदपारायण का उपक्रम=आरम्भ किया जाता था उसे 'उपाकर्म' कहते हैं। यह वेदाध्ययन श्रावण सुदी पूर्णिमा को आरम्भ किया जाता था अतः इसे 'श्रावणी उपाकर्म' कहा जाता है। जैसा कि पारस्कर गृह्यसूत्र में लिखा है- "अथातोऽध्यायोपाकर्म। ओषधीनां प्रादुभवि श्रावण्यां पौर्णमास्याम्" (२।१०।२-२)

यह वेदाध्ययन का उपाकर्म श्रावणी पूर्णिमा से आरम्भ होकर पौष मास की अमावस्या तक साढ़े चार मास चलता था। पौष मास में इस उपाकर्म का उत्सर्जन (समाप्ति) किया जाता था। जैसाकि मनुस्मृति में लिखा है-

श्रावण्यां प्रौष्टपद्यां वाप्युपाकृत्य यथाविधि।
युक्तश्छन्दांस्यधीयीत मासान् विप्रोऽर्धयञ्चमान्।।
पुष्ये तु छन्दसां कुर्याद् बहिरुत्सर्जनं द्विजः।
माघशुक्लस्य वा प्राप्ते पूर्वार्द्धे प्रथमेऽहनि।।

(४।९५-९६)

अर्थ-श्रावणी और प्रौष्ठपदी (भाद्रपद) पौर्णमासी तिथि से प्रारम्भ करके ब्राह्मण लगनपूर्वक साढ़े चार मास तक छन्द=वेदों का अध्ययन करे और पौष मास में अथवा माघ शुक्ला प्रतिपदा को इस उपाकर्म का उत्सर्जन करे।

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के दस नियमों में तृतीय नियम यह दिया है कि **"वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।"** आर्यों को चाहिए कि वे इस श्रावणी उपाकर्म से प्रतिदिन वेद के स्वाध्याय का व्रत लें। प्रतिदिन सन्ध्या और अग्निहोत्र किया करें। अपने घर पर 'ओ३म्' की पताका लगावें। नवीन यज्ञोपवीत धारण करके अपने स्वाध्याय आदि व्रतों में आई शिथिलता को दूर करें। वेद का स्वाध्याय न करने से ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य लोग शूद्र कोटि में चले जाते हैं निषाद और राक्षस बन जाते हैं। वेद के स्वाध्याय से शूद्र भी ब्राह्मण कोटि में चला जाता है।

रक्षाबन्धन :-

राजपूतकाल में नारियों के द्वारा वीरों के हाथों में अपनी रक्षा के लिये राखी बांधने की परिपाटी प्रारम्भ हुई। कोई नारी राखी भेजकर जिस वीर को अपना राखी-बन्द भाई बना लेती थी वह उसकी आजीवन रक्षा करना अपना कर्त्तव्य समझता था। चित्तौड़ की महारानी कर्णवती ने मुगल बादशाह हुमायूं को गुजरात के बादशाह से अपनी रक्षा के लिये राखी भेजी थी और

बादशाह हुमायूं ने तत्काल चित्तौड़ पहुंचकर उसकी रक्षा की थी तब से यह रक्षाबन्धन की परिपाटी चली आ रही है। श्रावणी उपाकर्म के शुभ पर्व पर रक्षा-बन्धन के माध्यम से युवक और युवतियां परस्पर भाई-बहन के रिश्ते में बंधकर राष्ट्र की अनेक अपहरण, बलात्कार आदि समस्याओं का समाधान कर सकते हैं और राष्ट्रीय-चरित्र को आदर्श बना सकते हैं।

वेद-स्वाध्याय विशेषांक-

वेद के स्वाध्याय व्रत की स्मृति में आपके प्रिय पत्र सर्वहितकारी का यह 'वेद-स्वाध्याय विशेषांक' आपकी सेवा में प्रस्तुत किया जारहा है। इसमें आर्यजगत् के उच्चकोटि के वैदिकविद्वान् डा० रामनाथ वेदालंकार तथा पं० भद्रसेन आदि आर्य विद्वानों ने अपने महत्त्वशाली लेख भेजकर इस विशेषांक की शोभा बढ़ाई है। अत: वे धन्यवाद के पात्र हैं। श्रावणी पर्व के शुभ अवसर पर सर्वहितकारी के पाठक वेंद-स्वाध्याय के पावन यज्ञ में सहयोग प्रदान कर अवश्य ही पुण्यार्जन करेंगे।

-सुदर्शनदेव आचार्य, सह-सम्पादक

श्रावणी त्यौहार

रचियता - **स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती,**
अधिष्ठाता वेदप्रचार विभाग, आ०प्र०सभा दिल्ली

नभ छाई घटा काली – चारों ओर हरियाली, सावन मास की निराली,
आई अजब बहार है।
दादुर, पपीहा रहे बोल, डोलें तितलियों के टोल, करें कोकिला किलोल,
चले पुरवाई बयार है।।
दमके दामिनी गगन में, मोर कहुक रहे वन में, महक चमन में सुमन में,
नन्हीं नन्हीं बौछार है।
लदी फूलों से बबूल, मौसम सुन्दर अनुकूल, बाला झूला रही झूल
मल्हार गीत झंकार है।
मक्का बाजरा और ज्वार, मूंग मोठ, उड़द ग्वार, खड़ी तिलों की कतार,
जिन पर तरुणाई सवार है।
मथुरा गोकुल वृन्दावन में, और बरसाना गोवर्धन में, नन्दगांव नन्द भवन में,
निरखो बृज की बहार है।।
मिले बहन और भाई, सजी राखी से कलाई, क्या अनोखी छवि छाई,
खुशी मन में अपार है।
यज्ञ प्रवचन जारी, वेदपाठी ब्रह्मचारी, भीड़ मंदिरों में भारी,
आया श्रावणी त्यौहार है।।

वेद में जीवात्मा के गुण

❑ स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, आर्ष गुरुकुल कालवा

अथर्ववेद सप्तम काण्ड के दूसरे सूक्त में मुख्यतया जीवात्मा के गुण वर्णन किये हैं। इनका मनन करने से जीवात्मा का ज्ञान हो सकता है। यदि जीवात्मा का ज्ञान ठीक प्रकार हुआ तब मनुष्य परमात्मा को जानने में समर्थ होगा। इस विषय में अथर्ववेद की श्रुति यहां देखने योग्य है-

ये पुरुषे ब्रह्म विदुस्ते विदुः परमेष्ठिनम्।।

(अथर्व० १०।७।१७)

"जो सबसे प्रथम पुरुष में स्थित ब्रह्म को जानते हैं वे ही परमेष्ठी प्रजापति को भी जानते हैं।" यही ज्ञान प्राप्त करने की रीति है। अपने शरीरान्तर्गत आत्मा को जानने से परमात्मा का ज्ञान प्राप्त हो जाता है। इस रीति से इस मन्त्र के मनन से प्रथम जीवात्मा का ज्ञान होगा और उसी को परमसीमा तक विस्तृतरूप में देखने से यही ज्ञान परमात्मा का बोध कराने में समर्थ होगा। वह मन्त्र इस प्रकार है-

अथर्वाणं पितरं देवबन्धुं मातुःगर्भं पितुरसुं युवानम्।
य इमं यज्ञं मनसा चिकेत प्र णो वोचस्तमिहेह ब्रवः।।

(अथर्व० ७।२।१)

अर्थ-(यः मनसा) जो मन से (इमं यज्ञं अथर्वाणं पितरम्) इस पूजनीय अपने पास रहनेवाले पिता और (देशबन्धुम्) देवों के साथ संबंध रखनेवाले (मातुःगर्भम्) माता के गर्भ में आनेवाले (पितुः असुम्) पिता के प्राण स्वरूप (युवानम्) सदा तरुण आत्मा को (चिकेत) जानता है वह (इह तं नः प्रवोचः) यहां उसके विषय में हमें ज्ञान कहे और (इह ब्रवः) यहां उसको बतलावे।

मन्त्र में जीवात्मा के गुण :-

(१) मातुः गर्भम्=माता के गर्भ को प्राप्त होनेवाला जीवात्मा है। जन्म लेने के लिये यह माता के गर्भ में आता है। यजुर्वेद में इसी के विषय में ऐसा कहा है-

पूर्वो ह जातः स उ गर्भे अन्तः।
स एव जातः स जनिष्यमाणः। (यजुर्वेद ३२।४)

"यह पहले उत्पन्न हुआ था, वही इस समय गर्भ में आया है, वह पहले जन्मा था और भविष्य में भी जन्म लेगा।" इस प्रकार यह बारम्बार जन्म लेनेवाला जीवात्मा है।

(२) पितुः असुम्=पिता से यह प्राणशक्ति को धारण करता है। पिता से प्राणशक्ति और माता से रयिशक्ति प्राप्त करके यह शरीर धारण करता है।

(३) युवानम्=यह सदा जवान है। यह न कभी बूढ़ा होता है और न कभी बालक। इसका शरीर उत्पन्न होता है और छः विकारों को प्राप्त होता है। (जायते) उत्पन्न होता है, (अस्ति) होता है, (वर्धति) बढ़ता है, (विपरिणमते) परिणत होता है, (अपक्षीयते) क्षीण होता है और (विनश्यति) नाश को प्राप्त होता है। यह छः विकार शरीर को प्राप्त होते हैं। इन छः विकारों को प्राप्त होनेवाले शरीर में रहता हुआ यह जीवात्मा सदा तरुण रहता है। यह न तो शरीर के साथ बालक बनता है और न शरीर वृद्ध होने से यह भी बूढ़ा होता है। यह अजर और अबालक है अर्थात् इसको युवावस्था में रहनेवाला कहते हैं।

(४) देवबन्धुम्=यह देवों का भाई है। देवों को अपने साथ बांध देनेवाला यह जीवात्मा है। पाठक यहां ही अपने देह में देखें कि इस जीवात्मा ने अपने साथ सूर्य का अंश नेत्र रूप से आंख के स्थान में रखा है, वायु का अंश प्राणरूप से नासिका स्थान में रखा है, इसी प्रकार अन्यान्य इन्द्रियों के देवतांशों को लाकर रखा है। इन सब देवतांशों को यह अपने साथ लाता है ओर अपने साथ ले जाता है। जिस प्रकार सब भाई-भाई इकट्ठे रहते हैं, उसी प्रकार यह जीवात्मा यहां इन

देवतांशों का बड़ा भाई है और ये देवतांश इसके छोटे भाई हैं। इस प्रकार यह देवों का बन्धु है।

(५) अथर्वाणम्=(अथ+अर्वाक्=अथर्वा) अपने पास, अपने अन्दर, रहनेवाला यह है। इसको ढूंढने के लिये बाहर भ्रमण करने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यही सबसे समीप है, इससे समीप और कोई पदार्थ नहीं है।

(६) पितरम्=यही पिता के समान है। यह रक्षक है। जब तक यह शरीर में रहता है। तब तक यह शरीर की रक्षा करता है, मानो इसकी शक्ति से शरीर रक्षित होता है। जब यह इस शरीर को छोड़ देता है तब इस शरीर की कोई रक्षा नहीं कर सकता। इसके इस शरीर के छोड़ देने के पश्चात् यह शरीर सड़ने लगता है।

(७) यज्ञम्=यह यहां यजनीय अर्थात् पूजनीय है। इसीलिये यहां के सब व्यवहार किये जाते हैं। अन्न, पान, भोग, नियम सब इसी की सन्तुष्टि के उद्देश्य से दिये जाते हैं। यदि यह न हो तों कोई कुछ न करेगा। जब तक यह इस शरीर में है तब तक ही सब भोग तथा त्याग किये जाते हैं।

ये सात शब्द जीवात्मा का वर्णन करने के लिये इस मन्त्र में प्रयुक्त हुये हैं। जीवात्मा के गुण धर्म इनका विचार करने से ज्ञात हो सकते हैं। इनका विचार (मनसा चिकेत) मनन द्वारा ही होगा। जो पाठक अपने जीवात्मा का ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं, वे इन शब्दों का मनन करें। जब उत्तम मनन होगा तब वह ज्ञानी इस ज्ञान का (प्रवोच) प्रवचन करे और (इह ब्रव:) यहां व्याख्या करे। कोई मनुष्य मनन के पूर्व प्रवचन न करे। अर्थात् जब मननपूर्वक उत्तम ज्ञान प्राप्त हो, तब ही मनुष्य दूसरों को इसका ज्ञान देवे।

उपदेश देने का अधिकार तब होता है कि जब स्वयं पूर्णज्ञान हुआ होता है। स्वयं उत्तम ज्ञान होने के पूर्व जो उपदेश देने का प्रयत्न होता है वह घातक होता है। ज्ञानी ही उपदेश करने का सच्चा अधिकारी है।

आर्यवीर दल महम द्वारा आजादी की स्वर्ण जयन्ती पर महायज्ञ समारोह

स्थान : धर्मशाला धर्मार्थ पंचायत महाजनान महम

दिनांक १५ अगस्त १९९७

आर्यवीर दल महम जिला रोहतक द्वारा भारत की आजादी की स्वर्ण जयन्ती के शुभावसर पर नगर की सुख शान्ति व एकता हेतु प्रात: ८ से ११ बजे तक वैदिकविद्वान् पं० भरतलाल जी शास्त्री (संचालक आर्यवीर दल हांसी) की अध्यक्षता में एक विशेष महायज्ञ का आयोजन किया जा रहा है।

मुख्यअतिथि :-श्रीमती डा० सन्तोष गौतम, उपप्रधान नगरपालिका महम होंगी।

ध्वजारोहण :-श्री रत्नप्रकाश जी आर्य, प्रधान आर्यसमाज महम करेंगे।

-जगदीश आर्य, मन्त्री

शोक समाचार

श्री शिवलाल शास्त्री शिमली (भिवानी) की पूज्य माताजी का निधन।

शुचिता सरलता और सत्य तथा सहनशीलता व त्याग की प्रतिमूर्ति आदर्श साध्वी महिला श्री शिवलाल शास्त्री की पूजनीया माता व स्व० श्री नानकचन्द जी की एकमात्र आत्मजा श्रीमती चन्दोदेवी जी का दिनांक २८.७.९७ को ८४ वर्ष की अवस्था में प्रात: ब्राह्ममुहूर्त में एक बजे स्वर्गवास होगया है।

गांव व पड़ोसी गांव के सैंकड़ों सज्जनों ने उन्हें मन्त्रोच्चारणपूर्वक अग्नि को भेंट करते हुए भावभीनी विदाई दी।

माताजी की आत्मिक शान्ति, सद्गति व परिजनों को सहनशक्ति प्रदान करने लिए परमप्रभु से प्रार्थना की गई।

वेद और मानवसमाज

❑ भद्रसेन, बी-२, ९२/७-बी, शालीमार नगर, होशियारपुर-१४६००१

वेद ही संसार के पुस्तकालय की प्राचीनतम पुस्तकें हैं, क्योंकि सारा भारतीय साहित्य वेदों को अपना मूलस्रोत और परमप्रमाण मानता है। इसीलिए मनुस्मृति में कहा गया है, कि 'सर्वं वेदात् प्रसिध्यति १२, ९७ अर्थात् प्रत्येक विषय का प्रसार वेदों से हुआ है, क्योंकि 'सर्वज्ञानमयो हि सः २, ७ अर्थात् वेद सारी विद्याओं के ज्ञान से भरपूर है।

इसके साथ दूसरी विशेष बात यह है कि, वेद भारतीयों के धर्मग्रन्थ भी हैं। धर्म का आचारपक्ष हो या कर्मकाण्ड सभी का वह-वह पक्ष वेदमन्त्रों के द्वारा ही प्रतिपादित होता है। इसीलिए वेदोऽखिलो धर्ममूलम् मनु० २, ७ तथा धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः मनु० २, १३ अर्थात् धर्म के ज्ञान के लिए वेद की बात सबसे बड़ा प्रमाण है। मीमांसा दर्शन और गोतमधर्मसूत्र आदि अनेक शास्त्रों की भी यही भावना है। अतएव भारतीय साहित्य के ग्रन्थ एक स्वर से वेद को धर्मशास्त्र स्वीकार करते हैं।

इसके साथ तीसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि वेद ऐसा धर्मग्रन्थ है, जिसको भारतीय साहित्य और परम्परा में ईश्वरीय ज्ञान माना गया है। अतः वेद ईश्वर के आधार पर नित्य, सर्वविधज्ञानसम्पन्न होने से स्वतः प्रमाण हैं और अन्य ग्रन्थ परतः प्रमाण हैं।

भारतीयता की इन तीनों भावनाओं को ध्यान में रखकर ही आर्यसमाज का तृतीय नियम है, कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।' इस नियम को चरितार्थ करने के लिए आर्यसमाज अपने सारे कर्मकाण्ड=यज्ञ, संस्कार, पर्व आदि को विशेषरूप से वेदमन्त्रों से ही सम्पन्न करता है। ऐसे ही आर्यसमाज में होनेवाले प्रवचनों में वेदमन्त्रों को विशेष स्थान दिया जाता है। हां, श्रावणी से शुरु होनेवाला वेदसप्ताह तो विशेषरूप से इसी प्रयोजन से आयोजित होता है।

भारत के प्रत्येक प्रान्त की आर्यप्रतिनिधिसभा अपने प्रचारक रूप को चरितार्थ करने के लिए जहां महोपदेशकों, भजनोपदेशकों की व्यवस्था करती है, वहां अपनी-अपनी पत्रिका भी प्रचारित करती है। पत्रिका के प्रत्येक अंक में प्रायः किसी वेदमन्त्र पर वेदसप्ताह पर वेद से पाठकों को परिचित कराया जाता है।

वेद के इस महत्त्व को देखते हुए स्वाभाविक रूप से यह प्रश्न उभरता है, कि वेद क्या है ? वेद संस्कृतभाषा का शब्द है। जो कि विद् धातु से बनता है, जिसका मुख्य अर्थ है-**ज्ञान**। वैसे ज्ञान, विचार, लाभ, सत्ता विद के चार अर्थ हैं। वेद शब्द का इस प्रसंग में तात्पर्य है - ऋग्वेद - यजुर्वेद - सामवेद और अथर्ववेद नामक चार पुस्तकें अर्थात् इनमें समाया ज्ञान। अतः अब इन का परिचय प्राप्त करने की सामान्य जिज्ञासा उभरती है।

ऋग्+वेद-ऋग्, ऋच् शब्द स्तुति=वर्णन के अर्थ में आता है, क्योंकि इस वेद में अग्नि, इन्द्र, सोम, विष्णु आदि की स्तुति=वर्णन है। ऋग्वेद में दस मण्डल (भाग) हैं और प्रत्येक मण्डल में पाठ की तरह अनेकों सूक्त होते हैं। हर सूक्त में अनेक मन्त्र होते हैं, किसी सूक्त में ५० के लगभग भी मन्त्र हैं तो कहीं चार-पांच भी हैं। मन्त्र की स्थिति हिन्दी के दोहे आदि की तरह होती है। इस प्रकार ऋग्वेद के सूक्तों की संख्या-एक

हजार है और मन्त्रों की कुल संख्या दस हजार पांच सौ अस्सी है।

यजुर्वेद-यजुर्वेद में विशेषत: यज्ञों का वर्णन है, इसमें मण्डल, सूक्त के स्थान पर अध्याय हैं। जो कि चालीस हैं और मन्त्रों की संख्या १९७५ है।

सामवेद-इस वेद को गान विद्या का मूल माना जाता है, अत: संगीत की तरह भक्ति, उपासना में जहां यह सहायक है, वहां शान्तिदायक विचारों का आगार है। यह वेद पहले पूर्व-आर्चिक, उत्तर-आर्चिक रूप में विभक्त है, ये दोनों फिर सूक्तों में बटे हैं और सूक्त मन्त्रों में विभाजित हैं। सामवेद के मन्त्रों की संख्या १८७५ है, हां यहां १५ सौ के लगभग ऋग्वेद वाले ही मन्त्र पुन: आए हैं। अपुनरुक्त मन्त्र तो ८० से १०० ही हैं।

अथर्ववेद-यह पहले बीस काण्डों और फिर काण्ड सूक्तों में बटे हुए हैं तथा सूक्त मन्त्रों में विभक्त हैं। इसके मन्त्रों की संख्या ५९७७ है। यहां ऋग्वेद वाले सैंकड़ों मन्त्र पुनरुक्त हैं। अथर्ववेद शब्द का अर्थ गति, चंचलता से रहित है। इसमें जीवन, परिवार, समाज, आयुर्वेद का अच्छा दार्शनिक विवेचन मिलता है।

वैदिक वाङ्मय-वेद के प्राचीनतम धर्मग्रन्थ होने से उसको समझने-समझाने के लिए समय-समय पर बहुत सारे प्रयास हुए। कभी शब्दों की रक्षा की दृष्टि से और कभी अर्थबोध की दृष्टि से। पदपाठ आदि रक्षा के उदाहरण हैं, तो प्रयोग तथा भावबोध की दृष्टि से ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, वेदांग, दर्शन आदि आते हैं। इन सबमें वेद के स्वरूप को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। हां, वेद के विधिवत् अर्थ की दृष्टि से एक प्रकृष्ट प्रयास जहां निरुक्त है, वहां वेदों के समय-समय पर अनेक भाषाओं में अनेक भाष्य भी हुए हैं।

वेद के इस बाह्य स्वरूप के सामने आने पर अब यह जिज्ञासा होती है, कि वेद की वर्णन पद्धति किस प्रकार की है ? इस अवधारणा से जब हम वेदों का अध्ययन करते हैं, तो हमारे सामने आता है, कि वेदों में कहीं अग्नि शब्द को ध्यान में रखकर स्तुति और प्रार्थना की गई है। हां, कहीं इन्द्र, सोम, विष्णु और वरुण को सम्बोधित करके वर्णन किया गया है। इस दृष्टि से यह मन्त्र पठनीय है-

प्र नूनं ब्रह्मणस्पतिर्मन्त्रं वदत्युक्थ्यम्।
यस्मिन्निन्द्रो वरुणो मित्रो अर्यमा देवा ओकांᳩसि चक्रिरे।।

(ऋ०१,४०,५)

देवता-वेदों की प्रक्रिया में इसको देवता कहते हैं, क्योंकि उस-उस मन्त्र में प्रधानता से उस-उसकी स्तुति की गई है। अर्थात् जिस मन्त्र में मुख्यतया से विष्णु का वर्णन है, उस मन्त्र का विष्णु देवता कहलाता है। अत: इसका यह भाव हुआ, कि वेदों में अग्नि, इन्द्र, सूर्य, विष्णु आदि को आधार बनाकर वर्णन किया गया है। अतएव इनको देवता कहते हैं।

इस पर प्रश्न सामने आता है कि अग्नि, इन्द्र आदि शब्दों द्वारा किसका वर्णन किया गया है ? इस पर एक सम्भावना यह हो सकती है, कि ये अग्नि, इन्द्र, सोम आदि शब्द परमात्मा के लिए आये हैं, दूसरी सम्भावना यह भी हो सकती है, कि ये अग्नि, सूर्य आदि अलग-अलग सर्वतन्त्र स्वतन्त्र देवता हैं और इनमें से अनेक प्राकृतिक पदार्थ के रूप में स्पष्ट ही हैं। तीसरी सम्भावना यह भी हो सकती है, कि ये अग्नि, आप:, वायु आदि शब्द भाववाचक हैं अर्थात् इनमें किसी मानसिक स्तर के भाव की ओर संकेत हैं।

इन सारी सम्भावनाओं का एक सुन्दर समाधान हमें महर्षि दयानन्द के अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास में प्राप्त होता है। इस दृष्टि से वहां बताया गया है, कि जहां-जहां संसार के बनाने-चलाने का प्रकरण है तथा जहां-जहां सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, सर्वनियामक आदि विशेषण हैं और भक्ति, उपासना की

बात है, वहां-वहां अग्नि, इन्द्र आदि शब्दों से परमात्मा का ही ग्रहण करना चाहिए।

२. हां, जहां-जहां किसी के उत्पन्न होने की बात है या किसी के विकृत, परिवर्तित होने की चर्चा है, वहां-वहां विराट् आदि शब्द किसी प्राकृतिक तत्त्व के ही वाचक हैं, क्योंकि उत्पत्ति, विकार, परिवर्तन, भौतिक पदार्थों में होते हैं। ईश्वर में भौतिक विकार नहीं आते।

३. जिन मन्त्रों में सुख, दुःख के भोग, ईर्ष्या, द्वेष, ज्ञान अर्जन और इच्छापूर्ति के लिए किसी प्रकार के परिश्रम की बात है वहां-वहां वे-वे इन्द्र आदि पद जीव के लिए हो सकते हैं।

महर्षि दयानन्द जी की यह अवधारणा इसलिए है, कि वेद के ये अग्नि, इन्द्र आदि शब्द **यौगिक** हैं अर्थात् धातु और प्रत्यय के मेल से बनते हैं इसलिए प्रकरण, विशेषण के आधार पर धातु-प्रत्यय का वह-वह अर्थ चरितार्थ होता है। जैसे कि हर भाषा में मुहावरे होते हैं और वे आग आदि शब्द प्रसंग के अनुरूप अनेक अर्थों का संकेत करते हैं। ऐसे ही अग्नि, आपः आदि वेद के ये शब्द पारिभाषिक होने से प्रसंग के अनुरूप अर्थ को चरितार्थ करते हैं।

वेद के इस प्रारम्भिक परिचय के पश्चात् वेद के पाठकों का अब एक विशेष प्रसंग की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं।

मानवसमाज-वेदों में अनेकों नामों से जहां ईश्वर का स्वरूप, कर्म, उपासना, प्रार्थना सम्बद्ध वर्णन है, वहां भौतिक-प्राकृतिक पदार्थों और धर्म, यज्ञ आदि भावों, कर्मों का भी प्रतिपादन प्राप्त होता है। ऐसे ही **इस** संसार में जीनेवाले पालतू-जंगली पशुओं, गगनविहारी पक्षियों, जलचरों का प्रसंगवशात् जहां वर्णन आया है, वहां विचारशील मानवसमाज का भी विवेचन आता है। वस्तुतः वेद और वेदप्रतिपादित, धर्म, यज्ञ आदि से मनुष्य का ही सम्बन्ध है, अतः उसका वर्णन करना स्वाभाविक हो जाता है।

निघण्टु में मनुष्य के पच्चीस नामों का संग्रह है और वे हैं-'मनुष्याः, नरः धवाः, जन्तवः, विशः, क्षितयः, कृष्टयः, चर्षणयः, नहुषः, हरयः, मर्याः, मर्त्याः, व्राताः, तुर्वशाः, द्रुह्यवः, आयवः, यदवः, अनवः, पूरवः, जगतः, तस्थुषः, पञ्चजनाः, विवस्वन्तः, पृतना।

अर्थात् वेदमन्त्रों में प्रसंगवश इन नामों से मनुष्यसमाज का वर्णन आता है। इसकी व्याख्या में निरुक्तकार यास्क ने प्रथम मनुष्य शब्द का (मत्वा कर्माणि सीव्यन्ति, मनस्यमानेन सृष्टाः, मनस्यतिः पुनर्मनस्वीभावे मनोरपत्यम्, मनुषो वा नि० ३, २) निर्वचन किया है। इसमें मनुष्य की विचारशीलता पर विशेषरूप से ध्यान आकर्षित किया है। मनुष्य के इन पच्चीस नामों में से पञ्चजनाः शब्द का ही सोदाहरण निरुक्त में निर्देश है-ऊर्जाद उत यज्ञियासः पञ्चजना मम होत्रं जुषध्वम् ऋ० १, ५४, ३

यहां आई पांच संख्या पञ्चक्षितय जैसे शब्दों में अन्यत्र भी आई है। यत्पञ्चजन्यया विशापंचजनीन निरुक्त ३, २ पञ्चकृष्टयः अ० ३,२,३; पंचमानवेभ्यः अ० १२, १, १५

पञ्चजन में किस-किसका किस आधार पर ग्रहण होता है ? इसका सर्वसम्मत स्पष्टीकरण तभी हो सकता है। जब एक ही मन्त्र में पञ्चजन, पञ्चक्षितम् जैसे शब्द के साथ ही उससे अभिप्रेत भेदों का संकेत हो। हां, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में महर्षि दयानन्द ने अथर्ववेद का एक मन्त्र उद्धृत किया है।

देवाः पितरो मनुष्या गन्धर्वाप्सरसश्च ये।
उच्छिष्टाज्जज्ञिरे सर्वे दिवि देवा दिविश्रितः।।

(अ० ११, ७, २७)

(देवाः) विद्वान् अर्थात् पण्डित लोग और सूर्यलोक भी, (पितरः) (ज्ञानी) अर्थात् यथार्थविद्या को जाननेवाले,

(मनुष्या:) अर्थात् विचार करनेवाले, (गन्धर्वा:) अर्थात् गानविद्या के जाननेवाले, सूर्यादि लोक और (अप्सरस:) अर्थात् इन सबकी स्त्रियां, ये सब लोग और दूसरे लोग भी, (उच्छि०) उसी ईश्वर के सामर्थ्य से उत्पन्न हुए हैं। (दिवि देवा:) अर्थात् जो प्रकाश करनेवाले और प्रकाशस्वरूप सूर्यादिलोक और (दिविश्रित:) अर्थात् चन्द्र और पृथिवी आदि प्रकाशरहित लोक वे भी उसी के सामर्थ्य से उत्पन्न हैं।

यहां संस्कृतभाषा में आया-'ये चापि जगति मनुष्यादिजाति गणावर्तन्ते।' जहां विचारणीय है, वहां देवा: और गन्धर्वा: के विकल्प अर्थ में आए शब्द सूर्यादयो पुनरुक्त बन जाते हैं, क्योंकि-'सर्वे दिवि देवा:' से स्वत: आगे आ रहे हैं। इस मन्त्र में आए देवा: आदि पांचों मनुष्यों के भेद रूप में लिए जा सकते हैं। यां मेघां देवगणा: पितरश्च जैसे मन्त्रों में ऐसे ही दो शब्द आए हैं और देव शब्द ब्राह्मण अर्थ में कुछ मन्त्रों में स्पष्ट रूप से आया है। जैसे प्रियं मा कृणु देवेषु राजसु-उत शूद्रे उतार्ये अ० १९, ६२। निरुक्ताकार ने पञ्चजना: को स्पष्ट करते हुये दो विकल्प प्रस्तुत किए हैं। 'गन्धर्वा: पितरो देवा असुरा रक्षांसीत्येके। चत्वारो वर्णा निषाद: पञ्चम: इत्यौपमन्यव: नि० ३, २

मनुष्यों के ये पांचों भेद प्रत्यक्ष तो नहीं हैं। हां, जल-वायु के कारण कुछ अंश में भेद देखने में आता है, पर वह बहुत ही सीमित है। बाह्य दृष्टि से एक होने पर भी गाय या गेहूं में जैसे नस्ल का भेद कुछ अन्तर सामने आता है। चारों वर्णों को गीता ने गुणकर्मविभागाश: (४, १३) अर्थात् गुण तथा कर्म के भेद से चारों वर्णों को स्वीकार किया है। जबकि अन्य शास्त्रों में केवल कार्य के भेद से चारों वर्णों को वर्णित किया है। गुण, कर्म की गहराई में जाने पर इनके भेद काल और स्थान के कारण चार से अधिक भी माने जा सकते हैं। फिर चार, पांच तक सीमित रखना कठिन है। जैसे कि बीजों, पशुओं में नस्ल से सम्बद्ध नस से नस रूप सामने आरहे हैं।

वेद के ईश्वरीय होने से वेद में आए मनुष्यों के पांचों भेद ईश्वरकृत भौतिक पदार्थों की तरह अमिट मानने चाहियें। तब सामाजिक संगठन की दृष्टि से जहां इसका मूल्यांकन करना होगा वहां यह भाग्य, पूर्व कर्मों से कितना सम्बन्धित है और यह प्रभाव क्या जन्म मिलने तक सीमित है या सारे जीवन तक चलता है ? यह विचारना आवश्यक हो जाता है, क्योंकि ईश्वरकृत में मनुष्यों द्वारा परिवर्तन की सम्भावना चिन्त्य हो जाती है।

सांख्यकारिका ५३ में अष्टविकल्पो दैव: तैर्यग्योनिश्च पञ्चधा भवति। मानुषश्चैकविध: अर्थात् मनुष्यो को एक रूप में निर्दिष्ट किया है।

पञ्चजना मम होत्रं जुषध्वम् ऋ० १,५४,३ अपने आप में एक महत्त्वपूर्ण दिशानिर्देश करता है। मन्त्र का सीधा अर्थ है-(पांचों प्रकार के) मनुष्य मेरे होत्र=यज्ञ, पूजन, धार्मिककृत्य को करें। यज्ञ बिना वेदमन्त्रों के नहीं होता, अत: यज्ञ से जो कुछ भी सम्बद्ध है, उस सब पर पांचों प्रकार के अर्थात् सभी मनुष्या का समानतापूर्वक अधिकार है। इसका सीधासा तात्पर्य यह निकलता है, कि चाहे मनुष्यों के किसी भेद से किसी का सम्बन्ध है, उस-उसको अपने जीवन के निखार करनेवाले धर्म को करने, अपनाने का पूर्ण अधिकार है। उस पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं है, और न ही किसी को किसी प्रकार से किसी पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिए।

हां, यथेमां वाचं कल्याणीम् यजुर्वेद (२६,२) मन्त्र में भी ब्रह्म, राजन्य, शूद्र, अर्य=वैश्य, स्वं, अरण, इन पांचों को वेद के अध्ययन का अधिकार है। वेद और यज्ञ का सीधा सम्बन्ध है यह पूर्व कहा ही जा चुका है। ●

वैदिक पवित्र पदः ओ३म्

'ओ३म्' यह एक वैदिक पवित्र पढ़ है। वेदादि शास्त्रों में इसकी बहुत महिमा गायी गई है। उसका संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है-

यजुर्वेद-(१) ओ३म् क्रतो स्मर०। (यजु० ४०।१५) हे कर्म करनेवाले जीव। तू शरीर-याग के समय 'ओ३म्' यह जिसका निज नाम है, उस ईश्वर को स्मरण कर, सब ओर उसी 'ओ३म्' को देख (दयानन्दभाष्य)।

(२) ओ३म् खं ब्रह्म (यजु०४।१७) सुलक्षण पुत्र के तुल्य प्राणों से प्रिय मेरा अपना नाम 'ओ३म्' है। जो मेरी प्रीति और सत्याचारण के भाव से शरण को प्राप्त होता है, मैं उसकी अन्तर्यामी रूप से अविद्या का विनाश करके, उसकी आत्मा को प्रकाशित करके, उसके शुभ गुण-कर्म-स्वभाव बनाकर, सत्यस्वरूप आचरण की स्थापना करके, योग से उत्पन्न शुद्धिविज्ञान को देकर, सब दुःखों से छुड़ाकर मोक्ष-सुख को प्रदान करता हूं। ओ३म्-खम्=आकाश के समान व्यापक और ब्रह्म=सबसे बड़ा है (दयानन्द भाष्य)।

ऐतरेय ब्राह्मण-तानि शुक्राण्यभ्यतपत्तेभ्योऽभित-प्रेभ्यस्त्रयो वर्णा अजायन्त-अकार उकारो मकार इति तानेकधा समभरत्तदेतदओ३मिति। (ऐ०ब्रा० ५।३२)। वेदों से भूः, भुवः, स्वः ये तीन महाव्याहृतियां प्रकाशित हुई। इन तीन महाव्यहृतियों से तीन वर्ण उत्पन्न हुये-अकार, उकार और मकार। इन तीन वर्णों को जिसने संभरण किया वह 'ओ३म्' है।

उपनिषत्- (१) ओमित्येतदक्षरमुद्गीथमुपासीत। (छान्दोग्य १।१।१) 'ओम्' यह अक्षर उद्गीथ (साम) है इसकी उपासना करनी चाहिए।

(२) ओमित्येतदक्षरमिदं सर्वं तस्योपव्याख्यानम्। (माण्डूक्य १) सब वेदादि शास्त्र और यह समस्त जगत् 'ओम्' इस अक्षर का ही व्याख्यान है।

(४) **सर्वे वेदा यत् पदमामनन्ति**
तपांसि सर्वाणि च यद् वदन्ति।
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति
तत्ते पदं संग्रहेण ब्रवीमि, ओमित्येतत्।।
(कठ० २।१५)

यमाचार्य अपने शिष्य नचिकेता को उपदेश करते हैं कि-सब वेद जिस पद का उपदेश करते हैं, सब तप जिसे गाते हैं, जिसकी कामना करते हुये ऋषि-मुनि ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हैं उस पद का मैं तुझे संक्षेप से उपदेश करता हूं कि वह पद 'ओम्' है।

मनुस्मृति-

अकारं चाप्युकारं च मकारं च प्रजापतिः।
वेदत्रयान्निरदुहद् भूर्भुवःस्वरितीति च।। (२।७६)

अर्थ-प्रजापति ब्रह्मा ने 'ओम्' पद के अकार, उकार और मकार का क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद से निश्चयपूर्वक दोहन किया है और भूः, भुवः, स्वः इन तीन महाव्याहृतियों का भी वेदों से दोहन किया गया है। ऋक् के ऋ में अ, यजु में उ और साम में म् की ध्वनि स्पष्ट है। 'ओम्' कहने से ऋक्, यजु और साम तीनों वेदों का ग्रहण हो जाता है। भूः, भुवः, स्वः ये तीन महाव्याहृतियां 'ओम्' के अकार उकार मकार की ही व्याख्या है। भूः, भुवः, स्वः का अर्थ प्राण, अपान, व्यान है। व्याहृति-मन्त्रों से इस विषय को स्पष्ट किया जाता है-

(१) ओं भूरग्नये प्राणाय स्वाहा।
(२) ओं भुवर्वायवेऽपानाय स्वाहा।
(३) ओं स्वरादित्याय व्यानाय स्वाहा।
(४) ओं भूर्भुवः स्वरग्निवाय्वादित्येभ्यः प्राणापानव्यानेभ्यः स्वाहा।

'ओम्' और तीन महाव्याहृतियों का सम्बन्ध निम्नलिखित तालिका की सहायता से समझ लेवें।

ओम्	वेद	ऋषि	व्याहृति	अर्थ
(१) अ	ऋग्	अग्नि	भू:	प्राण
(२) उ	यजु	वायु	भुव:	अपान
(३) म्	साम	आदित्य	स्व:	व्यान

संगति-अ का अर्थ ऋग्वेद है जिसका अग्नि ऋषि के हृदय में प्रकाश हुआ, वह ज्ञानकाण्ड होने से भू अर्थात् प्राणों से प्यारा है। उ का अर्थ यजुर्वेद है, जिसका वायु ऋषि के हृदय में प्रकाश हुआ, वह कर्मकाण्ड होने से भुव: अर्थात् यज्ञादि शुभ कर्मों से सब दु:खों से छुड़ानेहारा है। म् का अर्थ सामवेद है, जिसका आदित्य ऋषि के हृदय में प्रकाश हुआ, वह उपासना काण्ड होने से स्वर्ग और अपवर्ग (मोक्ष) रूप सब सुखों का देनेवाला है। अथर्ववेद ज्ञान, कर्म, उपासना इन तीनों काण्डों का मिश्रण है, अत: ऊपर चतुर्थ मन्त्र में सबको मिश्रित करके पाठ किया गया है।

भगवद्गीता-

(१) **यदक्षरं वेदविदो वदन्ति**
विशन्ति यद् यतयो वीतरागा:।
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति
तत्ते पदं संग्रहेण प्रवक्ष्ये।।८।११।।

अर्थ-हे अर्जुन ! जिस अक्षर को वेदज्ञ ऋषि बतलाते हैं, जिसमें वीतराग यति लोग प्रवेश करते हैं, जिसकी कामना करते हुये ऋषि-मुनि ब्रह्मचर्य व्रत का अनुष्ठान करते हैं, उस पद का मैं तेरे लिये संक्षेप से उपदेश करता हूं।

(२) **ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन् मामनुस्मरन्।**
य: प्रयाति त्यजन् देहं स याति परमां गतिम्।।
(८।१३)

अर्थ-जो एकाक्षर ब्रह्म 'ओम्' के स्मरणपूर्वक देह का परित्याग करता हुआ इस लोक से जाता है वह परम गति (मोक्ष) को प्राप्त होता है।

पतंजलि मुनि-

(१) **क्लेश कर्मविपाकाशयैरपामृष्ट ईश्वर:** (योग० १।२५) अर्थात् ईश्वर अविद्या आदि क्लेश, शुभ-अशुभ कर्म, उनके सुख-दु:ख रूप फल और उनकी वासना से रहित है।

(२) **स एष पूर्वेषामपि गुरु: कालेनानवच्छेदात्** (योग०१।२६) अर्थात् ईश्वर प्राचीन ब्रह्मा आदि ऋषि-मुनियों का भी गुरु है क्योंकि वह अजर-अमर है, उसका काल से अवच्छेद कभी नहीं होता है।

(३) **तस्य वाचक: प्रणव:** (योग० १।२७) उस ईश्वर का वाचक प्रणव=ओम् है।

(४) **तज्जपस्तर्थभावनम्**-(योग० १।२८) अर्थात् उसके परमपवित्र नाम 'ओम्' का जप और उसके अर्थ-चिन्तन से अपने चित्त को भावित करना चाहिए। चित्त में 'ओम्' के गुणों का आधान करना चाहिए।

पाणिनिमुनि-

(१) अवतेष्टिलोपश्च (उणा० १।१४२) अर्थात् 'अव' धातु से 'मन्' प्रत्यय करने पर 'ओम्' शब्द सिद्ध होता है। अव्+मन्। अव्+म०। अ+ऊठ्+म्। ओ+म्। ओम्। 'मन्' प्रत्यय के टि-भाग (अन्) का लोप और 'अव्' धातु के उपधा-अकार ओर वकार को ऊठ्-आदेश होता है। 'सार्वधातुकार्धधातुकयो:' (७।३।८४) से 'अ' को गुण होकर 'ओम्' शब्द सिद्ध होता है। अव (भ्वा०प०) धातु के रक्षण, गति, कान्ति, प्रीति, तृप्ति, अवगम, प्रवेश, श्रवण, स्वाम्यर्थ, याचन, क्रिया, इच्छा, दीप्ति, अवाप्ति, आलिंगन, हिंसा, दान, भाग, वृद्धि ये १९ अर्थ पाणिनि मुनि ने धातुपाठ में बतलाये हैं।

(२) चादयोऽसत्त्वे। (१।४।५७) अर्थात् अद्रव्यवाची च-आदि शब्दों की निपात संज्ञा है। 'स्वरादिनिपातमव्ययम्' (१।१।३७) से निपात-संज्ञक शब्द अव्यय होते हैं। 'ओम्' शब्द का च-आदि गण में पाठ होने से यह पद अव्यय है। अव्यय होने से इसके

एकवचन, द्विवचन, बहुवचन और प्रथमा आदि विभक्तियां नहीं होती है।

(३) ओमभ्यादाने (८।२।८७) अर्थात् अभ्यादान=मन्त्र के प्रारम्भ में 'ओम्' शब्द प्लुत उदात्त होता है- 'ओ३म् अग्निमीळे पुरोहितम्' (ऋ० १।१।१) इत्यादि।

(४) प्रणवष्टे: (८।२।८९) अर्थात् यज्ञकर्म में मंत्र के टि-भाग को प्रणव=ओम् प्लुत-उदात्त आदेश होता है। वेदमन्त्र के चरण अथवा अधर्च के अन्तिम अक्षर का उपसंहार करके उसके आदिम शेष अक्षर के स्थान में त्रैमात्रिक ओंकार आदेश किया जाता है उसे 'प्रणव' कहते हैं। अपां रेतांसि जिन्वतो३म्। देवान् जिगाति सुम्नयो३म्।

इस विषय में महाराज मनु लिखते हैं-

ब्रह्मण: प्रणवं कुर्यादादावन्ते च सर्वदा।
स्त्रवत्यनोङ्कृतं पूर्वं पुरस्ताच्च विशीर्यति।।२।७४।।

अर्थ-शिष्य वेदाध्ययन के आरम्भ में और अन्त में सदा प्रणव=ओम् का उच्चारण करे। 'ओम्' उच्चारण के बिना किया हुआ वेदाध्ययन पूर्व और पश्चात् दोनों ओर बिखर जाता है।

महर्षि दयानन्द-(ओ३म्) यह ओंकार शब्द परमेश्वर का सर्वोत्तम नाम है क्योंकि इसमें जो अ, उ और म् तीन अक्षर मिलकर एक 'ओ३म्' समुदाय हुआ है। इस एक नाम से परमेश्वर के बहुत नाम आते हैं जैसे-अकार से विराट्, अग्नि और विश्व आदि। उकार से हिरण्यगर्भ, वायु और तेजस आदि। मकार से ईश्वर आदित्य और प्राज्ञ आदि नामों का वाचक और ग्राहक है। उसका ऐसा ही वेदादि सत्य शास्त्रों में स्पष्ट व्याख्यान किया है (सत्यार्थप्रकाश०प्र०समु०)।

'ओ३म्' की इस महिमा को समझकर प्राचीन आर्य विद्वानों ने वेदपारायण आदि महायज्ञों में प्रत्येक मन्त्र के प्रारम्भ में वैदिक पवित्र पद 'ओ३म्' का उच्चारण करना प्रारम्भ किया था और मन्त्र से आहुति देते समय उसके टि-भाग को प्लुत प्रणव आदेश से आहुति की रीति आरम्भ की थी। इस पवित्र पद का जितना उच्चारण, जप एवं स्मरण किया जाये उतना ही थोड़ा है। आर्यों ने अपने अरुण-वर्ण के ध्वज में भी इस पवित्र पद 'ओ३म्' का ही अंकन किया है।

अर्वाचीन आर्यविद्वानों का कहना है कि सामिधेनी मन्त्रों में ही मन्त्र के टि-भाग को प्लुत-उदात्त होता है; सर्वत्र नहीं। महर्षि दयानन्द की दया से आज आर्यसमाज नामक चरण में वेद-पारायण यज्ञ, वृहद्यज्ञ, सन्ध्या पद्धति, यज्ञपद्धति, स्त्री और शूद्र की शिक्षा आदि कितनी ही नवीन विधियां प्रचलित हैं जो कि प्राचीन विधान पर आश्रित नहीं हैं। ऐसे ही यज्ञ में 'ओ३म्' उच्चारण की विधि में लाभ ही है, हानि नहीं है। अत: वर्तमान आर्यविद्वानों को इस पवित्र 'ओ३म्' पद के उच्चारण पर प्रतिबन्ध लगाने का प्रयास नहीं करना चाहिये। पाणिनि मुनि ने भी 'ओमभ्यादाने' तथा 'प्रणवष्टे:' में कोई सामिधेनी आदि का नियम नहीं किया है।

-सुदर्शनदेव आचार्य, सह-सम्पादक

सुन्दर नगर में श्रावणी पर्व (वेद सप्ताह)

"श्रावणी पर्व" (वेदप्रचार सप्ताह) दि० १८-८-९७ से २५-८-९७ (रक्षाबन्धन से जन्माष्टमी) तक आर्यसमाज मन्दिर सुन्दरनगर कालोनी (हि०प्र०) में बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इसमें आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा के श्री विश्वामित्र जी भजनोपदेशक और आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता और विद्वान् श्री दयानन्द शास्त्री जी हरयाणा से पधार रहे हैं। आचार्य श्री आर्य नरेश जी और स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज के पधारने की भी आशा है। श्रीमती शनि आर्या के भजन भी समय-समय पर सुनने को मिलेंगे। -मन्त्री

स्वतन्त्रता दिवस और रक्षाबन्धन पर्व

❑ डा० मनोहरलाल आर्य, ५४७-१५-ए, फरीदाबाद

अपने देश का स्वतन्त्रता दिवस और रक्षाबन्धन पर्व दो तीन दिन आगे पीछे साथ-साथ ही चलते हैं और इसका भी भारी महत्त्व है, जिसको थोड़े ही लोग समझते हैं, आज अपने देश को आजाद हुये पूरे पचास वर्ष होगये हैं और इस बार सारे देश में अपितु जहां-जहां भी भारतवासी रहते हैं, बड़े हर्ष और उल्लास से अपने देश की स्वतन्त्रता की स्वर्ण जयंती मना रहे हैं, जिस दिन की प्राप्ति के लिये लाखों वीरों ने बलिदान दिये और हंसते हंसते फांसी के तख्ते पर झूल गये। आजादी की जंग से १९५७ से ही शुरु होगई थी, जिसमें समय-समय पर बलिदानों की आहुति पड़ती रही जिसका अपना ही दर्दभरा इतिहास है, विदेशी शासक आसानी से भारत को छोड़ना नहीं चाहते थे, उन्होंने हर प्रकार से कोशिश की कि भारतवासी आपस में लड़ते रहें। जहां वे हमारे नेताओं महात्मा गांधी, पं० जवाहरलाल नेहरु, सरदार पटेल, मौलाना आजाद, मोहम्मद अली जिन्नाह आदि कुछ अधिकार सौंपने की बातें करते थे, दूसरी ओर वे ऐसे हालात पैदा करते थे कि जिस से उनके पग जमे रहें, कुछ शरारती लोगों को भड़काकर जातीय दंगे भी करवाये और बंगाल आदि प्रान्तों में खाद्य पदार्थों की कमी करवा के भुखमरी के हालात भी पैदा किये, सन् १९४७ के शुरु में मार्च और अप्रैल में उत्तर भारत में कई जगह फसाद भी हुये और आखिर में १५ अगस्त १९४७ को भारत का हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में विभाजन करके आजादी का ऐलान कर दिया। इसके फलस्वरूप तबादला आबादी शुरु होगया, उधर उत्तरी सीमाओं पर और खासकर कश्मीर पर पाकिस्तान ने कबालियों से हमला करवाकर जंग के हालात पैदा कर दिये, आबादी की अदला-बदली से लाखों घर बरबाद हुये, और लाखों की तादाद में लोग शहीद होगये, जहां लोग दु:खी हो रहे थे, वहां आजादी की लगन भी थी और आजाद भारत के प्रति श्रद्धा भी थी, उस समय का लिखा मुझे एक गीत याद आ रहा है-

ले माता प्रणाम तुझे कुछ भेंट चढ़ाने आये हैं,
आजादी के इस मन्दिर में दीप जलाने आये हैं।।
धन दौलत और बीबी बच्चे सब कुछ हमने वारा है।
दुश्मन के घर जाकर हमने दुश्मन को ललकार है।।
कटी गरदनें आज हमारी तुमको सीस निवाती हैं।
याद आये कुछ माता तुझको इतना याद दिलाती हैं।।
आजादी के अंस्थापन में हम कुछ हिस्सेदार भी हैं।
जनता के जांबाज़ सिपाही जनता के सरदार भी हैं।।

भारत में कुछ भी बनता नहीं था। देशवासियों के लिए पेटभर खाने को अनाज भी नहीं था। बड़ी मुश्किल से आजादी प्राप्त की थी। आज हमारा देश बड़े-बड़े समृद्ध देशों की कतार में खड़ा है, और बड़े से बड़ा देश भी भारत से हाथ मिलाने को उत्सुक है, दूसरे देशों में रहनेवाले भारतीय भी अपने को भारतीय कहलाने में गर्व का अनुभव करते हैं। अब देखना यह है कि देश के प्रति हमारा क्या कर्त्तव्य है। यह रक्षाबन्धन का पर्व हमें देश के प्रति अपने कर्त्तव्य का अनुभव कराता है, और राष्ट्र की रक्षा के बन्धन में बांधता है, पर यह पर्व केवल भाई-बहनों के रिश्ते का पर्व बनकर ही रह गया है, असल में यह एक राष्ट्र के प्रति श्रद्धा और रक्षा की शपथ लेने का पर्व है, और इस दिन शपथ लेनी चाहिये कि हम आजीवन अपने कर्त्तव्य को निभाते हुये देश की आजादी की रक्षा करेंगे और हर प्रकार के बलिदान के लिये तैयार रहेंगे।

हरयाणा प्रान्त में शराबबन्दी का मसला है, यदि हम जनता जनार्दन के सभी लोग अपने फ़रज़ को समझें और कानून का पालन करें, शासन को पूरा सहयोग देवें तो कोई वजह नहीं है कि हरयाणा में शराबबन्दी न हो जाये। शराबबन्दी होने से कई बुराइयों से छुटकारा भी मिलता है आज हमारा देश भ्रष्टाचार की जंजीरों में जकड़ा हुआ है। हम सब देशवासी मिलकर संकल्प लेवें कि अपने देश की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिये और देश से बुराइयों को दूर करने के लिये अपने स्वार्थ को तजकर तत्पर रहेंगे,

इन्सान के दो काम हैं दुनिया में आनकर।
खुद भला बना, औरों का भला करना।।

★ ★ ★

'वैदिक विचारधारा से संसार का कल्याण नहीं' लेख पर समीक्षात्मक दृष्टि

❑ **वेदमुनि परिव्राजक**, अध्यक्ष, वैदिक संस्थान, नजीबाबाद, बिजनौर (उ.प्र.)

२५-६-९७ के दैनिक 'अमर उजाला' के मुरादाबाद संस्करण में किन्हीं अविनाश गौतम का पत्र उपर्युक्त शीर्षक से छपा है। उन्होंने अपने पत्र में जो कुछ वेद के विषय में लिखा है, वह सभी नितान्त भ्रान्तिपूर्ण है। यह तो वह स्वयं ही जानें कि उन्होंने यह सब अपनी भ्रान्त धारणा के आधार पर लिखा है अथवा जानपूछकर वेद और वर्ण-व्यवस्था का विरोध करने के लिये।

वास्तविकता यह है कि वेद की विचारधारा ही एक ऐसी विचारधारा है, जो मनुष्य को मनुष्य बने रहने की बात कहती तथा मनुष्य बनने के सूत्र और साधन बताती है। अन्यथा अन्य सभी धर्मग्रन्थ कहलाने वाली पुस्तकें तो मुसलमान, ईसाई, बौद्ध, जैन, शैव, शाक्त, वैष्णव आदि बनने की बात कहती हैं। वेद का उद्घोष है **'मनुर्भव'** अर्थात् मनुष्य बन और महर्षि यास्क के शब्दों में 'मत्वा कर्माणि सीव्यति' जो मनन करके, विचार करके कार्य करता है।

वह लिखते हैं 'मैं वेद की विचारधारा से बिल्कुल सहमत नहीं हूं।' उन्हें यह भलीभांति समझ लेना चाहिये कि उनकी सहमति-असहमति का वेद की विचारधारा पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। वेद किसी की सहमति का मोहताज नहीं, जिसे वेद को पढ़कर लाभ उठाना हो, उठाले। कोई सूर्य के प्रकाश को देखकर आंखें बन्द करले और कहे मैं सूर्य के प्रकाश से बिल्कुल सहमत नहीं तो इसका सूर्य अथवा उसके प्रकाश पर क्या प्रभाव पड़ता है ? सूर्य और उसका प्रभाव अपने स्थान पर है और वह अपना कार्य कर रहा है, लोग उसकी ओर से आंखें बन्द करके स्वयं ही घाटे में रहना चाहें तो रहें।

सुना तो यह है कि अविनाश जी ने वेद पढ़ना तो क्या ? कभी स्वप्न में भी वेद के दर्शन नहीं किये। इधर-उधर से कुछ वेदविरोधियों तथा वेद-ज्ञान से सर्वथा अनभिज्ञ लोगों के लेख पढ़कर यह सब लिखा है।

यह भी ध्यान रखना चाहिये कि वेद 'वर्ण-व्यवस्था' को मजबूत करने के लिये नहीं लिखे गये अपितु आदि काल में वर्णों की व्यवस्था वेद ने मानव को प्रदान की थी। अविनाश की ओर उन जैसे लोगों को यह भी समझ लेना चाहिये कि वेद की दी हुयी व्यवस्था वर्ण-व्यवस्था है, जन्म-व्यवस्था नहीं।

खेद का विषय यह है कि जो लोग वर्ण शब्द के अर्थ तक नहीं जानते, वह वर्ण-व्यवस्था पर आक्षेप करते हैं। वर्ण शब्द का अर्थ है वरण किया हुआ, चुना हुआ और इसका मूल है 'वृञ् वरणे'। इसका तो जन्म से कुछ भी सम्बन्ध नहीं क्योंकि जन्मजात शिशु में वरण करने, अपने लिये किसी विषय को, किसी कार्यक्षेत्र को चुनने की योग्यता ही नहीं होती।

अपनी रुचि के अनुसार मनुष्य अपने जीवन के लिए जिस कार्य को चुन लेता है, उसी के अनुसार उसका वर्ण हो जाता है। उदाहरण के लिये शिक्षक, अनुसन्धानकर्त्ता, पुरोहित संन्यासी आदि ब्राह्मण, रक्षा तथा प्रबन्ध-व्यवस्था के क्षेत्र में कार्य करनेवाले-ग्राम के चौकीदार से लेकर राष्ट्रपति तक सब क्षत्रिय, उत्पादन द्वारा सम्पत्ति अर्जित करनेवाले व्यापारी, कृषक आदि वैश्य तथा जिनमें इन तीनों क्षेत्र में से किसी कार्य को चुनने, अपनाने और करने कराने की योग्यता नहीं आ पाती, वह अर्थात् श्रमिकवर्ग शूद्र-फिर चाहे वह इन चारों वर्णों में से किसी भी वर्ण अथवा परिवार में जन्मा हो।

अविनाश जी ने लिखा है - वेदों में औचित्यहीन मन्त्र, धनप्राप्ति के लिये नरबलि देने, दूसरी जाति के लोगों का संहार करने, काल्पनिक देवी-देवताओं की पूजा करने तथा अन्धविश्वासों को बढ़ावा देने के अतिरिक्त कुछ भी नहीं।' उन्होंने आगे लिखा है 'ऋग्वेद में एक स्थान पर आर्यजाति द्वारा भारत के मूल निवासियों के जातीय संहार का वर्णन किया गया है।' अच्छा होता उस स्थान का वर्णन भी कर देते, परन्तु करें तो जब वहां ऐसा कुछ हो और अविनाश जी ने वेद देखा हो। उन्हें यह ध्यान रखना चाहिए कि वेद में किसी देश के भूगोल और इतिहास का वर्णन नहीं है। इतने पर भी अविनाश जी से इतना निवेदन है कि सभी विषयों पर वह अपना पक्ष सिद्ध करने और सत्य-असत्य के निर्णय के लिये सार्वजनिक रूप से शास्त्रार्थ करने को तैयार हो जायें।

उनके लेख का चौथा परिच्छेद तो और भी न केवल भ्रान्त ही है अपितु नितान्त अनर्गल भी है। उनकी एक-एक बात की समीक्षा करने के लिये तो लेख का कलेवर अतीव बृहदाकार हो जाएगा, केवल इसीलिये उसकी समीक्षा नहीं कर रहा। शास्त्रार्थ हो तो चाहें अनेक दिन चले, सभी विषयों की समीक्षा युक्तियुक्त और सप्रमाण की जा सकती है।

आप लिखते हैं 'जो लोग हमारी जाति के न हों, हमारे धर्म को न मानते हों, उनका संहार कर देना चाहिये, आज के वैज्ञानिक युग में यह बातें कितनी हास्यास्पद लगती हैं।' हास्यास्पद लगती ही नहीं, अपितु हास्यास्पद हैं और आज के युग में नहीं अपितु प्रत्येक युग में परन्तु यह बातें वेद की नहीं अपितु कुरान की हैं।

वेद मनुष्य के तो क्या-मनुष्य को पशु-पक्षियों के भी रक्त का प्यासा नहीं बनाता अपितु वेद का कथन है 'मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे' सभी प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखना चाहिये। वेद मनुष्य को वास्तविक अर्थों में मनुष्य बनने का निर्देश करता है और स्पष्टरूपेण कहता है 'संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्' तुम्हारी चाल, गति सम्यक् ठीक हो और एकसी हो। तुम्हारे विचार करने का प्रकार एकसा हो और तुम्हारे मन भी एक जैसे तथा परस्पर संयुक्त हों तथा 'समानी प्रपा सह वो अन्नाभागः' तुम परस्पर सहयोगपूर्वक जल-स्थानों और अन्न का उपभोग करो।

सही स्वर्ग की बात-जिन्हें पृथिवी पर स्वर्ग नहीं दिखायी देता; उन्हें नहीं देता यथा जैनियों, मुसलमानों, ईसाइयों आदि को, वैदिकधर्म तो सुख और सुख की सामग्री का जीव को प्राप्त होना स्वर्ग और दुःख और दुःख की सामग्री का जीव को प्राप्त होना नर्क मानता है।

आपने लिखा है 'सभी धार्मिक पुस्तकें मनुष्य के द्वारा ही लिखी गयी हैं, उन्हें ईश्वर द्वारा रचित मानना प्रकृति के साथ मजाक।' यह भी भ्रान्त विचार है, वेद के अतिरिक्त जो अन्य पुस्तकें हैं उनमें वैदिकधर्म विवेचन करने वाले वेदातिरिक्त ग्रन्थ तो मानवकृत हैं किन्तु वेद नहीं। वेद नाम ज्ञान-विचार का है, 'वेद विद् ज्ञाने, विद् विचारे' और आदिकाल में जब तक कागज, कलम, स्याही नहीं बने, वह पुस्तकाकार नहीं बना अपितु मौखिक रूपेण पढ़-पढ़ा और सुन-सुना कर ही चलता रहा इसलिये उक्त का एक नाम श्रुति भी है किन्तु वह मानवोत्पत्ति के साथ-साथ ईश्वर द्वारा ही मानवों को प्रदान किया यह तथ्य है। पुस्तकाकार वेद को लिख लेने वाले तो मात्र लिपिकार ही हुए वेद के लेखक अर्थात्-प्रणेता नहीं। वैदिक ज्ञान के अतिरिक्त अन्य जो मतमतान्तर धर्म के नाम से जाने जाते हैं, वह अवश्य मानवों द्वारा स्थापित हैं और उनके ग्रन्थ भी मानवकृत हैं।

अविनाश जी ने लिखा है 'वेदों को पढ़ने से पता चलता है कि आर्यलोग बाहर से ही आये थे। उन्होंने यहां के मूल निवासियों को, जिन्हें शूद्र कहा गया, शिक्षा

से वंचित रक्खा था और कोई शूद्र वेद-वाक्य सुन लेता था तो उसके कान में पिघला शीशा डाल दिया जाता था, यदि शूद्र वेद-वाक्य का उच्चारण करता था तो उसकी जीभ काट ली जाती थी।' पहली बात तो यह है कि अविनाश जी के इस लेख को बुद्धिहीन तो मान लेंगे कि वेदों में ऐसा ही लिखा होगा किन्तु वेदज्ञ कोई भी नहीं मान सकता। उनके यह शब्द यह बताते हैं कि उन्होंने वेदों के दर्शन तो नहीं किये, वह किसी वेद के विषय में साधारण ज्ञान रखनेवाले के पास भी नहीं बैठे। वेद इतिहास के ग्रन्थ नहीं हैं, जिनमें किसी के कहीं जाने-आने का वर्णन हो, वेद तो विज्ञान, व्यवस्था तथा मनोविज्ञान आदि के ग्रन्थ हैं। यह भी ध्यान रहे कि इस देश के मूल निवासी आर्य ही हैं। आर्यों से पहले यहां मानव नाम का कोई जन्तु नहीं रहता था। यही कारण है कि इस देश का सबसे पहला नाम आर्यावर्त्त अर्थात् आर्य-आवर्त्त, आर्यों का केन्द्र तथा निवास स्थान है। इससे पहले इस देश का अन्य कोई नाम नहीं। यह भी ध्यान रखना चाहिए कि यह विषय इतिहास का है, वेद से इसका लेश भी सम्बन्ध नहीं। साथ ही यह भी समझ लेना चाहिये कि शूद्र आर्यों से पृथक् न थे और न हैं अपितु आर्यों के चार वर्णों में से ही शूद्र एक वर्ण है।

अन्त में हमारा यह निवेदन है कि अविनाश जी हों अथवा उन जैसे अन्य कोई व्यक्ति-पहले वेद पढ़लें। वेद अन्य कहीं न मिलें, आर्यसमाज में अवश्य मिल जायेंगे। वेद में न सीसा पिघलाकर डालने की बात है और न जिह्वा काटने की। वेद तो कहता है। 'यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः ब्रह्मराजन्यान्यां शूद्राय चार्याय स्वाय चारणाय।' मेरी इस कल्याणकारक वाणी को पढ़ने, बोलने, सुनने का अधिकार मनुष्यमात्र को है, चाहे वह ब्राह्मण, क्षत्रिय, शूद्र, वैश्य, अतिशूद्र आदि कोई भी हो।

वैसे योग्यता की स्थिति तो अविनाश जी की यह है कि 'सीसा धातु को 'शीशा लिखा है जबकि शीशा कांच है, जो बालू आदि से बनाया जाता है और 'सीसा' है खनिज धातु, जैसे तांबा, स्वर्ण आदि हैं और यह सब भूगर्भ से प्राप्त होते तथा भूगर्भ में स्वयं ही बनते रहते हैं। वेदों को ईश्वर द्वारा प्रदत्त अथवा ईश्वरी ज्ञान कहना उन्हें उपहास (मजाक) दीखता है, प्रकृति तथा विज्ञान विरुद्ध दीखता है किन्तु 'सीसा' नामक धातु को 'शीशा' कांच लिखना प्रकृति तथा विज्ञानसिद्ध दीखता है। यह अविनाश जी के प्रकृतिसिद्ध भू-भौतिकी तथा भौतिक विज्ञान के पाण्डित्य का परिचायक है।

आर्यसमाज महम में ऋग्वेद पारायण-यज्ञ

महम जिला रोहतक में आर्यसमाज द्वारा वेदप्रचार सप्ताह श्रावण पूर्णिमा से श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक दिनांक १८ अगस्त से २५ अगस्त तक बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस शुभ अवसर पर यज्ञ के ब्रह्मा पद को वैदिकविद्वान् आचार्य यशोवर्धन जी सुशोभित करेंगे। उद्भट विद्वान् श्री ओमप्रकाश जी सिद्धान्तशिरोमणि, डॉ० प्रमोद जी, एम.ए., पी-एच.डी. दयानन्द ब्राह्म विद्यालय हिसार के प्रवचन, श्री सुभाषचन्द्र आर्य तथा श्री कृष्णकुमार जी की भजनमण्डली का आकर्षक कार्यक्रम होगा एवं स्वामी जगत्मुनि जी का मधुर उपदेश होगा।

-राजेन्द्रकुमार शास्त्री, मन्त्री

आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ का स्थापना दिवस समारोह
२१ सितम्बर से २ अक्टूबर १९९७ तक

गायत्री अनुष्ठान-गुफा मध्य ध्यानयोग शिविर-अष्टांग योग का क्रियात्मक प्रशिक्षण, योग द्वारा काया कल्प-समस्त रोगों का उपचार, ऋग्वेद पारायण बृहद् यज्ञ-२१ कुण्डों में पूर्णाहुति, विविध सम्मेलनों का आयोजन किया जावेगा। -धर्ममुनि, मुख्याधिष्ठाता

क्रान्तिदिवस ९ अगस्त का सन्देश

जिस तरह हमारे महान् नेताओं ने ९ अगस्त १९४२ में "करो या मरो। अंग्रेजों भारत छोड़ो" का नारा आजादी प्राप्त करने हेतु देशवासियों को दिया था।

ठीक आज के निराशाजनक व चिन्ताजनक हालात में, जब कि देश-भ्रष्टाचार-टी.वी., सिनेमा, अश्लील साहित्य व शराब के कारण फैली चरित्रहीनता व अनैतिकता, अपनी महान् संस्कृति की बजाय पाश्चात्य सभ्यता का मोह, बहु० राष्ट्रीय कम्पनियों, डब्ल्यू.टी.ओ. और विश्व बैंक के चंगुल में फंसकर कई लाख करोड़ रुपये के कर्ज में देश का डुबोते चले जाना, घोटालों/काण्डों का देश बन जाना-ऐसी ज्वलन्त समस्याएं हैं, तबाहकुन हालात हैं जिन का "करो या मरो" के क्रान्तिकारी नारा पर चलकर ही मुकाबिला करना होगा। कवि ने क्या ठीक कहा है :-

प्रभु ने आज तक उस कौम की हालत नहीं बदली।
जिसे ना हो ख्याल आप अपनी हालत के बदलने का।।

सो आइये ! हम एक आजाद देश के जागरूक व देशभगत नाागरिक की जिम्मेवारी निभाएं, और इस अवसर पर प्रतिज्ञा करें कि,

१. हम विदेशी कम्पनियों की बनाई वस्तुएं जैसे कोलगेट, पैप्सी, कोकाकोला, लक्स, लिरिल, लाइफबॉय साबुन, सर्फ, लिपटन-ब्रुकबांड-फ़ास्टफूड का बहिष्कार कर स्वदेशी सामान ही खरीदेंगे। २. चरित्रहीन बनानेवाली फिल्में टी.वी. और अश्लील साहित्य का बहिष्कार करेंगे। ३. भ्रष्ट व्यक्तियों का पर्दाफाश करेंगे, उनका आदर नहीं करेंगे। ४. शराब जैसी लानत से, अपने गांव-प्रान्त व देश को मुक्ति दिलायेंगे। ५. भोगवादी पाश्चात्य संस्कृति के स्थान पर "सादा जीवन उच्च विचार" के महान् आदर्श और अपनी भारतीय संस्कृति को अपनाएंगे।

देश के महान् क्रान्तिकारी और बलिदानी पूर्वजों, जिनकी बदौलत हमें आजादी मिली है, का कर्ज उतारने और देश को बचाने का यही एक रास्ता है।

सम्भलो बढ़ो यदि चाहते, जग जीवतों में मान।
अब भी रहे ऊंघते, बस मान लो अवसान।।

-ले० **संग्रामसिंह आर्य**, दड़ौली, आदमपुर (हिसार)

'बजे पुनः डंका वेदों का'

-**राधेश्याम 'आर्य'** विद्यावाचस्पति मुसाफिरखाना, सुल्तानपुर (उ०प्र०)

आज धरा पर मतवादों का,
छाया घना कुहासा है।
कुंठित हुई पुनः मानवता,
की जग में अभिलाषा है।

वेद विरुद्ध हुए जाते हम,
वेदों का होता उपहास।
पाखण्डों का नर्तन होता,
दानवता करती परिहास।

दयानन्द के वीर सिपाही,
अति निद्रा में सोते हैं।
सत्ता का वे युद्ध खेलते,
शक्ति अपरिमित खोते हैं।

जाग्रत हों अब आर्यजगत् के,
लें दृढ़तर मन में संकल्प-
वेदों के ही पथिक बनेंगे'
यही हमारा बचा विकल्प।

वेदों की शिक्षा ही जग में,
रहे प्रचारित तथा प्रसारित।
जिससे हो सारी जगती पर,
जयिनी मानवता का हित।

डंका बजे पुनः वेदों का,
स्वप्न बनें ऋषि के साकार।
सारी धरती पर छा जाए-
सुख-समृद्धि-सरसता-प्यार।।

श्रावणी उपाकर्म

यह पुण्यभूमि रत्नगर्भा भारतवर्ष सदा से ही पर्वप्रिय रही है, इस भारतवर्ष में जनसामान्य को प्रेरणा देने के लिए समय-समय पर पर्व आते हैं। वैसे तो पर्व अनेक हैं, उन सबका महत्त्व भी अलग-अलग है फिर भी भारतीय संस्कृति में प्राचीनकाल से ही चार पर्वों के रूप में एक परम्परा चली आ रही है, १. श्रावणी। २. दूसरा दशहरा जिसको कि विजयदशमी के नाम से भी जाना जाता है। ३. दीपावली। ४. होली। १. श्रावणी यह ब्राह्मणों का त्यौहार है। २. दशहरा, यह क्षत्रियों का त्यौहार है। ३. दीपावली यह वैश्यों का है। ४. होली, यह शूद्रों का त्यौहार है। हमारा प्रतिपाद्य विषय श्रावणी है। श्रावणी नाम इस पर्व का क्यों है ? इसका उत्तर यह है कि श्रवण नक्षत्र से युक्त पूर्णिमा को यह पर्व होता है। इसलिए इसका नाम श्रावणी है। इसी श्रवण नक्षत्र के आधार पर ही इस महीने का नाम भी श्रावण मास है। यह पर्व स्वाध्याय का प्रतीक है। वेदाध्ययन का इस पर्व से सीधा सम्बन्ध है, प्राचीन परम्परानुसार वर्षा ऋतु के प्रारम्भ होने के पश्चात् जब जंगलों में सब तरफ पानी भर जाया करता था तो हमारे प्राचीन ऋषिमुनि जंगलों को छोड़कर ग्रामों में आजाते थे। यहां आकर ये लोग चातुर्मास्य प्रवचन का कार्यक्रम जन-सामान्य में जागृति लाने के लिए करते थे। उनमें धर्म के प्रति भावना को प्रतिष्ठित करते थे। इस दिन लोग अपने यज्ञोपवीत को भी बदलते थे, क्योंकि गृह्यसूत्रों के आधार पर यह परिपाटी रही है कि प्रत्येक प्रधान उत्तम यज्ञ, याग आदि कर्मों के समय नया यज्ञोपवीत धारण करना चाहिये, उसी आधार की पोषिका यह श्रावणी पर यज्ञोपवीत बदलने की प्रथा भी है। इसी दिन वर्षा ऋतु के विकृत जलवायु के संशोधनार्थ वृहद् हवन यज्ञ भी होता था, और सम्भव है कि यज्ञ में सम्मिलित होने के चिन्हस्वरूप से याजक और यजमानों के दाहिने हाथ में रक्षासूत्र (राखी) भी बांधे जाते हों और वर्तमानकाल में श्रावणी के दिन रक्षाबन्धन पुराण को छोड़कर किसी प्राचीन ग्रन्थ में नहीं पाया जाता।

पौराणिक काल में इस पर्व पर वेद स्वाध्याय का सर्वथा लोप होगया, और श्रावणी कर्म के नाम से सर्पों को बलि देने आदि के नवीन विधान प्रचलित होगये थे, होमयज्ञ का प्रचार भी उठ गया। लोग नदी व तालाब पर जाकर पञ्चगव्य प्राशन, स्नान तथा ऋषितर्पण के कुछ संस्कृत वाक्य, ओं ब्रह्मा तृप्यतां, ओं विष्णुस्तृप्यतां, ओं रुद्रस्तृप्यतां, ओं सनकस्तृप्यतां, ओं सनन्दनस्तृप्यतां, ओं कपिलस्तृप्यतां, ओं आसुरिस्तृप्यतां, ओं वोढस्तृप्यतां, ओं पञ्चशिखस्तृप्यतां' उच्चारण करके अपने कर्त्तव्य की समाप्ति समझने लगे। आजकल पौराणिक घरों में स्त्रियां भित्तियों पर श्रावण की मूर्तियां गेरु से बनाकर उनको सेवियों से जिमाती हैं। राजपूतकाल में अबलाओं ने अपनी रक्षार्थ सबल वीरों के हाथ में राखी बांधने की परिपाटी का प्रचार हुआ है। जिस किसी वीर क्षत्रिय को कोई अबला राखी भेजकर अपना राखीबन्द भाई बना लेती थी, उसकी आयुभर रक्षा करना उसका कर्त्तव्य हो जाता था। चित्तौड़ की महारानी कर्णवती ने मुगल बादशाह हुमायूं को गुजरात के बादशाह से अपनी रक्षार्थ राखी भेजी थी, जिससे उसने चित्तौड़ पहुंचकर तत्काल अन्तसमय पर उसकी सहायता की थी और चित्तौड़ का बहादुरशाह के आक्रमण से उद्धार किया था। तबसे बहुत से प्रान्तों से यह प्रथा प्रचलित है कि भगिनियां और पुत्रियां अपने भ्राताओं और पिताओं के हाथ में श्रावणी के दिन राखी बांधती हैं और वे उनसे कुछ द्रव्य और वस्त्र पाती हैं। यदि यह प्रथा पुत्री और भगिनी वात्सल्य को दृढ़ करनेवाली मानी जाए तो उसके प्रचलित रहने में कोई दोष भी नहीं है।

आजकल की श्रावणी को प्राचीनकाल के उपाकर्म उत्सर्जन वेदस्वाध्यायरूप ऋषितर्पण और वर्षाकालीन बृहद् हवन यज्ञ का विकृत तथा नाममात्र शेष स्मारक समझना चाहिये और प्राचीन प्रणाली के पुनरुज्जीवनार्थ उसको बीजमात्र मानकर उसको अंकुरित करके पत्रपुष्पफलसमन्वित विशाल वृक्ष का रूप देने का उद्योग करना चाहिये।

सभी सज्जनों को उचित है कि श्रावणी (रक्षाबन्धन) के दिन बृहद् हवन और विधिपूर्वक उपाकर्म करके वेद और वैदिकग्रन्थों के विशेष स्वाध्याय का उपाकर्म करें और यथाशक्ति और यथावकाश नियमपूर्वक चलाते रहें। तभी हमारा श्रावणी पर्व मनाना सफल है। -ब्र० राजेशकुमार शास्त्री

कावड़ लाना वेद विरुद्ध है

पहले भारत ऋषिमुनियों की भूमि माना जाता था। सारे संसार के लोग यहां विद्या ग्रहण करने आते थे। भारतदेश सारे संसार का गुरु था। यहां वेद की ऋचाएं गूंजती थी और बड़े-बड़े यज्ञ होते थे। लेकिन आज बड़े दु:ख के साथ लिखना पड़ रहा है कि इस समय भारत के लोग अवैदिक रास्ते पर चल रहे हैं। इस समय जितने पाखण्ड, अन्धविश्वास, मजहब, सम्प्रदाय, धर्म, देवी-देवता, गुरुडमवाद, अज्ञानता तथा राजनैतिक दल (पार्टियां) भारत में हैं किसी देश में नहीं। मूर्खता तथा हठधर्मी के कारण लोग प्रतिदिन रसातल को जा रहे हैं।

आज मैं मुख्यरूप से कावड़ की चर्चा करने चला हूं। कावड़ क्या है, लोग इसको क्यों लाते हैं, इससे क्या लाभ है, गंगा का जल किस अपवित्र स्थान पर चढ़ाते हैं, कावड़ कौन लोग लाते हैं, जगह-जगह भण्डारा व स्वागत कौन करते हैं ? आदि विषयों की जानकारी देंगे। कई वर्षों से प्रतिवर्ष सावन मास में हरद्वार से लोग कावड़ लाकर ग्यारस तथा शिवरात्रि पर बाघोत (रिवाड़ी) में शिवलिंगी के ऊपर मन्दिर में चढ़ाते हैं, आजकल तो अन्यत्र गांव के मन्दिरों में भी चढ़ाने लग गए हैं। पहले थोड़े लोग कावड़ लाते थे। आजकल तो भेड़चाल है लाखों नवयुवक तथा हजारों युवतियां कावड़ लाते हैं, कोई खड़ी कावड़, कोई पड़ी कावड़, कोई साईकिल कावड़ कोई डाक कावड़ लेकर आता है।

कावड़ कौन बनाता है ? ज्यादातर राजस्थान के कारीगर उनमें भी अधिकांश मुसलमान होते हैं। ५० रुपये से लेकर १ लाख रुपये तक की कावड़ वहां मिलती है। वहां कावड़ बेचनेवालों का बाजार लगता है। कावड़ लाने वालों में अधिक लोग गरीब होते हैं। जिनको पूंजीपति सेठ लोग दिहाड़ी (पैसे) देकर कावड़ मंगवाते हैं। कुछ अज्ञानी लोग इसको धर्म मानकर लाते हैं, कुछ कुकर्मी, कत्ली, व्यभिचारी, डकैत जो अनापशनाप गलतकार्य करके समाज में बदनाम हो जाते हैं, वह समाज में पवित्र एवं धार्मिक होने के लिए कावड़ लाते हैं भोले-भाले लोग समझते हैं कि अब ये लोग सुधर गये हैं। लेकिन कई लोग कावड़ लाने के बाद भी अपने कुकृत्य जारी रखते हैं। ऐसे उदाहरण कई गांवों में प्रत्यक्ष देखने को मिलते हैं। कावड़ लाने के बाद भी ताश खेलना, जुआ खेलना, व्यभिचार करना, शराब पीना, चोरी करना, एकाध नवयुवक इन बुराइयों के कारण आर्थिक ढंग से तंग होकर अपनी पत्नी से भी झगड़ा करता रहता है। सुखी गृहस्थ के जीवन को नरक में बदल देता है। फिर भी इन दूषित बुराइयों से बाज नहीं आते। कुछ चालाक किस्म के लोग सादे भोले लोगों को बहकाकर युवकों को हरद्वार ले जाते हैं। कुछ युवक यह मानते हैं कि कावड़ लाकर शिवलिंग पर जल चढ़ाने से नौकरी मिल जाएगी, परीक्षा में पास हो जाएंगे, पंच-सरपंच विधायक मन्त्री बन जाएंगे। हरयाणा प्रान्त में गतवर्ष से पूर्ण शराबबन्दी लागू होने के कारण अधिकांश लोग उत्तरप्रदेश में शराब पीने जाते हैं। हजारों रुपये बर्बाद करके लुटपिटकर वापिस आ जाते हैं। कई लोग कावड़ की आड़ में भांग, सुल्फा, अफीम तक लाकर उनका व्यापार करते हैं। प्रतिवर्ष अनेक लोग पुलिस द्वारा इस धंधे में पकड़े जाते हैं। कई नवयुवक यहां तक सोचते हैं कि मेरी शादी हो जाएगी, मैं धनवान् बन जाऊंगा। दो-तीन वर्ष से नवयुवती महिलाएं भी कावड़ ला रही हैं, कोई धन

चाहती है, कोई सन्तान चाहती है, कोई धार्मिक बनना चाहती है, कोई मटरगस्ती के लिए जाती है। अनेक प्रकार की धारणाएं एवं मान्यताएं हैं।

इस बार ऐसे भी उदाहरण देखने को मिले हैं। मूर्ख लोगों ने ब्याज पर हजारों रुपये लिए रात्रि को गांव में छिपकर शराब पी और प्रातः बस में बैठकर ५-१० के टोले के साथ हरद्वार गंगा में नहाने चल दिया। वहां पर भी शराब पी और मटरगस्ती की, नागेबाबों का जुलूस भी देखा, पैसे तथा समय बर्बाद कर ५-७ दिन में धक्के खाकर आगए पर न कोई बुराई छोड़ी न अच्छे कार्य करने का संकल्प लिया उसी तरह धूम्रपान एवं शराब पी रहा है। बताओ क्या लाभ हुआ हरद्वार जाने का, घर में बच्चे दुःखी है झूठा धर्म का लबादा ओढ़े हुए है, यह सुनी सुनाई नहीं कटुसत्य है। दूसरी मूर्खता सेठ लोग कावड़ वालों के लिए जगह-जगह बड़े-बड़े पण्डाल लगाना भोजन मिठाई पकोड़े जलपान तथा विश्राम की व्यवस्था करते हैं। कावड़ की कैसेट बजवाते हैं, लोग इसको बड़ा पुण्य मानते हैं, सेठ लोग इस पाखण्ड को धर्म मानकर अपने धन में टैक्स की चोरी करते हैं और इस पाखण्ड को सुनियोजित ढंग से बढ़ावा देते हैं। कावड़िए मूर्खता से बम बम का शोर मचाकर आकाश में पर्यावरण को दूषित करते हैं। जिसका कोई अर्थ नहीं। इससे भी आगे बढ़कर ये कावड़िए और गलत काम करते हैं। जबकि वह मूर्ति पत्थर की है जड़ है न खाती है, न सुनती है, न सोती है न चल सकती है, फिर भी अज्ञानी लोग उस पर जल व प्रसाद चढ़ाते हैं धौक मारते हैं, तथा उससे मांग मानते हैं जबकि कुत्ता पूंछ हिलाकर इशारा कर रहा है कि यह खा नहीं सकती मैं खाऊंगा या पण्डा-पुजारी खाएगा। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थप्रकाश में मूर्तिपूजा के १६ दोष गिनाए हैं।

मूर्तिपूजा वेद विरुद्ध है व्यर्थ है यह हमें नहीं करनी चाहिए। लेकिन करते जा रहे हैं उत्थान की बजाए पतन की ओर बढ़ रहे हैं कोरा अन्धविश्वास एवं पाखण्ड है।

काश ये युवक वेद के रास्ते पर चलते सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थ पढ़ते अज्ञानता छोड़कर कावड़ लानेवाले लाखों युवक देश में पूर्ण शराबबन्दी के लिए तथा अन्य सामाजिक बुराइयों को खत्म करने के लिए जनजागरण प्रचार पदयात्रा सारे देश में करते कितना श्रेष्ठ काम होता कितना जनता का भला होता सारे देश में पूर्ण शराबबन्दी का माहौल बनता। नवयुवक पुरुषार्थी ईमानदार, चरित्रवान् का भला होता सारे देश में पूर्ण शराबबन्दी का माहौल बनता। नवयुवक पुरुषार्थी ईमानदार, चरित्रवान देश का सच्चा नागरिक बनकर देश का नाम ऊंचा करता। लेकिन बड़ी विडम्बना है कि बार-बार समझाने पर भी नहीं मानते। हमारी हार्दिक इच्छा है कि भगवान् कावड़ लाने वाले नवयुवकों को सद्बुद्धि प्रदान करे ताकि ये कुमार्ग को छोड़कर सत्य मार्ग पर चल सकें। जनता की भलाई के लिए सत्य के आधार पर कावड़ के पाखण्ड की जानकारी दी है द्वेष बढ़ाने के लिए नहीं। सत्य को समझो तभी कल्याण होगा।

-अत्तरसिंह आर्य, क्रान्तिकारी सभा उपदेशक

चौ० विजयकुमार स्मृति विशेषांक

आपको सूचित किया जाता है कि शराबबन्दी आन्दोलन के प्राण स्व० चौ० विजयकुमार जी की स्मृति में सर्वहितकारी का विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है। चौधरी साहब के व्यक्तिगत आदर्श जीवन तथा शराबबन्दी आन्दोलन सम्बन्धी लेख भेजने की कृपा करें। नशामुक्ति विषयक स्वतन्त्र लेख भी आमन्त्रित हैं। -सुदर्शनदेव आचार्य

"१५ अगस्त"

आज हमें आजादी मिली, देश पर मर मिटने वाले असंख्य नौजवानों से।
तिलक, गान्धी, सुभाष, नेहरु और क्रान्तिकारियों के महान् बलिदानों से।।
इसे हमें रखना है सम्भाल कर, संजोकर अपने अरमानों से।
चारों तरफ फिरते हैं लुटेरे, बचाकर रखना इन बेईमानों से।।
इस आजादी के लिये, कितनों ने शीश कटा दिये,
बिस्मिल, शेखर, भगतसिंह ने, जीवन भेंट चढ़ा दिये,
वीर सावरकर, भाई परमानन्द ने, जेलों में जीवन सड़ा दिये,
आजाद हिन्द के सैनिकों ने, कन्धे संगीनों से अड़ा दिये,
नेताजी का "दिल्ली चलो" का नारा, सुना था अपने कानों से।
आज हमें आजादी मिली..........................

इस आजादी का आभास, सबसे पहले देव दयानन्द ने करवाया था,
अपना राज्य ही सर्वोत्तम होता, "सत्यार्थप्रकाश" में फरमाया था,
गोखले, तिलक ने कहा, आजादी हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है,
गांधी जी ने ललकार कर कहा, चले जाओ अंग्रेजो नहीं तुम्हारी दरकार है,
इस आवाज पर निकल पड़े, नेहरु, पटेल, राजेन्द्र अपने अपने स्थानों से।
आज हमें आजादी मिली..........................

देश का बच्चा बच्चा फिर, मर मिटने को तैयार हुआ,
माताओं और बहनों को भी, आजादी माता से प्यार हुआ,
हिन्दू, मुस्लिम, सिख सभी से, एक ही नारा उच्चार हुआ,
लहरायेंगे तिरंगा झण्डा, तब नव-जागृति का संचार हुआ,
पच्चास साल पहले यह शुभ दिन आया, "खुशहाल" के देशभक्त जोशीले गानों से।
आज हमें आजादी मिली..........................

-**खुशहाल चन्द्र आर्य,** १८०, महात्मा गांधी रोड, (दो तल्ला), कलकत्ता-७००००७

महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार १९९७

वैदिकधर्म, वैदिक साहित्य एवं आर्यसमाज के प्रति समर्पित भाव से की गई श्लाघनीय सेवाओं के फलस्वरूप महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार निधिन्यास, आर्यसमाज फुलेरा जिला जयपुर-राजस्थान की ओर से १०,०००/- (दस हजार रुपये) नकद, उत्तरीय, प्रशस्ति-पत्र, अभिनन्दन पत्र तथा राजस्थानी संस्कृति का प्रतीक चुनड़ी का साफा एवं श्रीफल महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कारस्वरूप प्रतिवर्ष ऋषि निर्वाण दिवस पर प्रदान किया जाता है। सन् १९९७ के महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार के लिए कोई भी आर्यविद्वान् स्वयं अपना या अन्य आर्यविद्वान् का नाम पूर्ण विवरण तथा कृतियों सहित दिनांक ३०.०९.०७ तक प्रस्तुत कर सकता है।

-**भंवरलाल शर्मा,** अध्यक्ष, महर्षि दयानन्द सरस्वती पुरस्कार निधि न्यास, आर्यसमाज फुलेरा जिला जयपुर (राज०)

जयपुर (राज०) में विचार गोष्ठी सम्पन्न

३१ जुलाई ९७ के श्री गोकुलभट्ट जन्म शताब्दी समारोह समिति की महत्त्वपूर्ण बैठक खादी ग्रामोद्योग संस्था संघ के हाल में १०.३० बजे प्रात: सर्वोदय नेता श्री सिद्धराज ढ़ड्ढ़ा की अध्यक्षता में हुई। प्रो० शेरसिंह प्रधान अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् दिल्ली मुख्यवक्ता थे। इसके अतिरिक्त श्री बन्शीलाल एडवोकेट, माणकचन्द जी, रामबल्ब अग्रवाल, पूर्णचन्द जैन, जवाहरलाल जैन, मा० अदित्येन्द्र पूर्वमन्त्री, पूर्व एस.पी. चौ० मुखराम, श्रीमती उज्ज्वला अरोड़ा विधायक, श्रीमती उषा गोयल, श्रीमती सुलोचना गुप्ता, श्रीमती कमला माथुर, श्री शान्तिस्वरूप, लक्ष्मीचन्द भण्डारी आदि ने भट्ट जी के जीवन एवं कार्यों पर शराबबन्दी सम्मेलन बुलाने, पदयात्रा निकालने ६ अक्टूबर को स्मृति दिवस मनाने, गोरक्षा तथा मुख्यतया जन्मशताब्दी समारोह फरवरी ९८ में मनाने पर विस्तार से विचार रखे। उपरोक्त कार्यों को कार्यरूप देने के लिए अलग-अलग तीन समितियां बनाई गई।

प्रो० शेरसिंह जी ने गोकुल भाई भट्ट जी के स्वतन्त्रता ग्राम और उसके बाद भी राजस्थान के लिए जो काम किए उनकी विस्तार से चर्चा करते हुये बताया कि जीवनपर्यन्त खादी ग्रामोद्योगों के उत्थान के चिन्तन, शराबबन्दी के लिए संघर्ष तथा गोवध-बन्दी के लिए प्रयत्न करते रहे। वे ग्राम स्वराज्य की स्थापना के लिए निरन्तर समग्र क्रान्ति की चेतना जगाते रहे। उनका बहुआयामी जीवन था। मोरारजी देसाई के बाद भट्टजी नशाबन्दी परिषद् के अध्यक्ष भी रहे। राजस्थान में शराबबन्दी के लिए उन्होंने विशेष आन्दोलन किए। अत: उनके इस शताब्दी वर्ष के अवसर पर शराबबन्दी के लिए राजस्थान प्रान्त में युद्धस्तर पर आन्दोलन चलाना चाहिए। प्रो० साहब ने बताया कि देश में शराब से सर्वनाश हो रहा है। उन्होंने कहा गुजरात, हरयाणा में शराबबन्द है। पंजाब, हिमाचलप्रदेश, मध्यप्रदेश, केरल, मणिपुर आदि में भी नवयुवकों एवं महिलाओं द्वारा शराबबन्दी की आवाज उठने लग गई है। अत: राजस्थान में भी यह कल्याणकारी कार्य अवश्यमेव होना चाहिए।

सर्वसम्मति से अन्त में निर्णय लिया गया कि भावी पीढ़ी के लिए उनका जीवनग्रन्थ स्मृति दिवस जन्म शताब्दी समारोह के अलावा सितम्बर मास में एक महीने की शराबबन्दी जनजागरण प्रचार पदयात्रा करके १२ अक्तूबर को शराबबन्दी सम्मेलन किया जाएगा तथा स्कूल कालेजों में भी प्रचार किया जाएगा। प्रान्तभर से सैकड़ों प्रतिनिधियों ने इस गोष्ठी में भाग लिया।

-अत्तरसिंह आर्य, क्रान्तिकारी सभा उपदेशक

वेदप्रचार सप्ताह एवं वार्षिक उत्सवों की सूची

आर्यसमाज गंगायचा अहीर
बीकानेर जिला रेवाड़ी — १३, १४ सितम्बर
गुरुकुल पंचगांव जिला भिवानी — १९ से २१ सितम्बर
आर्यसमाज शेखपुरा जिला करनाल — १८ से २० अक्टूबर
स्वाधीनता की ५०वीं वर्षगांठ समारोह
आर्यसमाज बहादुरगढ़ जिला झज्जर — १८, १९ अक्टूबर
ला० गोविन्द आर्य जयन्ती समारोह
आर्यसमाज नलवा जिला हिसार — २६ अक्टूबर
आर्यप्रतिनिधिसभा हरयाणा का
अधिवेशन रोहतक — २ नवम्बर
आर्यसमाज रसूलपुर जिला महेन्द्रगढ़ — २७, २८ नवम्बर

जो आर्यसमाज एवं आर्यसंस्थाएं वेदप्रचार अथवा वार्षिक उत्सव रखना चाहते हैं, वे कृपया २ नवम्बर की तिथि छोड़कर तिथियां लिखने का कष्ट करें जिससे उपदेशकों तथा भजनोपदेशकों के कार्यक्रम बनाने में सुविधा रहे।

-सुदर्शनदेव आचार्य,
वेदप्रचाराधिष्ठाता

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक (फोन : ४६८७४) में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक से प्रकाशित।

"उपदेशक विद्यालय टंकारा का ३१वां स्थापना दिवस सम्पन्न"

दिनांक १७-७-१९९७, को उपदेशक विद्यालय का स्थापना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर ब्र० माधवन जो पुस्तक विक्रय विभाग संभालने के साथ-साथ अध्ययन भी करते हैं उनका यज्ञोपवीत संस्कार किया गया। उन्होंने घरेलू नाम एवं संस्कार छोड़कर नया संस्कार एवं नाम प्राप्त किया। अब वह धर्मबन्धु के नाम से सम्बोधित किये जायेंगे। यावज्जीवन आर्यसमाज का प्रचार करना-करांना मुख्य उद्देश्य आगन्तुक महानुभावों को सुनाया। इस अवसर पर जामनगर, राजकोट, पोरबन्दर, मौरवी एवं टंकारा से लगभग २०० व्यक्ति उपस्थित हुए थे। सबके भोजन की व्यवस्था की गई थी उपदेशक विद्यालय के स्थापना दिवस पर श्री बुद्धदेव भाई ने ट्रस्ट टंकारा के ट्रस्टी एवं आर्यसमाज, टंकारा के मन्त्री श्री हंसमुख भाई ने उपदेशक विद्यालय की उन्नति एवं उत्तम व्यवस्था की भूरि-भूरि प्रशंसा की। आयुर्वेद यूनिवर्सिटी, जामनगर के सेवानिवृत्त प्रो० श्री दयाल जी भाई ने उपदेशक विद्यालय के आचार्यों द्वारा गुंजरात में आर्यसमाज का काफी प्रचार होने की बात कही किन्तु गुजरात में लेखन के माध्यम से भी प्रचार हो। यह तभी संभव है कि ट्रस्ट एक गुजराती प्रेस की व्यवस्था करे। अन्त में उपदेशक विद्यालय के उपाचार्य श्री रामेदव शास्त्री ने आगन्तुक महानुभावों का आभार व्यक्त किया। उपदेशक विद्यालय के ३१वें स्थापना दिवस का सम्पूर्ण कार्यक्रम विद्यालय के प्राचार्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

चुनाव-सम्पन्न

आर्यवीर नेत्र चिकित्सालय नई कालोनी मोड़ गुड़गांव

प्रधान-श्री यशपाल महेन्द्रू, उपप्रधान-श्री जसवन्त राय गुगलानी, श्री किशनचन्द आर्य, महामन्त्री-श्री भारतभूषण, मन्त्री-मा० सोमनाथ, उपमन्त्री-श्री ओमप्रकाश चुटानी, श्री जी० आर० मेहन्दीरत्ता, श्री किशनचन्द कोटि, कोषाध्यक्ष-श्री बन्सीलाल चावला, श्री ताराचन्द मनचन्दा, लेखानिरीक्षक-श्री जवाहरलाल मनचन्दा।

-सोमनाथ मन्त्री

आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव

प्रधान-श्री किशनचन्द चुटानी, उपप्रधान-श्री ओमप्रकाश कालड़ा, श्री अर्जुनदेव मनचन्दा, लेखानिरीक्षक- श्री वी०वी० सिक्का।

-मन्त्री

सर्वहितकारी १४ अगस्त, १९९७
रजि० नं० P/RTK-४९

प्रेषक :-
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन,
दयानन्दमठ, रोहतक

सेवा में